फरवरी 2010 ■ Rs.20/-

चन्दामामा

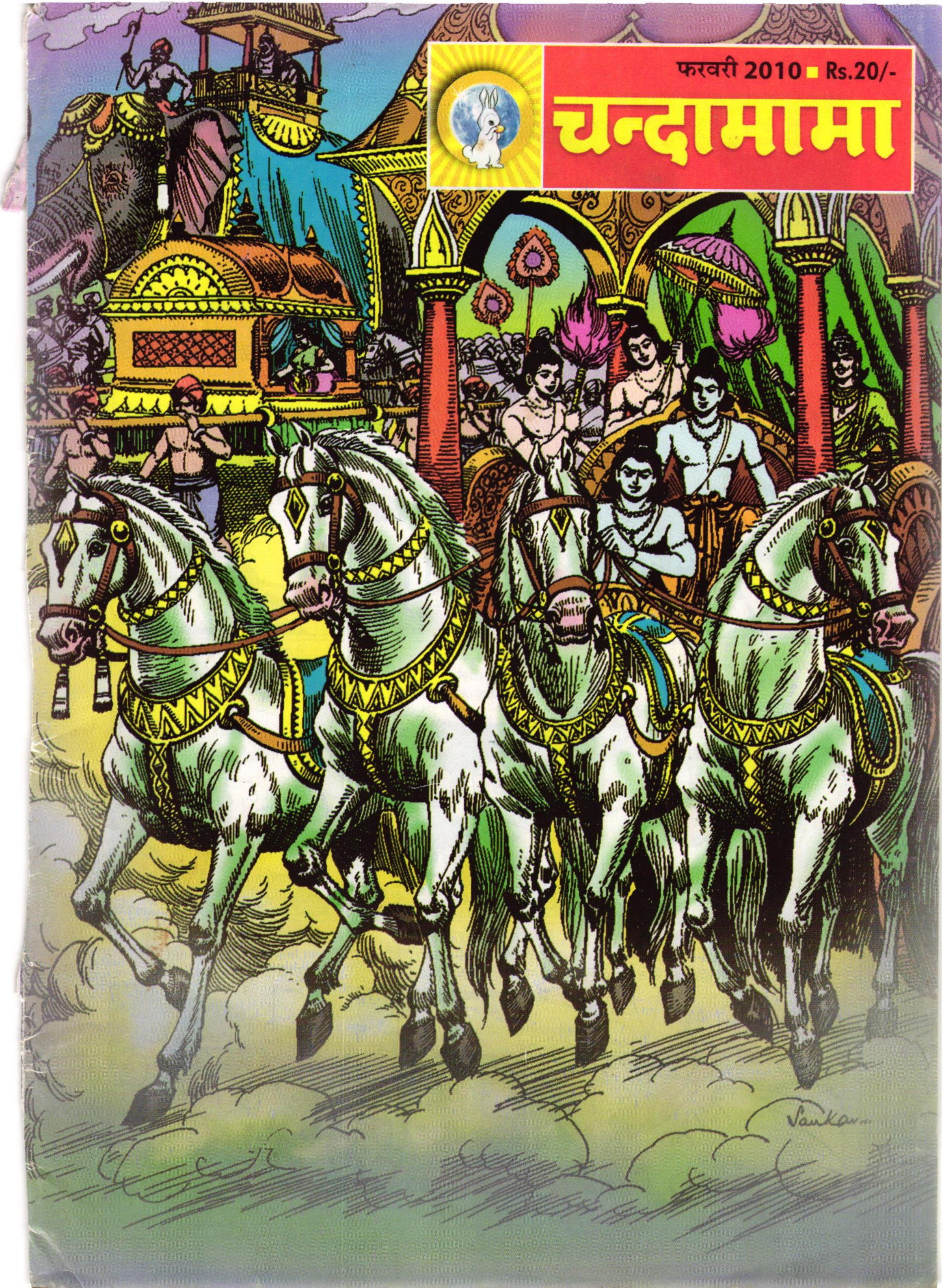

Visit : www.chandamama.com/parle

अब हम बोलेंगे.
और बड़े सुनेंगे.

ख़ासकर जब क्रिकेट की बात हो.
मैक्स दे रहा है हम बच्चों को एक मौक़ा एक्स्ट्रा इनिंग्स टी20 पर आने का.
यहां पर बच्चे करेंगे बात और सुनेगी सारी दुनिया! मैक्स एक्स्ट्रा इनिंग्स टी20 जूनियर.
ऑडिशन्स: 16 जनवरी से 7 फ़रवरी, 2010 तक.

रजिस्टर करने के लिए कॉल कीजिए 5052525*

MAX
Deewana bana de

Radio Partner BIG 92.7 FM

*शर्तें लागू. शर्तों के लिए लॉग ऑन करें www.maxtelevision.com पर. सिर्फ़ चुनिंदा नेटवर्क्स पर. चार्जेस प्रति मिनट रु. 6 तक.

सम्पुट-६१ फरवरी २०१० सञ्चिका-२

नाम.. आयु ....

पता...

....

....

फोन.................. ई-मेल.......................................

अपनी पत्रिका का मूल्यांकन कीजिए!

विषय के पास दी गयी बॉक्स को टिक कीजिए, बिन्दु रेखाओं से काटिए और अपना फीडबैक हमें भेजिए।

उत्कृष्ट	सर्वोत्तम	बेहतर	अच्छा	सामान्य
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐

Editor, CHANDAMAMA INDIA LTD.,
B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B',
MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093.

H

अंतरंग

चन्दामामा

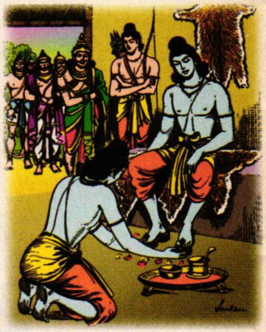

०६ पाठकों का पन्ना

क्लासिकी

०८ शांत गवाह

११ सन्यासी के वरदान

१७ आर्य-२

२१ युद्धकाण्ड-१४

२७ मित्र भेद-३

क्रियाकलाप

३१ चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

३२ तेज़ फार्मूला

३३ यूरेका

३४ चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-१३

लघु कथाएँ

३५ लालची सौदागर

३९ अंधविश्वास

४३ राज गामक

४६ साहसी युवक

भारत निर्देशिका

४९ भारत दर्शक

५० एक चुटकी नमक

५४ चूँ चूँ का डिब्बा

धारावाहिक

५६ पाताल दुर्ग

६२ रहस्य और बलिदान

समाचार

६८ उदीयमान सितारा

६९ समाचार झलक

विविध

७० हँसते-हँसते हो जा लोटपोट

७१ दर्जी और कपड़ा

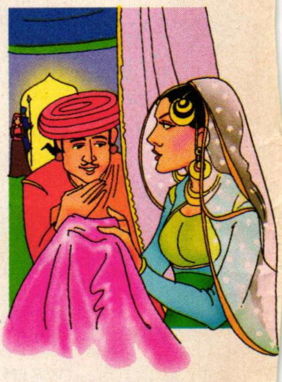

© The stories, articles and designs contained in this issue are the exclusive property of the Publishers. Copying or adapting them in any manner/ medium will be dealt with according to law.

मूल सिद्धान्त को समझे...

प्रिय मित्रो !!!

जैसे-जैसे हम दूसरे माह की ओर बढ़ते हैं, धीरे-धीरे परीक्षाओं का फंदा कसने का असर हम पर पड़ने लगेगा। लेकिन हम अपने पिछले संपादकीय में स्पष्ट करते रहे हैं कि सर्वाधिक आवश्यक है - मूल सिद्धांतों को सीखना व समझना तथा इनको बिना समझे मात्र रटना नहीं है। आमिर खान की मूवी "३ ईडियटस्" में इसे बड़ी ही खूबसूरती से प्रस्तुत किया गया है। अपने पाठकों द्वारा पढ़े जाने वाले विषयों की अच्छी समझ के लिए हम भी *चन्दामामा* द्वारा मदद की छोटी सी कोशिश के लिए उत्सुक हैं। वर्ष के आगे बढ़ने के साथ हम आपको ऐसा ही कुछ पेश करने वाले हैं।

इस महीने से अपने कलाकारों की बनाई कलाकृतियों का संकलन प्रकाशित करने जा रहे हैं। श्रीकृष्ण, लोक कथाओं तथा प्राकृतिक तत्वों पर इसका अनुसरण अगले तीन अंकों तक किया जाएगा। हम आशा करते हैं कि आप सब भी उसी उत्साह के साथ हमें अपने विचार व्यक्त करेंगे जैसे कि पहले करते आए हैं। हमारी पुस्तकें नियमित ग्राहकों हेतु अब एमाज़ॉन पर डाउनलोड करने तथा पढ़ने के लिए भी प्राप्य होंगी तथा थोड़े ही समयोपरांत अंग्रेज़ी पत्रिका एमाज़ॉन की ईबुक के किन्डले पर प्राप्य होंगी। इस प्रकार हमने नव वर्ष के कुछ संकल्प पूरे किए हैं।

१२ फरवरी डार्विन दिवस - हमारे सबसे अग्रणी जीववैज्ञानिक के जन्मदिवस की वर्षगाँठ मनाने का दिन है जिनकी पुस्तक - *दि ओरिजिन ऑफ स्पीसीज़* में लिखी व विवेचित की गई खोजों तथा सिद्धांतों ने विज्ञान के प्रति हमारी सोच को आंदोलित कर दिया। यह वर्ष और अधिक महत्त्वपूर्ण इसलिए भी है क्यों कि यह उनके २००वें जन्मदिवस की वर्षगाँठ है। फरवरी की १९वीं तिथि छत्रपति शिवाजी महाराज के जन्मदिवस की सालगिरह की भी गवाह है। वे एक महान शासक थे जिन्होंने न केवल लोगों को अन्याय के विरुद्ध लड़ने के लिए एकत्रित किया बल्कि स्वयं भी एक न्याय प्रिय राजा बने। उनकी बहादुरी, बुद्धिमत्ता, न्यायप्रियता एवं छापामार युद्ध नीति के कारण ३०० वर्ष के बाद भी लोग उन्हें पूज्य एवं आदरणीय मानते हैं।

हमें आपके द्वारा पढ़ी गई हमारी नयी पुस्तकों के बारे में आपके विचारों की प्रतीक्षा रहेगी। इस बीच आपके खोजी अभियान के लिए इस माह का खज़ाना प्रस्तुत है।

- संपादक

फरवरी २०१० Rs. 20/-
***Founded by* B. Nagi Reddi and Chakrapani**

Editor & Publisher : Prashant Mulekar
Associate Editors : Sowmya Rajendran, R. Vaasugi, A. Prem Kumar
Senior Artists: K.C. Sivasankaran (Sankar), Gandhi Ayya, P. Mahesh
Artist : T. Venkatesan
Creative Writer : R. Rama
Layout Designer : B. Tirumal, K. Narendra
Sanjay B Thorat : *Head - Sales and Circulation*
CHANDAMAMA INDIA LTD.,
B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B', MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093
Phone +91 22 28312872 / 28311849
Mobile +91 9821017787
email : sanjay.thorat@chandamama.com
Rajendra K Jadhav : *Asst. Manager - Circulation*
Mobile +91 9320565048
email : rajendra.jadhav@chandamama.com
Subhankar Rej, *Asst. Manager - Sales & Circulation (East)*
Email: subhankar.rej@chandamama.com
Mobile +91 9474916267
Bengaluru :
CHANDAMAMA INDIA LTD., 18, 10th Cross, Mayura Street, Papanna Lay Out, Outer Ring Road, RMV 2nd Stage, Bangalore-560094, Phone +91 80 6655 1000
Chennai :* K. Ravishankar, *Sales Officer - Circulation, Mobile +91 98414 00981
email : ravishankar.k@chandamama.com
***Business Development :* Ananth Prakash**
Mobile +91 98362 82202, 98351 82202
email : ananth.prakash@chandamama.com
***Content Head - Online :* Sowmya Bharadwaj**
email : online@chandamama.com
Marketing Enquiries :
email : marketing@chandamama.com
Advertisement :
email : sales@chandamama.com
Subscription Queries:
e-mail : subscription@chandamama.com
Customer Cell : A B Sairam
Mobile: +91 9841983774
e-mail : sairam.ab@chandamama.com
Production Executive : Panchakshari R Math
***Head Office :* CHANDAMAMA INDIA LTD.,**
B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B', MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093
Phone +91 22 28312872 / 28311849
Email : chandamama@chandamama.com
Website : www.chandamama.com

Printed and Published by Prashant Mulekar at Shruti Art Pvt. Ltd., Unit No.1, Gupta Mills Estate, Devidayal Industrial Compound, Darukhana, Reay Road (East), Mumbai - 400 010 on behalf of Chandamama India Limited, B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B', MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093. Editor : Prashant Mulekar

पाठकानाम् पृष्ठम्

चन्दामामा का नियमित पाठक हुँ। नये चन्दामामा का बेसब्री से इंतजार करता हुँ। मुझे इनमें प्रकाशित होने वाली सभी कहानियाँ अच्छी लगती है। विक्रम वेताल और रामायण के अलावा दूसरी पौराणिक कथाओं का भी समावेश करें।

- नीतिन उपाध्याय, पटना

मैं पिछले कई वर्षों से चन्दामामा पढ़ रहा हूँ। हाल के वर्षों में कलेवर में आया परिवर्तन स्वागतयोग्य है लेकिन कृपया चित्रों की शैली और कहानियों के पात्र और घटनाएँ पुरानी तर्ज पर ही रहने दें। पुरानी शैली में गाँवों की मिट्टी की महक अधिक थी।

- विट्ठल आप्टे, कल्याण

मैं ७५ साल का हुँ, पिछले कई सालों से चन्दामामा का पाठक हुँ, नई पीढी को कहानियों के माध्यम से मौलिक विचार एवं संस्कार देने का आपका यह प्रयास प्रशंसनीय है। यह शुभकार्य निरंतर चालु रहे एवं उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर आगे बढें इस आशिर्वाद के साथ,

-मनोहरलाल द्विवेदी, बरेली

मुझे चन्दामामा पढना विशेष रुपसे अच्छा लगता है क्योंकि यह बचपन की यादों को, नाना-नानी और दादा-दादी की कहानियों की याद दिला जाता है। इससे मुझे अपने बच्चो के लिए अच्छी कहानियाँ सुलभ हो जाती है, जिससे उनकी पठन-पाठन में रुचि बढती है। चन्दामामा को इसके लिए बहुत बहुत धन्यवाद।

- श्रीमति सीमा पाठक, रतलाम

आप अपना विचार
feedback@chandamama.com
पर ई-मेल से भी भेज सकते हैं।

Visit us at : http://hindi.chandamama.com

FABER-CASTELL

since 1761

छोटा कलाकार

फैब्रिक कलर प्रतियोगिता

प्रिय मित्रो,

तुम्हें यहाँ देख कर बेहद खुशी हुई! हम एक मेल-मिलापक तथा रचनात्मक प्रतियोगिता शुरू करते हुए आनंद का अनुभव कर रहे हैं जिसे हमने छोटा कलाकार नाम दिया है। आपको कुल मिला कर सभी छः प्रतियोगिताओं में भाग लेना है और हर प्रतियोगिता के लिए अपनी रचना में इस्तेमाल किए उत्पाद के डिब्बे तथा अपने पासपोर्ट आकार के फोटोग्राफ के साथ दिए हुए पते पर भेजना है। सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टियाँ हर बार आकर्षक गिफ्ट हैंपर्स, सृजनात्मक सीडीज़ तथा प्रमाण पत्र की विजेता होंगी। मेगा प्राइज़ में प्रवेश उन लोगों को मिलेगा जिन्होंने सभी प्रतियोगिताओं में भाग लिया है।

इन प्रतियोगियों के लिए लकी ड्रॉ आयोजित होगा तथा विजेता घोषित किया जाएगा।

तो जल्दी प्रतियोगिता में भाग लीजिए तुरंत!

अब थोड़ा फैबर कैसेल के बारे में

१७६१ में स्टेन, जर्मनी में स्थापित, फैबर कैसेल एक २५० वर्ष पुरानी, अन्तर्राष्ट्रीय तौर पर दुनिया भर में लेखन, ड्रॉइंग, कलरिंग तथा मार्किंग उपकरणों के खिलाड़ियों की कंपनी के रूप में प्रसिद्ध है। १८०० उत्पादों की रेंज से भरपूर, फैबर कैसेल एक ऊँचे इरादे सदैव सर्वश्रेष्ठ निर्माण हेतु चाहे संसार में कहीं भी बने के साथ दुनिया भर में कार्य करती है।

इसलिए जब भी तुम फैबर कैसेल का पैक देखते हो यह निश्चित है कि तुम सर्वश्रेष्ठ चीज़ खरीद रहे हो।

फैबर कैसेल के बच्चों तथा पर्यावरण की सुरक्षा हेतु प्रतिबद्धता

एक फैबर कैसेल ब्रॉण्ड से सर्वथा अपेक्षित है- सामाजिक कर्तव्यनिष्ठा तथा पर्यावरण संरक्षण। अपने ग्राहकों के प्रति हमारी सामाजिक प्रतिबद्धता हेतु फैबर कैसेल इंडिया ऐसे उत्पाद प्रस्तुत करती है जो बच्चों के लिए पूर्णतया सुरक्षित तथा पर्यावरण मित्र हैं।

हमारे लिए बाल सुरक्षा का मतलब है ऐसे घटकों तथा सामग्री का प्रयोग जो नॉन टॉक्सिक तथा फूड ग्रेड डाई से बने हों। केवल सामग्री ही नहीं बल्कि डिज़ाइन भी आलोचनात्मक रूप से सुनिश्चित किया गया है कि उत्पाद बच्चों के लिए सुरक्षित हो। हम इस बात का विशेष ध्यान रखते हैं कि उम्र विशेष के लिए उचित उत्पाद हो!

फैबर कैसेल पर्यावरण का ख्याल रखती है और हम रिसाइकिलेबल व पर्यावरण मित्र सामग्री के प्रयोग तथा प्रक्रिया हेतु प्रतिबद्ध हैं। हमारी फैक्ट्रियाँ ISO 9000 & 2008 ISO 14001 & 2004 अपनी गुणवत्ता तथा पर्यावरण प्रबंधन सिस्टम के लिए प्रमाणित हैं।

फैबर कैसेल से हम जो भी करते है, हमें विश्वास है कि यह समाज, प्लैनिट तथा तुम्हारे लिए सुरक्षित व मित्रवत् है!

FABER CASTELL WISHES ALL THE CONTESTANTS A FRUITFUL JOURNEY WITH THE BRAND

12 Fabric Colours

6 Fabric Colours

क्रियाकलाप

Creative Projects with FABER-CASTELL Fabric Colours

फैबर कैसेल फैब्रिक कलर्स के साथ क्रिएटिव प्रोजैक्ट्स बहुत ही कम आर्ट व क्रॉफ्ट प्रक्रियाएँ हैं जो सृजनात्मक अभिव्यक्तियों को कपड़े पर रंगों के अतिरिक्त विभिन्न कलाओं का अवसर देती हैं। आपको अपनी टी - शर्ट पर स्टाम्प लगाने के लिए फैंसी उपकरणों या तकनीकियों की आवश्यकता नहीं है। तुम्हें यह जानने की भी आवश्यकता नहीं कि कैसे रंग किया जाता है। फैबर कैसेल सारे टिप्स देती है जो आपकी शुरुआत तथा स्टाइल में मदद करते हैं और स्वयं करने के सपनों को प्रेरणा देते हैं।

अपने कपड़ों तथा घर को विभिन्न ब्लॉक से सजाइए। आखिरकार कौन जाने एक दृष्टिकोण व सब्ज़ी से क्या सामने आ सकता है।

१ पत्तियों व फूलों को कपड़े पर दबाएँ। इसे २४ घंटे तक सूखने दें।

२ पेंटब्रश से फूल व पत्तियों पर रंग लगाएँ।

३ जब सूख जाए तो पहली धुलाई से पहले कलर सैट करने के लिए कपड़े पर पीछे की ओर से आयरन करें। यहाँ यह बिल्कुल आसान है!

Fabric Colours (Pearl)

Fabric Colours (Fluorescent)

Fabric Colours (Metallic)

Send all your entries to

Chandamama India Pvt. Ltd., B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B', MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093, Phone +91 22 28312872 / 28311849.

शांत गवाह

एक बार शेर सिंह ने तुकाराम से एक बड़ी मात्रा में धन उधार लिया। कई हते गुज़र गए लेकिन शेर सिंह ने पैसा वापस न्हीं किया। तुकाराम ने शेर सिंह के घर जाकर उसे उधार लिए धन के बारे में याद दिलाने का निर्णय लिया।

जैसे ही तुकाराम ने घर के अंदर कदम रखा, उसने देखा कि शेर सिंह के घर में मेहमान हैं। तुकाराम थोड़ा झिझका लेकिन फिर धन के बारे में शेर सिंह से पूछने का मन बनाया। जब शेर सिंह ने तुकाराम को देख तो उसने अपनी भँवे चढ़ा लीं।

क्या चाहिए तुम्हें? तुम्हें दिखाई नहीं देता मैं अपने मेहमानों की आवभगत में लगा हूँ? उसने हक से कहा।

मैं बस तुम्हें उसकी याद दिलाने आया हूँ कि जो धन तुमने उधार लिया था। जल्दी उसे लौटा दो। तुकाराम ने कहा।

शेर सिंह ने उसी हफ्ते में धन चुका देने को राज़ी हो गया। लेकिन शेर सिंह को इस बात पर बहुत गुस्सा आया कि तुकाराम ने मेहमानों के आगे उससे धन की माँग की। उसे यह अपमानजनक महसूस हुआ।

अगर मैंने दोबारा तुकाराम को देखा तो उसे तोड़ कर रख दूँगा! अपने दाँत पीसते हुए शेर सिंह गुर्राया।

सच तो यह था कि शेर सिंह उसका उधार चुकता ही नहीं करना चाहता था और बस इसी का बहाना बना कर तुकाराम से बदला लेना चाहता था।

जिसका शेर सिंह इंतज़ार कर रहा था वह मौका उसे मिल गया। वह तुकाराम से एक सुनसान सड़क पर मिला। उसने अपनी तलवार निकाली और उसे तुकाराम के आगे धमकाते हुए लहराया।

तुमने मेरे मेहमानों के आगे मेरा अपमान करने की हिम्मत कैसे की? शेर सिंह ने पूछा।

मैंने केवल तुम्हें यह याद दिलाया था कि तुमने मुझसे धन उधार लिया है। तुम उसे कब

Happy Birthday जन्मदिन की शुभकामनाएँ జన్మదిన శుభాకాంక్షలు Telugu जन्मदिन शुभाकांक्षलु

लौटाने का प्रबंध कर रहे हो? तुकाराम ने पूछा, हालांकि वह थोडा. काँप गया।

शेर सिंह गुस्से से दहाड़ा तुमने पैसा माँगा जबकि तुम जानते हो कि मैं तुम्हारी जान ले सकता हूँ?

तुकाराम ने शांतिपूर्वक जवाब दिया, मैं इस प्रकार की परिस्थितियों के लिए हमेशा तैयार रहता हूँ। तुम्हारी तरह के सैकड़ों ग्राहक आते हैं!

शेर सिंह ने अपनी तलवार नीची की, क्या मतलब तुम्हारा?

मैंने अपनी पत्नी के पास एक पत्र रखा हुआ है। जिसमें हमारे लेनदेन का सब ब्यौरा लिखा हुआ है। मैंने उसमें यह भी स्पष्ट किया है कि तुम मुझे नुकसान पहुँचा सकते हो। इसलिए अगर मैं रात होते ही घर न पहुँचूँ तो पत्र लेकर हमारे राणा साहब के पास चली जाएगी! तुकाराम ने कहा।

शेर सिंह ने घबरा गया। उसे इस बात की आशा नहीं थी। वह निश्चित भी नहीं था कि तुकाराम सच बोल रहा है या झूठ लेकिन वह कोई खतरा मोल नहीं लेना चाहता था। वह जानता था कि जिस किसी ने भी एक बेकुसूर आदमी को मारा राणा साहब उस पर बहुत ही अधिक क्रोधित हो जाएँगे।

मैं तुम्हारी जान बख्श दूँगा, तुम तो जानते ही हो कि मैं कितना नर्म दिल हूँ, शेर सिंह ने कहा, लेकिन मैं तुम्हारी नाक काटने जा रहा हूँ।

तुकाराम को बड़ा झटका लगा। जो धन तुम्हें मुझे चुकाना है अगर मैं वह मना लिख दूँ तो क्या तुम मेरी नाक छोड़ दोगे? उसने पूछा

शेर सिंह मुस्कुराया। मैं कर सकता हूँ! वह खुश था कि उसे कुछ भी नहीं चुकाना पडेग़ा।

मैं लिख कर दे दूँगा कि तुमने मेरा धन चुका दिया है। पर इसके लिए एक गवाह की आवश्यकता है, तुकाराम ने कहा।

शेर सिंह यह नहीं चाहता था कि इस ज़बरदस्ती लिखवाए रसीद पत्र के बारे में किसी को भी पता चले। व्यक्ति ने अगर राणा को खबर कर दी तो वह मुसीबत में पड़ जाएगा।

मुझे किसी गवाह की ज़रूरत नहीं है। तुम बस इस पर हस्ताक्षर कर दो, शेर सिंह ने लापरवाही से कहा।

मैं चाहता हूँ कि ऐसा हो पर ऐसे में यह रसीद अवैध हो जाएगी! तुकाराम ने कहा।

शेर सिंह ने चारों तरफ देखा सड़क के एक ओर एक बरगद का पेड़ खडा.था। बरगद का पेड़ रसीद बनाने इन परिस्थितियों को किसी के

Happy Birthday जन्मदिन की शुभकामनाएँ பிறந்தநாள் வாழ்த்துகள் Tamil पिरन्दलाल वालतुगल

आगे ज़ाहिर नहीं कर पाएगा। उसने निश्चय किया कि बरगद का पेड़ ही सही गवाह रहेगा।

यह बरगद का पेड़ ही हमारा गवाह होगा, मेरा आदमी! शेर सिंह ने कहा। तुकाराम ने अपना सर हिलाया। उसने अपनी बही रसीद पुस्तिका निकाली और रसीद लिख दी। शेर सिंह बहुत खुश था और खुशी में जल्दी से घर की ओर लपका।

उसकी यह खुशी थोडे.ही समय की निकली। अगले ही दिन उसे राणा का बुलावा आ गया। जब वह राणा के महल में पहुँचा, उसने तुकाराम को वहाँ खड़े पाया।

क्या यह सच है कि तुमने तुकाराम से धन उधार लिया था? राणा ने पूछा।

जी, हमारे हुज़ूर! शेर सिंह ने कहा।

क्या तुमने पैसा चुका दिया? राणा ने पूछा।

लेकिन मैंने चुका दिया, शेर सिंह ने कहा और विजयोल्लास में रसीद निकाल ली।

राणा ने रसीद को देखा और ज़ोर से हँसा।

तुम्हारा गवाह एक बरगद का पेड़? उसने पूछा। जी हुज़ूर। उस समय वहाँ पर कोई और मौजूद नहीं था ...शेर सिंह ने कहा।

इसलिए तुम मानते हो कि तुमने इस गरीब आदमी को खाली सड़क पर धमका दिया? राणा ने कठोरता से पूछा।

नहीं, मैं ऐसा करने की सोच भी नहीं सकता। यह तो बस इतना था कि वहाँ उस समय कोई आदमी नहीं गुज़र रहा था! शेर सिंह ने कहा।

कोई बात नहीं यह रसीद बेकार है, राणा ने इसे वापस करते हुए कहा। इसमें तुकाराम के हस्ताक्षर नहीं हैं ...केवल गवाह के हस्ताक्षर हैं!

शेर सिंह ने रसीद को देखा। राणा सही था। तुकाराम ने इस पर हस्ताक्षर नहीं किए थे इसके बजाय उसने गवाह के हस्ताक्षर के स्थान पर लिखा था बरगद का पेड़। शेर सिंह ने अपनी खुशी में इस पर ध्यान ही नहीं दिया।

राणा ने कहा, अब जब हम सब यहीं पर हैं तो तुम तुकाराम का उधार क्यों नहीं चुका देते? अगली बार एक बढ़िया गवाह ढूँढ़ना! दरबार के सभी लोग खिलखिला कर हँस पड़े।

और इस प्रकार चतुर तुकाराम शेर सिंह से बच पाया और उसे अपना धन भी वापस मिल गया।

- रमा रमेश द्वारा पुनर्कथित

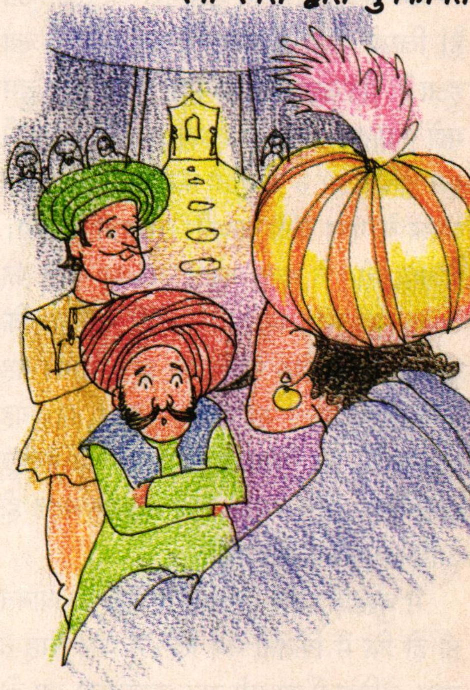

Happy Birthday जन्मदिन की शुभकामनाएँ শুভ জন্মদিন Bengali सुभ जन्मदिन

वेताल कथा

सन्यासी के वरदान

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया। पेड़ से शव को उतारा और उसे अपने कंधे पर डाल लिया। तब शव के अंदर के वेताल ने कहा, राजन्, मेरी समझ में नहीं आता इस आधी रात को इतनी तकलीफें क्यों झेल रहे हो? तुम्हें ऐसी क्या ज़रूरत आ पड़ी है? क्या किन्हीं अद्भुत शक्तियों को पाने का इरादा है? या किसी की भलाई करने के उद्देश्य से ऐसा करने पर तुले हो? परंतु तुम नहीं जानते कि इस प्रकार पाई गयी शक्तियों के परिणाम बड़े ही विचित्र होते हैं। उनका प्रभाव समय समय पर बदलता रहता है। उदाहरण के लिए मैं तुम्हें शंकर तथा काली नामक दो व्यक्तियों की कहानी सुनाता हूँ। अपनी थकावट दूर करते हुए उनकी कहानी मुझसे सुनो।

बहुत समय पहले की बात है। भारत वर्ष के उत्तर प्रांत में एक गाँव आजादपुर गाँव में धर्मपाल नामक एक किसान रहता था। शंकर

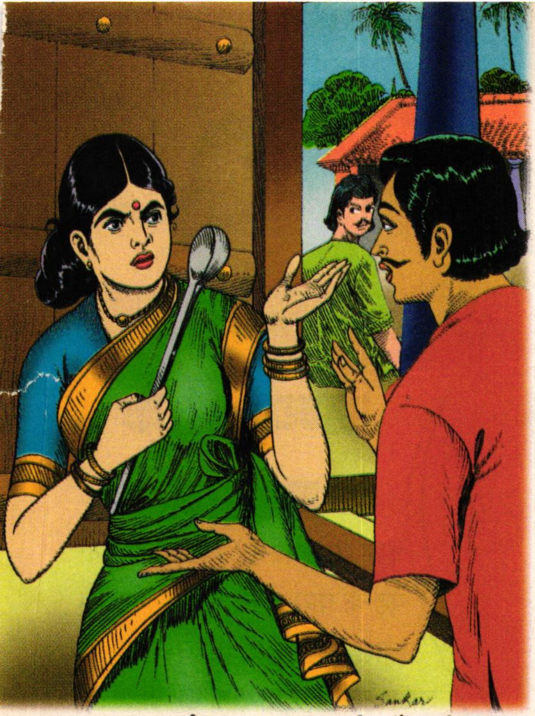

उसका इकलौता पुत्र था। उसकी माँ उसके बचपन में ही स्वर्ग सिधार चुकी थी। धर्मपाल ने उस बिन माँ की औलाद को बड़े ही लाड़-प्यार से पाला-पोसा। इस लाड़-प्यार की वजह से पढाई-लिखाई न हो सकी। वह बहुत ही सुस्त हो गया। पिता ने सोचा कि शादी कर देने से वह ठीक हो जाएगा। इसलिए उसने शंकर की शादी कनिका नामक कन्या से कर दी।

पत्नी कनिका ने भी अपने पति को सुधारने की बड़ी कोशिश की, पर कोई फायदा न हुआ। शंकर पेट भर खाता और गाँव भर में मटरगश्ती करके शाम को घर लौटता। ऐसे सुस्त और निकम्मे बेटे से अपनी शादी करवा देने के अपराध में वह अपने श्वसुर से बहुत नाराज़ रहती थी। बात-बात पर वह उस को खरी-खोटी सुनाती थी। अनाप-शनाप बकती रहती थी। उसे तरह-तरह से सताने लगी। मन ही मन उसने अपने श्वसुर से बदला लेने का निश्चय कर लिया।

कुछ ही दिनों के बाद धर्मपाल की मृत्यु हो गयी। तब से शंकर की मुसीबतें बढ़ती गयीं। कनिका उस पर अपना शासन जमाने लगी और उसे सताने लगी। एक दिन शंकर का दोस्त उसे देखने आया। वह शहर मे रहता था। शंकर ने अपनी पत्नी से कहा, आज मेरा दोस्त भी खाना खाएगा। उसके लिए भी रसोई बनाना। यह सुनते ही कनिका आग-बबूला हो उठी और चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगी, फूटी कौड़ी कमाने की योग्यता भी तुममें नहीं है। एक तो तुम्हें बना कर खिलाना बेकार है तिसपर तुम्हारे दोस्त के लिए भी रसोई बनाऊँ? यह नोई सराय नहीं है, जहाँ ऐरे-गैरे को भी खाना खिलाती रहूँ।

शहर से आया शंकर का दोस्त उसकी बातें सुनकर हक्का-बक्का रह गया। वह बिना कुछ कहे वहाँ से चला गया। शंकर से यह अपमान सहा नहीं गया। पत्नी के इस रवैये से असंतुष्ट शंकर घर छोड़ कर चला गया।

शंकर जंगल से होता हुआ जाने लगा। अंधेरा छा रहा था। इतने में उसे आवाज़ सुनाई पडी, तुम कौन हो? देखते नहीं अंधेरा छा रहा है।जंगल में और आगे-आगे बढ़ते जाना खतरे से खाली नहीं है। शंकर ने उस तरफ मुड़ कर देखा जहाँ से आवाज़ आ रही थी। पास ही के ऊँचे टीले

Happy Birthday जन्मदिन की शुभकामनाएँ শুভ জন্মদিন Bengali सुभ जन्मदिन

पर एक संन्यासी आसन लगाए बैठा हुआ था। शंकर तेज़ी से उस संन्यासी के पास गया और उसे ध्यान से देखने लगा। उसके मुँह पर एक अनोखी तेजस्विता स्पष्ट गोचर होने लगी।

शंकर श्रद्धापूर्वक उसके पाँवों के पास बैठ गया और उसे अपनी दुख: भरी कहानी सुनाई। उसने अपनी चुडैल़ पत्नी के बारे में सविस्तार बताया। फिर आगे कहा, स्वामी, अब मुझमे इतनी सहनशक्ति नहीं है कि शेष जीवन अपनी पत्नी के साथ गुज़ारूँ। उसे सुधारने का, एक अच्छी पत्नी बना का भार अब आप पर ही है। आपसे यह नहीं हो सका तो यहीं आपके पैरों के पास पड़ा रहूँगा और आपकी सेवा करते हुए यहीं रह जाऊँगा।

संन्यासी ने उसे पहले नाराज़गी से देखा, पर फिर हँसते हुए आँखें बंद कर लीं। बग़ल में ही रखे हुए कमंडल से पानी अपने हाथ में उँडे़ला और कहने लगे, कनिका की कर्कशता संपूर्ण रूप से मिट जाए। फिर उसने पानी ज़मीन पर डाल दिया।

बाद में संन्यासी ने शंकर से कहा, इस घोर अंधकार में आगे बढ़ने से तुम्हारी जान को खतरा हो सकता है। पलट कर जाने में ही अच्छाई है। मैं आश्वासन दिलाता हूँ कि इससे तुम पर कोई आफत नहीं आएगी। घर लौटो और देखो कि अब तुम्हारी पत्नी का बरताव कैसा है?

शंकर ने संन्यासी के पैरों को छुआ और घर लौटा। तब तक बहुत रात हो चुकी थी। शंकर को देखते ही कनिका उसके पैरों पर गिर पडी.और

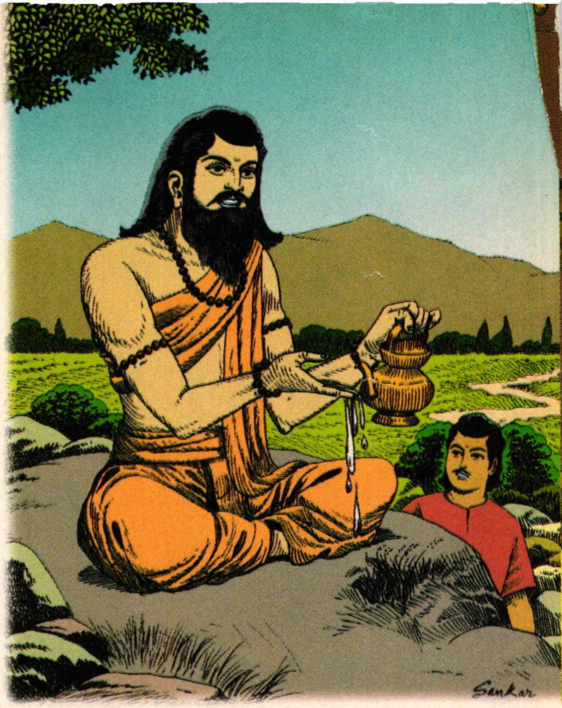

रोती हु कहने लगी, मुझे माफ कर दीजिए। इतने दिनों तक मैं आपको सताती रही। जो नहीं कहना था कहती रही। मेरे पाप का प्रायश्चित नहीं।

शंकर की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। जो भी हुआ, उसने अपनी पत्नी को बताया, तुममें जो भी परिवर्तन हुआ है उसका श्रेय उस संन्यासी को जाता है। उन्हीं के वरदान से तुम में सुधार हुआ है।

उसकी बातों पर आश्चर्य प्रकट करते हुए कनिका ने कहा, अच्छा, यह बात है ! कहते हैं कि देवता वरदान देते थे और अब संन्यासी यह काम करने लगे। समय कितना बदल गया। जो भी हो, वरदान तो आखिर वरदान है। फिर वह अपने हाथों को ध्यान से देखने लगी और कहने लगी, मेरे शरीर का रंग और निखरे और मेरा मोटापन कम हो जाए, ऐसा वर उस संन्यासी से

Happy Birthday जन्मदिन की शुभकामनाएँ शुभ जन्मदिवस Marathi शुभ जन्मदिवस

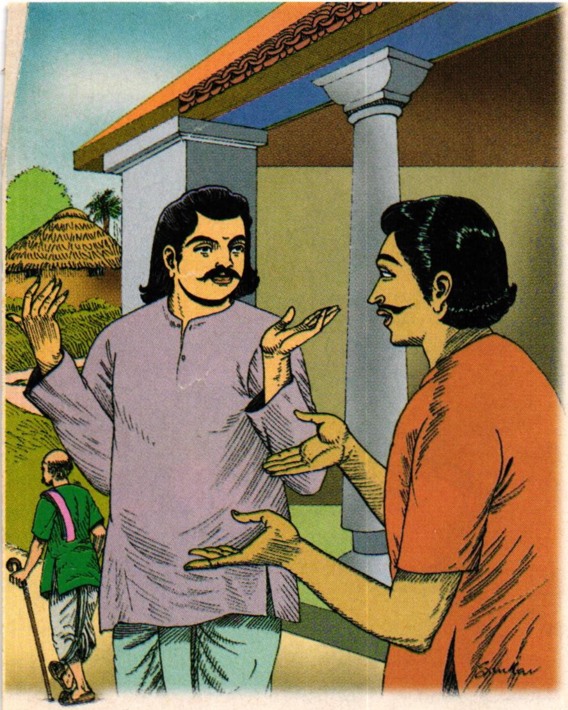

माँगकर आइए।

शंकर अपनी पत्नी की इच्छा पूरी करने दूसरे दिन संन्यासी से मिलने निकला। उस ने संन्यासी से वह वर भी पा लिया और घर लौटा। अपनी पत्नी को देखते ही वह आश्चर्य में डूब गया क्योंकि वह अब बहुत सुंदर लग रही थी। काफी युवती भी हो गई।उसने इसके दूसरे दिन शंकर से कहा, मुझे अच्छी रसोई बनाना नहीं आता। मेरी बनायी रसोई स्वादिष्ट नहीं होती। शायद किसी श्राप के कारण मेरे परिवार की सब स्त्रियाँ इस विद्या से वंचित हैं अत: संन्यासी से मिलकर ऐसा वरदान माँगो कि मैं स्वादिष्ट रसोई बना सकूँ।

शंकर इस छोटे से काम के लिए संन्यासी के पास जाना तो नहीं चाहता था पर करे क्या? उसे लाचार हो कर जान पड़ा और यह वरदान भी पा लिया।

एक सप्ताह बाद कनिका ने शंकर से कहा, मैं सुंदर भी हो गयी हूँ। अच्छी रसोई भी पका लेती हूँ। पर फायदा क्या? हमारी गरीबी हमारे सब सुखों पर ग्रहण बनी हुई है। जैसे थे, वैसे हैं। बिना धन संपत्ति के इनका क्या प्रयोजन? आप एक और बार संन्यासी के पास जाइए तथा धन-संपत्ति की याचना कीजिए।

इस बार शंकर कुछ ज़्यादा ही चिढ़ता हुआ संन्यासी से मिलने जंगल गया। उसने वहाँ टीले पर जाकर देखा संन्यासी उसे कहीं नहीं दिखे। उसने बहुत ढूँढा.वह निराश होकर घर लौट चला। गाँव के बीचों बीच स्थित भोजनालय से सामने आते ही एक आदमी ने पूछा, शंकर, अब तो खुश हो न? शंकर आराम से जिंदगी कट रही है न?

दाढी. और मूँछ के न होने के कारण वह संन्यासी को तुरंत पहचान न सका। जैसे ही उसने पहचाना, उससे कहा, स्वामी जी यह क्या आपकी दाढी, मूँछ और गेरुवे रंग के वस्त्रों का क्या हुआ?

संन्यासी ने हँसते हुए कहा, मेरा नाम काली है कि बदसूरत पत्नी के साथ भी जी सकते हैं पर चुडैल़, कर्कश पत्नी के साथ नहीं जीना संभव नहीं। मेरी पत्नी में ये दोनों लक्षण हैं। मुझसे यह सब सहन नहीं हुआ अत: मैं संन्यासी बन गया परंतु इतने वर्षों की तपस्या का परिणाम यह हुआ कि मेरे मुँह से निकली वाणी सत्य होने लगी। इससे तुम्हारा पारिवारिक जीवन भी सुधर

Happy Birthday जन्मदिन की शुभकामनाएँ ಹುಟ್ಟಿದ ಹಬ್ಬದ ಶುಭಾಶಯಗಳು Kannada हुट्टिद हब्बादा शुभाशयगलु

गया। यह देख कर मुझे लगा कि मैं अपने पारिवारिक जीवन को भी सुधार सकता हूँ इसी विश्वास को लेकर मैंने उन वस्त्रों को त्यज दिया। मैं अपने गाँव की ओर जा रहा हूँ।

संन्यासी की बातें सुनकर शंकर एकदम निराश हो गया। उसने कहा, स्वामी जी, इतने वर्षों आप ध्यान-मग्न रहे। सिर्फ एक दिन और यह ध्यान चालू रखिए इससे आपका कुछ न बिगडेगा मेरी बड़ी उम्मीद है आपसे कि आप हमें धन प्राप्ति का वरदान देंगे।इस वरदान को पाने ही मैं आपके पास जंगल गया। मैं वहीं से लौट रहा हूँ।

उसकी बातों पर काली ने ज़ोर से हँसते हुए कहा, शंकर बडों.ने कहा है कि कष्ट का फल मीठा होता है। सुस्ती नामक पिशाचिनी को दूर भगाओ। मेहनत करो और जो तुम कर सकते हो करो व धन अर्जित करो। इसी में सुख है। मुझे अभी निकलना है, हम फिर कभी मिलेंगे। कहता हुआ वह वहाँ से निकल पडा।

काली के गाँव पहुँचते-पहुँचते बहुत रात हो गई। बडे.ही उत्साह के साथ वह घर आया। उस समय उसके घर की खिड़कियाँ खुली हुई थीं। उसे अंदर से आती आवाज़ें स्पष्ट सुनाई दे रही थीं। उसकी पत्नी बाला, उसकी दस वर्षीय पुत्री व आठ वर्षीय पुत्र आपस में बातें कर रहे थे।

तुम्हारे दादा पर्याप्त संपत्ति छोड़कर गए पर क्या लाभ। उसकी रक्षा करने वाला कोई नहीं रहा। तुम लोगों को अपने काबू में न रख पाने के कारण तुम दोनों की भली प्रकार से शिक्षा भी

संभव न हो सकी और न ही तुम दोनों में शिक्षा के प्रति कोई रुचि दिखाई देती है। काम-धंधे से तुम्हारा दूर-दूर तक नाता नहीं दिखता। कुछ वर्ष पश्चात् तुम्हारा विवाह आदि सब कैसे हो सकेगा? क्या मैं इतनी साारी जिम्मेदारियाँ संभाल सकूँगी? तुम्हारा पिता बहुत ही कठोर निकला। हो सकता है, मैं मुँह फट हूँ, जो मुँह में आता है, बक देती हूँ। पर ऐसी सभी पत्नियों के सब पति सन्यासी बन जाते हैं? तब उन पत्नियों को क्या करना चाहिए जिन के पति क्रोधी होते हैं? तब क्या उन पत्नियों को कुएँ में कूद कर आत्महत्या कर लेनी चाहिए? मुझे लगता है कि मरण ही मेरे लिए शरण है। यों बाला अपने बच्चों को अपना दुखड़ा सुना रही थी।

फिर धमाके की एक आवाज़ आयी। लगता

Happy Birthday जन्मदिन की शुभकामनाएँ ଶୁଭ ଜନ୍ମଦିନ Oriya सुभ जन्मदिन

था किसी ने अपना सिर फोड़ लिया। एक क्षण रुक कर खुली खिड़की के पास काली आया और कहने लगा, बाला, मैं लौट कर आ गया हूँ दरवाज़ा खोलो। फिर ज़ोर-ज़ोर से दरवाज़ा खटखटाने लगा।

वेताल ने यह कहानी सुना कर पूछा, राजन्, शंकर बिना किसी विशेष प्रयास के अपनी पत्नी की कर्कशता व कठोरता को दूर करने में कामयाब हुआ और यों अपनी समस्या का परिष्कार कर पाया। किन्तु लगता है कि छ: सालों तक ध्यान मग्न काली को इस विषय में सफलता नहीं मिली। वह अपनी पत्नी की कर्कशता को दूर नहीं कर पाया। ऐसा क्यों हुआ? वैद्य जब रोगी की चिकित्सा करके उसके रोग दूर कर सकता है तब उसी प्रकार के रोग से पीड़ित वैद्य अपना इलाज क्यों नहीं कर पाता? उस रोग से स्वयं को मुक्त क्यों नहीं कर पाता? क्या यह विचित्र बात नहीं? मेरे मन के इन संदेहों के समाधान को जानते हुए भी यदि तुम मौन रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकडे.-टुकडे.हो जाएँगे।

विक्रमार्क ने उसके संदेहों को दूर करने के उद्देश्य से कहा, लगता है कि शुरुआत में संन्यासी काली को अपनी तपस्या पर उतना विश्वास नहीं रहा। पर जब उसने देखा कि उसकी बातों की महिमा है और शंकर पर अच्छा प्रभाव दिखाया तो वह घर लौटा। उसने सोचा कि उसकी बातें उसकी पत्नी पर भी अपना प्रभाव दिखाएँगे और वह अच्छी पत्नी बन जाएगी। किन्तु ऐसा नहीं हुआ। उसकी पत्नी अपने बच्चों से कर्कश पत्नियों व क्रोधी पतियों के बारे में बता रही थी। उसे लगा कि इन बातों में सच्चाई है। इसलिए उसने दरवाज़ा खटखटाकर पत्नी को बुलाया। पत्नी के विषय में वह असफल हो गया, क्योंकि तपस्या की शक्ति का उपयोग स्वार्थ के लिए करने की इच्छा उसमें जगी। उसका उपयोग असल मे होना दूसरों के लिए चाहिए। इसी में परमार्थ है।

राजा का मौन-भंग करने में सफल वेताल शव सहित ग़ायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा। ***(आधार : गायत्री देवी की रचना)***

Happy Birthday जन्मदिन की शुभकामनाएँ શુભ જન્મદિવસ Gujarati शुभ जन्मदिवस

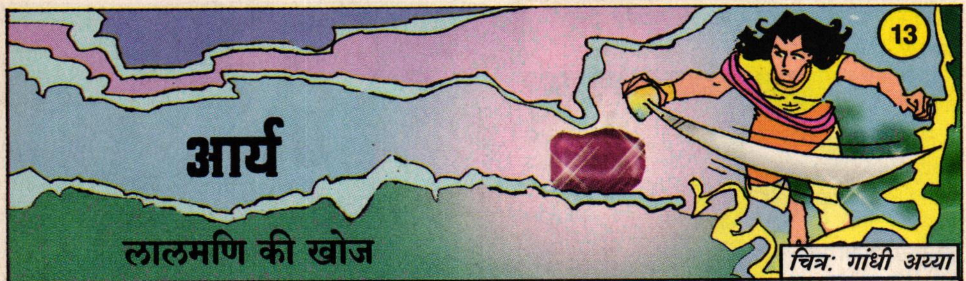

हमें पता चलता है कि थार्विक (प्रभात) धर्मपिता का पुत्र है। वह बिसरे हुए बच्चों को गुफा से ले जाने में कामयाब होता है।

धर्मपिता भयभीत होकर सुनते हैं। थार्विक उन्हें अपनी योजना बताता है।
रुको! मैं यह करूँगा।
नहीं! मैं उसे धोखा नहीं दे सकता।
तब तो तुम्हारे हाथों बच्चों का खून होगा!
बहुत बढ़िया! लालमणि जल्द ही मेरी होगी!
तुम्हारा लालच ही तुम्हारा विनाश होगा।
आधी रात को गुफा में आना।
इस सब के बारे में आर्य को नहीं बताना नहीं तो तुम्हें भुगतना पडेगा!

जैसे ही धर्मपिता गुफा की ओर लौटते हैं रास्ते में उन्हें आर्य मिलता है।
राजन् जंगल तुम्हारे लिए सुरक्षित नहीं हैं।
बच्चे कहाँ हैं?
मैंने उन्हें एक अन्य उद्देश्य से भेजा है।
आर्म धर्मपिता के उद्देश्मों से अभिमत नहीं हुआ।
मैंने सोचा आप उन्हें मुझे अपने पास बुलाने के लिए लाए थे। उन्हें उनके माता-पिता को सौंप दो!

मेरा समय बरबाद न करो, राजन्। मुझे जाने दो
इतनी आसानी से नहीं! मुझे बताओ बच्चे कहाँ हैं?
तुम अपने मंत्री प्रभात से क्यों नहीं पूछ लेते? क्या तुमने उसे जाँच के लिए यहाँ नहीं भेजा?
तुम ये सब कैसे जानते हो?
मह मालूम होना हर माता-पिता का कर्तव्म है कि उनके बच्चे कहाँ हैं।
प्रभात आपका पुत्र है?
हाँ। मैं तुम्हें उससे बचाने के लिए यहाँ लाया था।
(आगे है)

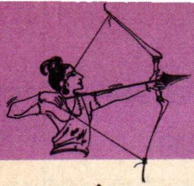

रामायण

युद्धकांड़-१४

विभीषण तुरंत जाकर पुष्पक विमान ले आया। वह बहुत ही बडा.था। उसके कई हिस्से स्वर्ण के बने थे। आसन मोतियों का था, उस पर सोने की घंटियाँ लटकी थीं। उसको श्री राम के पास ले जाकर विभीषण ने हाथ जोड़ कर पूछा - और मेरे लिए क्या आज्ञा है?

विभीषण, वानरों ने मुझ पर बहुत बडा.उपकार किया है। मेरी इच्छा है कि तुम उन्हें यथा योग्य उपहार देकर संतुष्ट करो। इसके लिए तुम्हें बडी. कीर्ति मिलेगी। कहकर राम, सीता व लक्ष्मण को लेकर, विमान में सवार हो गए।

उन्होंने सुग्रीव आदि से विदा लेकर सस्नेह उनसे अयोध्या जाने की अनुमति माँगी। उन्होंने कहा - हमें भी साथ ले कर जाइए। हम भी आपका पट्टाभिषेक देखकर आनन्दित होंगे।

तो आप सब भी आइए। राम ने सबको पुष्पक विमान में आमंत्रित किया। सबको लेकर, पुष्पक आकाश में उड़ने लगा। इतने लोग विमान में थे पर वह इतना बडा.था कि कहीं भी जगह की तंगी नहीं थी। जब वे विमान में जा रहे थे, श्री राम ने सीता को वे युद्ध स्थल दिखाए, जहाँ राक्षस वीर मारे गए थे। पुल वगैरह दिखाए। उन्होंने वह जगह भी दिखाई, जहाँ वे विभीषण से मिले थे।

जब वे किष्किन्धा के पास आए, तो सीता ने इच्छा प्रकट की कि तारा आदि सुग्रीव की

Happy Birthday जन्मदिन की शुभकामनाएँ শুভ জন্মদিন Assamese हुबा जन्मदिन

पत्नियाँ और वानर वीरों की पत्नियाँ भी साथ आएँ। राम मान गए।

उन्होंने पुष्पक नीचे उतारा और सीता की इच्छा के बारे में सुग्रीव को बताया। सुग्रीव ने अपने अंत:पुर में जाकर, तारा और वानर वीरों की पत्नियों को आने के लिए कहा। तारा ने सब वानर स्त्रियों को यात्रा के लिए तैयार किया। वे सजधज कर सीता को देखने आयीं।

वानर स्त्रियों को सवार करके विमान फिर चल पडा। श्री राम ने सीता को ऋष्यमूक पर्वत दिखाया, जहाँ वे पहली बार सुग्रीव से मिले थे। फिर उन्होंने वह जगह दिखाई जहाँ उनको शबरी दिखाई दी थी। उन्होंने नम आँखों से वह जगह दिखाई जहाँ जटायू रावण से लड़ते हुए घायल अवस्था में मिला और उनकी गोद में प्राण त्यागे।

विमान अयोध्या के पास पहुँचने को ही था। वानर, राक्षस आदि खडे. होकर अयोध्या नगर की शोभा निहारने लगे।

परन्तु श्री राम सीधे अयोध्या नहीं गए। वे भारद्वाज आश्रम गए। ऋषि भारद्वाज से उन्होंने भरत और अपनी माताओं के कुशलक्षेम के बारे में पूछकर मालूम किया।

वे चैत्र की शुक्लपक्ष की पंचमी के दिन अयोध्या से वनवास के लिए निकले थे। अब जब वे अयोध्या पहुँचे तब चैत्र की शुक्लपक्ष की चतुर्थी थी यानि चौदह वर्ष पूरे होते थे। ऋषि भारद्वाज ने चाहा कि वे उस दिन उनका आतिथ्य स्वीकार करें और अगले दिन ही अयोध्या जाएँ।

श्री राम ने हनुमान को बुलाकर कहा - तुम अयोध्या जाओ। रास्ते में श्रृंगवेरपुरं में गुह से मिलो। मेरे कुशलक्षेम के बारे में उसे बताओ। वह मेरा प्राण मित्र है। उससे तुम्हें अयोध्या की खबरें मिल जाएँगी।

वह मेरी कुशलक्षेम जान कर बहुत प्रसन्न होगा। फिर अयोध्या जाकर भरत को हमारे बारे में सविस्तार वार्ता दो, मेरी विजय की खबर सुनकर भरत की क्या प्रतिक्रिया होती ह ज़रा ध्यान से देखना। कहीं ऐसा तो नहीं इतने समय राज्य के भोगों का आनन्द लेने के बाद उन सबको हाथ से

Happy Birthday जन्मदिन की शुभकामनाएँ ജന്മദിനാശംസകൾ Malayalam जन्मदिनासमसगल

छुटता जान क्या उसे दुख: हो रहा है। यह सब भली भाँति परख लेना। यदि वह राज्य करना चाहे तो वह राज्य कर सकता है और यदि यह उसकी इच्छा है तो हमारे अयोध्या पहुँचने से पूर्व ही तुम हमसे आकर मिलो।

हनुमान मानव रूप धारण करके वायु मार्ग से चल पडे। गंगा, यमुना का संगम पार करके श्रंगवेरपुरं पहुँचे व गुह से मिले। गुह से यह कहकर कि श्री राम कल सवेरे भारद्वाज आश्रम से निकलेंगे वे वायु मार्ग से ही आगे चल पडे। फिर वे अयोध्या के पास नन्दी ग्राम पहुँचे।

वहाँ भरत एक आश्रम बना कर तपस्वियों की भाँति ही रह रहे थे। उन्हें इस बात का दुख: था कि चौदह साल पूरे होने आए पर श्री राम का आगमन तो दूर कोई खबर तक नहीं है।

हनुमान ने भरत से मिलकर कहा - महाराज, एक शुभ समाचार लाया हूँ। श्री राम ने रावण को मार दिया है। वे सीता को लेकर अपने महाबली मित्रों के साथ वापस आ रहे हैं। सीता और राम के साथ लक्ष्मण भी है।

यह सुनते ही भरत खुशी से मूर्छित हो गए। उन्हें जब होश आया तो हनुमान को गले लगा कर कहा - समझ में नहीं आता, यह शुभ समाचार देने वाले तुम मनुष्य हो या देवता। इसके लिए मैं तुम्हें क्या दूँ क्योंकि इस समाचार के लिए तो तुम मेरा सर्वस्व भी माँगोगे तो मैं सहर्ष देने के लिए तैयार हो जाऊँगा।

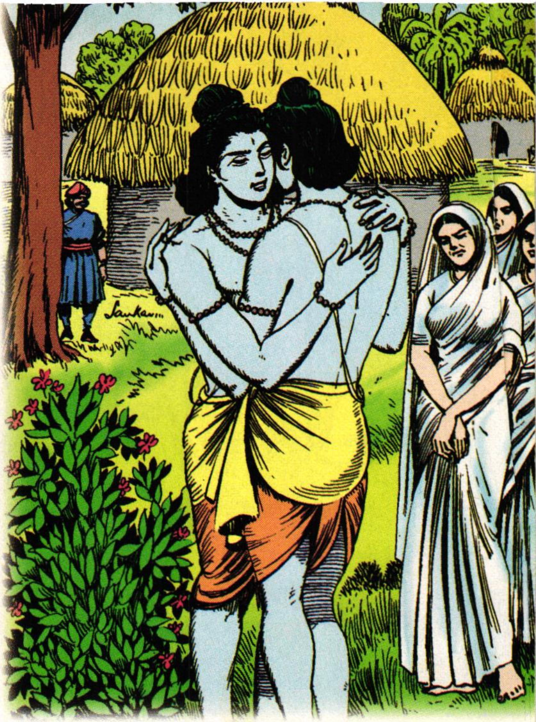

दोनों काफी देर तक बैठकर बातचीत करते रहे। पर भरत राम कथा श्रवण से तृप्ति ही नहीं हो रही थी। वे बार-बार पूछते और अश्रु बहाते रहे।

श्री राम के वनवास में जो कुछ गुज़रा था हनुमान ने सब विस्तार से भरत को बताया और वे मंत्र-मुग्ध से सुनते रहे। भरत ने शत्रुघ्न से सारी अयोध्या नगरी अलंकृत करने को कहा। वाद्यों का प्रबन्ध करके श्री राम के स्वागत की व्यवस्था करने को कहा।

नन्दी ग्राम और अयोध्या के बीच का मार्ग साफ कर दिया गया। सब जगह पानी और फूल छिड़के गए। राज मार्ग पर तोरण बाँधे गए।

Happy Birthday जन्मदिन की शुभकामनाएँ Santali सागुन जानाम माहा

चन्दन छिड़का गया।

राज परिवार की स्त्रियाँ श्री राम के दर्शन के लिए झुण्ड बना कर निकल पडीं। हजारों हाथियों और घोडों को सजाया गया। उन पर सवार होकर, कुछ रथों पर तथा कुछ बग्घियों में निकल पडे। कौशल्या, कैकेयी तथा सुमित्रा अपनी सब दासियों के साथ पालकी में निकल पडीं। इन सब के साथ नगरवासी, नन्दीग्राम में पहुँचे।

राम को काफी देर तक आता न देख कर भरत को संदेह होने लगा, कहीं हनुमान ने झूठी खबर तो नहीं दी। इतने में पुष्पक दिखाई दिया। वह जल्दी ही भूमि पर उतरा। भरत ने जाकर, राम को नमस्कार किया। श्री राम ने उनको गले लगाया। वानर वीर मानव रूप में थे। भरत ने उन सब से बातचीत की उसने सुग्रीव से कहा - हम अभी तक चार भाई थे अब तुम हमारे पाँचवें भाई हो। उसने विभीषण को उसकी सहायता के लिए धन्यवाद दे कर बहुत प्रशंसा की।

श्री राम ने कौशल्या व अन्य माताओं के चरण स्पर्श किए तथा महर्षि वशिष्ठ को दण्डवत् प्रणाम किया। भरत ने श्री राम की पादुकाएँ स्वयं पहनाईं फिर हाथ जोड़ कर कहा - हे दीनबन्धु, तुम अपना राज्य संभालो। इस राज्य को आपको सौंप कर मेरा जन्म धन्य हो गया। तुम्हारे जाने के बाद मैंने तन, मन से कार्य संभाला अब तक धान्य तथा सेना आदि दोगुनी हो चुकी है।

श्री राम ने नन्दी ग्राम पहुँचते ही कुबेर का पुष्पक विमान वापस उसके पास भेज दिया।

सब के जाने के बाद भरत ने राम से कहा - भैया, तुम मेरी माता को संतुष्ट करने के लिए राज्य त्याग करके वनवास चले गए और यह राज्य मुझे सौंप गए थे। जो राज्य मेरे पास धरोहर के रूप में रखा था अब वह सब आपका हुआ।

शायद आप जानना चाहोगे कि मैं यह सब इतनी जल्दी क्यों कर रहा हूँ। वास्तविकता यह है कि इस राज्य को वहन करने की जो शक्ति तुममें है वह मुझमें नहीं है। हंस के स्थान पर भला कौव्वा कैसे उड़ सकता है? हमारे पिता ने

Happy Birthday जन्मदिन की शुभकामनाएँ जन्मदिनस्य शुभाशयाः Sanskrit जन्मदिनास्य शुभाशयाः

पुत्र कामेष्टि करके जिस उद्देश्य से आपको प्राप्त किया वह तुम्हारे द्वारा राज्य भार स्वीकार करने से ही पूर्ण हो सकता है।

अब तुम आ गए हो तथा किसी के मन में कोई संशय नहीं है कि कौन राजगद्दी का हकदार है। अब तुम्हारी देखरेख में सब राजकाज होगा।

राम ने भरत को गले से लगा लिया और कहा - तुम्हारी और अपने इन दोनों भाइयों की सहायता के बिना मेरा राजकाज कैसे संभव होगा।

तुम्हारी सलाह और सम्मति ही मेरे शासन का आधार होगी मैं इस योग्य नहीं कि अकेला इसे संभाल सकूँ। भरत ने आँसू पोंछते हुए सुमंत को आगे की कार्यवाही करने के लिए कहा।

पहले भरत ने बाद में लक्ष्मण, शत्रुघ्न तथा सुग्रीव व विभीषण ने मंगल स्नान किया। श्री राम के बाल सँवारे गए। शरीर पर सुगंधित लेप लगाए गए। मालाएँ पहनाई गयीं। पीताम्बर धारण करवाए गए। फिर वे आसन पर आसीन हुए। दशरथ की पत्नियों तथा भरत लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न की पत्नियों ने स्वयं आभूषणादि से अलंकृत हो कर सीता का अलंकरण किया। कौशल्या ने वानर पत्नियों अलंकरण की भी पूर्ण व्यवस्था की। सुमंत अच्छे घोड़े जोत कर रथ ले आया।

श्री राम उसमें सवार हो कर अयोध्या के

राजभवन ओर चल पड़े। सुग्रीव, हनुमान आदि भी साथ में दूसरे रथ पर सवार थे सुग्रीव की पत्नी सीता जी के साथ ही रहीं। दशरथ के मंत्री तथा महर्षि वशिष्ठ पहले ही राजभवन पहुँच चुके थे और पट्टाभिषेक की व्यवस्था कर रहे थे। फिर मंत्री राम से मिलने आए। श्री राम का रथ स्वयं भरत सारथी बन कर हाँक रहे थे। शत्रुघ्न ने छत्र पकड़ रखा था लक्ष्मण चँवर डुला रहे थे। उनके आते ही चारों ओर शंख ध्वनि गूँज उठी। पूरी अयोध्या दुल्हन की भाँति सजी हुई थी। सब घरों के बाहर खडे. अपने राम के दर्शनों के लिए व्याकुल थे।

राम को देख कर अयोध्यावासी अपना जन्म

Morning सुबह ఉదయం Telugu उदयम

बधाइयाँ ! चन्दामामा रामायण प्रश्नोत्तरी दिसम्बर २००९ के उत्तर : B
विजेता : हर्ष जैन, नई दिल्ली

सफल मानते हुए राम की छवि अपने मनों में बसाए अपने घरों को गए। वे सीधे दशरथभवन गए। सुग्रीव ने अपने चार वानरोत्त्मों को सवेरा होने से पहले राज्याभिषेक हेतु समुद्रजल लाने की आज्ञा दी। ये चारों थे - हनुमान, जाम्बवन्त, वेगदर्शी तथा ऋषभ।

श्री राम का पट्टाभिषेक देखने के लिए सभी उत्सुक हो रहे थे। राम और सीता को रत्नजड़ित पीठिका पर बिठाया गया। वशिष्ठ, वामदेव, जाबली, काश्यप, कात्यायन, सुयज्ञ, गौतम व विजय आदि आठ महर्षियों ने राम का राज्याभिषेक किया।

शत्रुघ्न ने राम का छत्र पकड़ा सुग्रीव विभीषण आदि ने चँवर पकड़े। देवेन्द्र ने वायुदेवता के हाथ सौ कमलों वाला स्वर्ण हार और नवरत्न हार भेजा।

राम ने ब्राह्मणों को एक लाख घोडे, बछड़े वाली गाएँ इत्यादि उपहार में दिए। तीस करोड़ स्वर्ण मुद्राएँ, वस्त्र, आभूषण आदि दान में दिए गए। सुग्रीव को एक दिव्य काँचन माला दी।सीता ने हनुमान को दो कपड़े और सुन्दर आभूषण भेंट में दिए।

श्री राम ने सीता को एक मोती की माला देकर कहा - जिसने तुम्हें सबसे अधिक संतोष दिया हो उसे दे दो। सीता ने उसे हनुमान को दे दिया। हनुमान ने तुरंत उसे अपने गले में पहन लिया।

श्री राम ने सभी को यथोचित उपहार दिए। पट्टाभिषेक के बाद राम से विदा लेकर सभी वानर किष्किन्धा और विभीषण लंका लौट गए।

राम राज्य का आधा भार लक्ष्मण व शत्रुघ्न के कन्धों पर डाल दिया तथा भरत को अपना युवराज बना कर राज्य किया। उन्हों ने सौ अश्व मेघ यज्ञ किए। राम राज्य में किसी को कोई कष्ट नहीं था। अकाल मरण नहीं था। राम राज्य सही मायनों में एक आदर्श राज्य जाना जाने लगा।

(युद्धकाण्ड समाप्त)

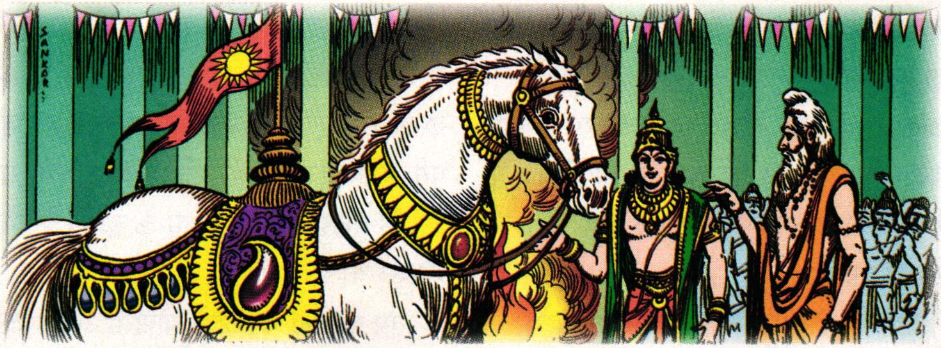

Morning सुबह காலை Tamil कालै

मित्र भेद-३

दमनक के द्वारा सियार की कहानी सुनकर राजा सिंह पिंगलक बोला - हमारा सारा परिवार डरकर जंगल से भाग जाना चाहता है।

महाराज, यह उनकी गलती नहीं है। जैसा राजा, वैसी प्रजा। आप हिम्मत करके यहीं पर रह जाएँ तो मैं रंभाहट करने वाले जानवर का समाचार ले आऊँगा। इसके बाद आप जैसा करना चाहें, वैसा कर सकते हैं। दमनक ने समझाया।

अच्छी बात है! लेकिन तुम में इतनी हिम्मत है? पिंगलक ने पूछा।

मालिक की आज्ञा हो तो कोई भी विश्वासपात्र सेवक हिम्मत कर सकता है? वह समुद्री जल और आग में कूदने को भी तैयार हो जाएगा। दमनक ने कहा।

अच्छी बात है। तब तो चले आओ। तुम्हारा शुभ हो! पिंगलक ने कहा।

इसके बाद दमनक सिंह को प्रनाम करके रंभाहट की दिशा में रवाना हुआ।

पिंगलक अपने मन में यों सोचने लगा - मैंने अपना भय इसके सामने प्रकट करके भूल तो नहीं की? कहीं यह उस भयंकर जानवर को लाकर धोखे से मुझे मरवा न डाले क्योंकि जिसे आश्रय न मिला हो, ऐसे सेवक कुछ भी करने को तैयार हो जाते हैं। इसलिए मैं और कहीं छिपकर इंतज़ार करूँगा।

यह सोचकर पिंगलक आत्मरक्षा के हेतु एक अनुकूल प्रदेश में गया, फिर सोचा - विश्वास करने वाला बलवान भी कभी-कभी निर्बल के हाथों हार जाता है। सावधान रहने वाला निर्बल

Morning	सुबह	সকাল	Bengali	साकाल

व्यक्ति बलवान के सामने भी नहीं झुकता।

इस बीच दमनक ने जाकर रंभाने वाले संजीवक को देखा, यह जानकर वह आश्चर्य मे आ गया कि संजीवक एक साधारण बैल है। उसने सोचा कि संजीवक को लेकर पिंगलक के मन में भय है, इसे आधार बना कर पिंगलक को अपने आधीन रखना आसान है। सेवक सदा यह चाहते हैं कि अपने मालिक के सामने कहिन समस्याएँ पैदा हो जाएँ क्योंकि उन्हें हल करने के बहाने वे लोग फायदा उठा सकते हैं। जिस राजा के समक्ष कोई समस्या नहीं होती उसे सलाह देने वालों की क्या आवश्यकता है? तंदरुस्त व्यक्ति के लिए वैद्यों तथा औषधियों की क्या आवश्यकता?

इसके बाद दमनक पिंगलक के पास गया। पिंगलक ने पूछा- क्या तुमने उस जानवर को अपनी आखों से देखा?

आपकी कृपा से देख लिया है। आपके बल-पराक्रम के बारे में उसे सविस्तार बताया भी है। आपके शासन को स्वीकार करने की सलाह भी दी है।

जल्द ही मैं उसे आपके चरणों का सेवक बना दूँगा। दमनक ने कहा। ये बातें सुन कर पिंगलक बडा.प्रसन्न हुआ और बोला- जल्दी जाओ, उसे मेरे पास ले आओ।

तब दमनक संजीवक के पास जाकर बोला- अरे नटखट बैल, यहाँ आ जाओ! बिना शिष्टता के हमें परेशान करते रंभाते क्यों हो? हमारे राजा

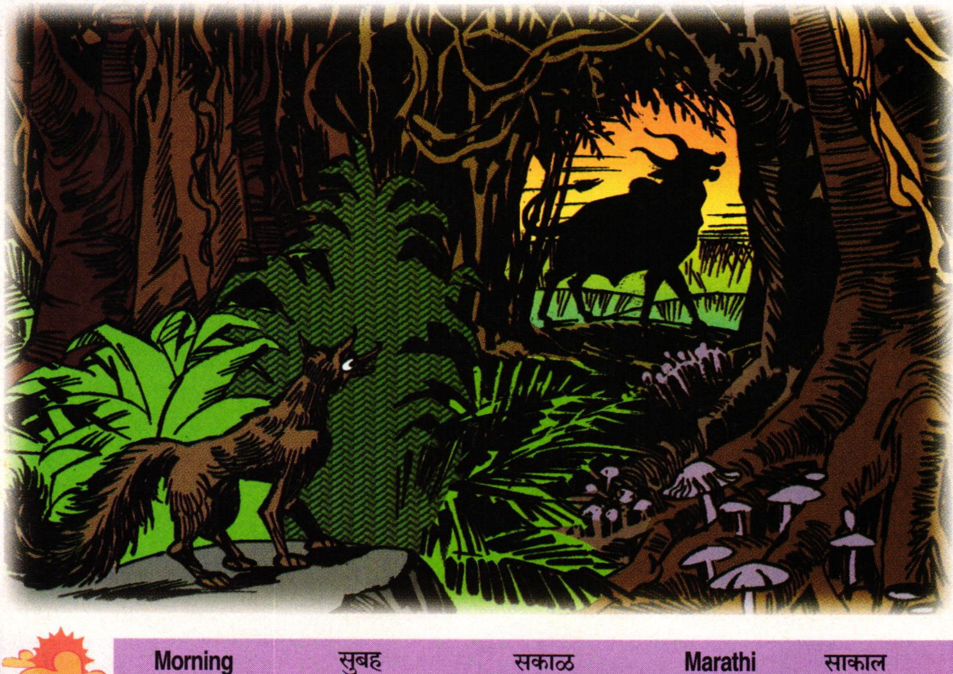

Morning	सुबह	सकाळ	Marathi	साकाल

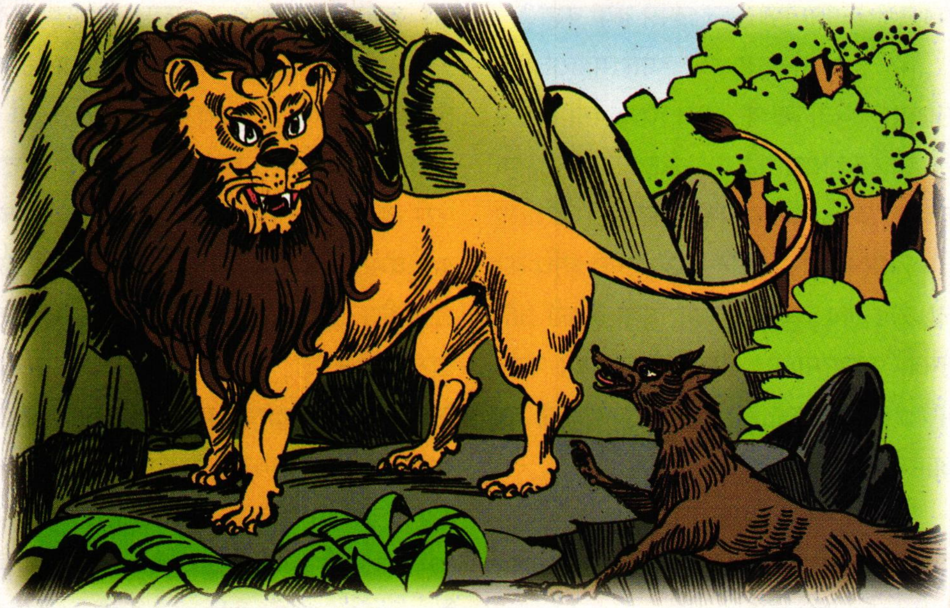

पिंगलक इसकी कैफियत तलब करना चाहते हैं?

अरे रे! तुम जिस पिंगलक की बात करते हो, वह कौन है? संजीवक ने पूछा।

यह क्या? तुम हमारे राजा पिंगलक को नहीं जानते?

उनका परिचय दूँ तो तुम काँप उठोगे! वह एक बहुत बड़ा सिंह है। इस जंगल का राजा है। सभी जानवर उसके परिवार में आते हैं। वह एक विशाल बरगद के नीचे दरबार लगाए रहता है। इस जंगल में रहने वाले समस्त प्राणियों का वह मालिक है। दमनक ने समझाया।

ये बातें सुनकर संजीवक डर गया और दमनक से बोला - अरे, तुम तो बडे. अच्छे जानवर मालूम होते हो। यदि तुम मुझे उनके पास ले जाना चाहते हो तो पहले उनसे मुझे अभय दिलाओ।

तुम्हारी इच्छा ठीक ही है। लेकिन राजाओं का चित्त बडा.ही गहरा होता है, तुम यहीं रहो। यों दमनक ने संजीवक को समझाया। पिंगलक के पास जाकर बोला- महाराज, वह जानवर साधारण नहीं है।

कहता है कि वह साक्षात् शिवजी का वाहन है शिवजी की अनुमति से ही वह इस जंगल में चर रहा है।

ये बातें सुनकर पिंगलक घबरा गया और बोला- अरे, मैं पहले से ही जानता था कि बिना ईश्वर की अनुमति के कोई भी इस जंगल में स्वेच्छापूर्वक घूमते हुए रंभा नहीं सकता। हाँ, तुमने

Morning सुबह ಪ್ರಾತಃಕಾಲ Kannada प्रातः काल

यह नहीं बताया कि तुमने उससे क्या कहा?

मैंने उसे समझाया है- हमारे महाराज तो साक्षात् पार्वतीदेवी के वाहन हैं। पार्वती देवी ने ही हमारे महाराज को यह जंगल दिया है। तुम यहाँ पर हमारे अतिथि बनकर आये हो। इसलिए तुम हमारे राजा के दर्शन करके उनसे संधि कर लो, तब खूब खाओ, पिओ, घूमो, खेलो और उनकी अनुमति में अपना जीवनयापन करो। मेरी इन बातों को उसने मान लिया पर वह आपसे अभय चाहता है।

पिंगलक बहुत प्रसन्न हुआ और बोला- वाह, तुमने बहुत अच्छा कहा। मैंने उसे अभय दे दिया है, उसे बुला लाओ।

संजीवक को लाने जाते वक़्त दमनक का हृदय आनंद के मारे फूल उठा। वह सोचने लगा उस पर राजा का अनुग्रह हुआ।

तब दमनक संजीवक के पास जाकर बोला- हे मित्र, मैंने तुम्हारे लिए राजा का अनुग्रह प्राप्त कर लिया है। उन्होंने तुम्हें अभय प्रदान किया है। तुम अब बिना शंका के मेरे साथ आ सकते हो। लेकिन एक बात याद रखो। तुम्हें सदा मेरी बात माननी होगी। तुम यह सोच कर घमण्ड में न जाना कि तुम राजा के आत्मीय हो, इसलिए सारा शासन मेरे द्वारा चलने दो, ऐसा करने से हम दोनों को सुख प्राप्त होगा। एक व्यक्ति शिकार करने वाले जानवर को हाँकता है और दूसरा उसे मारता है। तब दोनों मिलकर उसे बाँट लेते हैं। यही शिकार का धर्म है। अलावा इसके यदि तुम मुझे असंतुष्ट करोगे तो तुम्हारा नाश होगा। राजा के नौकरों को प्रसन्न न करने वाले दंतिल की भाँति अपमानित होते हैं।

सो कैसे? संजीवक ने पूछा। दमनक ने दंतिल की कहानी सुनाना शुरू कर दिया।

आगे है

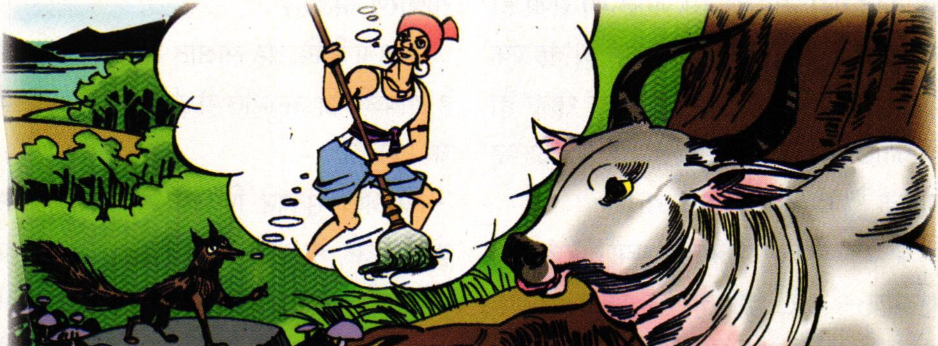

Morning	सुबह	ସକାଳ	Oriya	साकाला

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

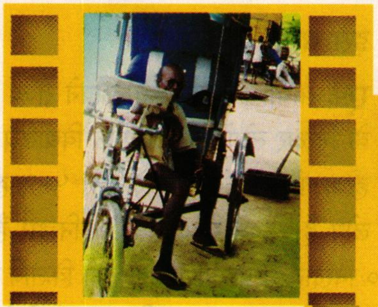

NARAYANAMURTHY TATA

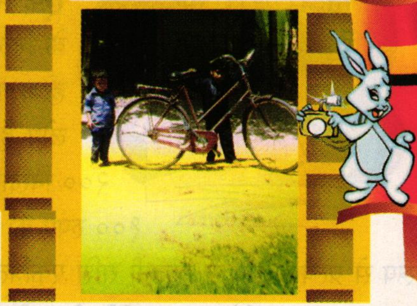

NARAYANAMURTHY TATA

Editor, CHANDAMAMA INDIA LTD.,

B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B', MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/- रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा ।

बधाइयाँ

कोपल कुलकर्णी,
वैशाली नगर, इन्दौर

विजयी प्रविष्टि

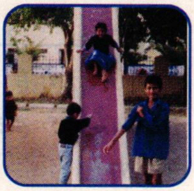

बाल श्रम का हो तिरस्कार
खेल-कूद बचपन का सार

चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-११ दिसम्बर २००९ उत्तर:

१.जीसस क्राइस्ट २.रेन्डियर ३.बाइबिल ४.स्लेज ५. चार्ल्स डिकिन्स, १८४३, ६. मैगी ७. विधर्मियों के शीतकालीन अयनांत उत्सवों से प्रतिस्पर्धा करने के लिए ८. मार्टिन लूथर

नोटः कोई भी पूर्णतः सही प्रविष्टि नहीं मिली अतः किसी को पुरस्कार नहीं दिया जा रहा है।

Morning	सुबह	સવાર	Gujarati	सवार

तेज़ फॉर्मूला

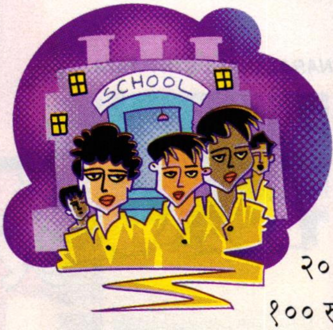

इस महीने का प्रश्न:

एक सामाजिक कार्यकर्ता अपने राज्य के १३ गाँवों/छोटे कस्बों के निरक्षर लोगों के लिए एक विद्यालय खोलना चाहता है। १-४ हरेक गाँव में ६०० निरक्षर हैं। ५-९ हरेक गाँव में ८०० निरक्षर लोग हैं। १०वें गाँव में ३७१ निरक्षर हैं। ११-१३ हरेक गाँव में २०० निरक्षर हैं। प्रत्येक व्यक्ति को किताबें तथा अन्य पूर्तियों के लिए १०० रुपए की अत्यावश्यक राशि जमा करने के लिए कहा गया। सामान्य रूप से प्रत्येक गाँव से कितनी राशि एकत्रित हुई ?

इसका हल अप्रेल'१० महीने के अंक में प्रकाशित किया जाएगा।

सबसे तेज़ सूत्र (फॉर्मूला) देने वाले को ५००/- रुपए का इनाम मिलेगा। एक से अधिक सही प्रविष्टियाँ होने पर सफल प्रतिभागियों में प्रत्येक को १००/- रुपए दिए जाएँगे। अपने प्रवेश फॉर्म २८ फरवरी के पहले इस पते पर भेजें :

Editor, CHANDAMAMA INDIA LTD.,
B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B',MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093
or e-mail your entries to:contests@chandamama.com

यहाँ प्रस्तुत है दिसंबर'०९ महीने की समस्या को हल करने का सही तरीका :

स्टैप १: कुल तय की गई दूरी का योग कीजिए:

८४२+२०००=२८४२ किमी

स्टैप २: लगने वाले कुल समय का योग कीजिए: ७ घंटे ४७ मिनट + ६ घंटे ३४ मिनट

जब भी आपको समय का योग करना हो तथा घंटे तथा मिनट दोनों दिए हों तब समस्या का जल्दी हल निकालने के लिए इन स्टेप्स का अनुसरण कीजिए:

१. घंटे तथा मिनट प्रदर्शक हटाइए तथा संख्याओं को जैसे हैं वैसे ही लिखिए जैसे कि: ७४७ तथा ६३४.

२. दोनों संख्याओं का योग कीजिए :
७४७ +६३४= १३८१

३. इस योग में निश्चित समय ४० को जोड़िए (निश्चित समय हमेशा ४० ही रहता है चाहे हल कुछ भी हो।) : १३८१+४० = १४२१

इसलिए लिया गया कुल समय है: १४ घंटे तथा २१ मि.

स्टैप ३: गति = दूरी/समय

२८४२ किमी/१४ घंटे २१ मिनट

२१ मिनट = २१/६० घंटे या ०.३५ घंटे

२८४२/१४.३५ = १९८ किमी/घंटे

Morning सुबह पूबा Assamese पुवा

यूरेका

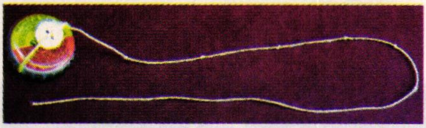

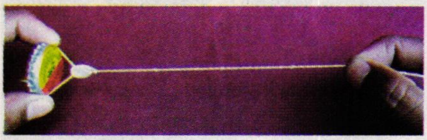

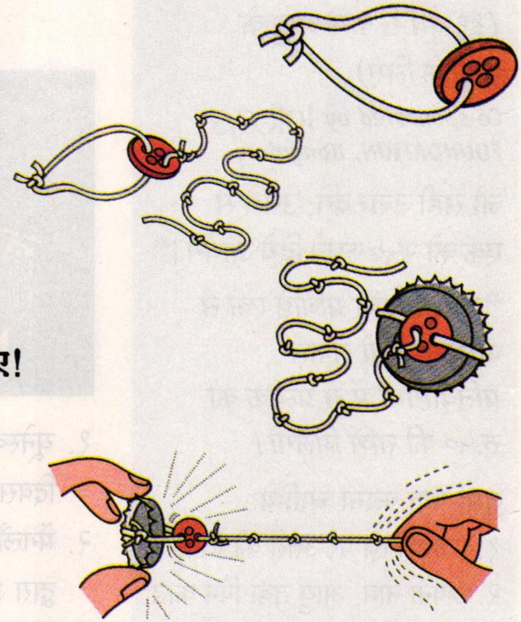

टिक - टिकी

इस विज्ञान के खिलौने को बनाना सीखिए!

आपको क्या चाहिए:

- सोडा वाटर बोतल का ढक्कन
- छोटा रबर बैंड
- कमीज़ का बटन
- ५० सेमी लंबा मोटा धागा

कैसे बनाएँ :

- एक छोटे रबर बैंड को काटिए और कमीज़ के छेद में से पिरोइए। रबर बैंड के दोनों छोरों को एक गाँठ में बाँधिए।
- धागे का टुकडा.लीजिए। इसकी पूरी लंबाई पर एक क्रम से गाँठें बाँधिए। गाँठों के बीच की दूरी २ से ३ सेमी होनी चाहिए।
- धागे का एक सिरा बटन के छेद पर बाँधिए।
- रबर बैंड खींचिए और इसे सोडा वाटर बोतल के ढक्कन पर चढ़ा कर तानिए।
- ढक्कन को अपने बाँए हाथ में पकड़िए। अपने दाँए अँगूठे तथा तर्जनी अंगुली से धागे को धीमे से दबाइए तथा अंगुलियों को धागे की पूरी लंबाई तक खिसकाइए एक क्रम से टिक-टिक होगी।
- बिल्कुल तिलचट्टों की आवाज़ जैसी आवाज़ उत्पन्न होगी!

अवधारणा:

जब प्रत्येक गाँठ पर से अंगुलियाँ नीचे की ओर जाती हैं तो बटन ढक्कन से टकराता है और धातु टकराने की आवाज़ करता है। जब हाथ पूरे धागे से गुज़रता है तो तिलचट्टे की आवाज़ जैसा टकराने की आवाज़ का एक क्रम बन जाता है! *(यह पृष्ठ, खगोल गणना विज्ञान तथा खगोल भौतिकी इंटर-यूनिवर्सिटी सेंटर, पुणे के विजिटिंग साइन्टिस्ट श्री अरविन्द गुप्ता द्वारा लिखा गया है।)*

Morning सुबह പ്രഭാതം Malayalam प्रभातम

चन्दामामा सामान्य ज्ञान पहेली - १३

(१६ वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए)

Co-sponsored by* Infosys *FOUNDATION, Bangalore

जो सही उत्तर देंगे, उनमें से एक को २५० रुपये दिये जायेंगे।*

यदि सर्वशुद्ध प्रविष्टि एक से अधिक हों तो सफल प्रतियोगियों में से प्रत्येक को रु.५० की राशि मिलेगी।

तुम्हें क्या करना चाहिये:

१. एक कागज पर उत्तरों को लिखो।

२. अपना नाम, आयु तथा पिन कोड के साथ घर का पूरा पता लिखो।

३. लिफाफे पर **चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-१३** लिखो।

४. तुम्हारे उत्तर २८ फरवरी तक हमें मिल जाने चाहिये।

५. सही उत्तर अप्रेल २०१० के अंक में प्रकाशित होंगे।

भाषा ज्ञान

१. यूनेस्को द्वारा कौनसा दिन अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस घोषित किया गया है?

२. मेंगलौर, गोआ, मुम्बई तथा केरल प्रान्त के लोगों द्वारा अधिकतर बोली जाने वाली भाषा कौनसी है?

३. कौनसी भाषा बंगाली भाषा की सहोदर भाषा कहलाई जाती है?

४. भारत की सरकारी भाषा कौन सी है?

५. बिहार की तीन सरकारी भाषाओं के नाम बताइए।

६. गुरुमुखी लिपि में कौनसी भाषा लिखी जाती है?

७. कौन सी भाषा अब बोली तो नहीं जाती पर धार्मिक रीति रिवाज़ों में प्रयोग में लाई जाती है?

चन्दामामा को अपनायें!

आप अपने न्यूज़पेपरवाले से चन्दामामा को नियमित रूप से देने के लिए अनुरोध करें। आप इसे आम न्यूज़-स्टैंड या प्रधान बुकशॉप से भी पा सकते हैं। चन्दा के लिए www.chandamama.com लॉग करें।

Morning सुबह **Santali** सेताह

लालची सौदागर

रामपुर गाँव के निकट फलों का एक बगीचा था, जिसमें आनन्द स्वामी नाम के एक संन्यासी कुटी बनाकर रहते थे। उनके अनेक शिष्य थे। उनमें से कुछ तो सच्चे जिज्ञासु थे, पर कुछ आध्यात्मिक चर्चा की अपेक्षा लौकिक बातों मे अधिक अभिरुचि रखते थे। फिर भी आनन्द स्वामी उन्हें और बाहर से आनेवाले आगन्तुकों को सुखमय, शांत और सरल जीवन बिताने का उपदेश देते थे।

आनन्द स्वामी के शिष्यों में एक सौदागर भी था। नाम था शांताराम। वह अव्वल दर्जे का कंजूस और लालची था। उसने हज़ारों रुपये कमाये, फिर भी अगर एक कौड़ी खर्च हो जाती तो वह उसका घाटा पूरा करने के लिए एक समय का खाना बन्द कर देता। उसने अपने जीवन में न किसी मित्र को खाने का निमंत्रण दिया और न किसी धार्मिक कार्य के लिए एक पैसा चन्दा दिया।

शान्ताराम नाम का ही शान्ताराम था। वह सदा अशान्त, चिन्तित और अन्य मनस्क रहा करता था। उसकी स्थिति देख आनन्द स्वामी अक्सर उससे पूछा करते, ङ्गतुम कभी प्रसन्न नहीं दिखते। मैंने तुम्हें कभी हँसते हुए नहीं देखा। क्या बात है?

यह सवाल सुनकर शान्ताराम सौदागर और अधिक चिन्तित होकर जवाब देता, ङ्गङ्ग साधु महाराज, प्रसन्न होने के लिए कोई बात भी तो चाहिए? यह सारा जगत दुष्टों से भरा हुआ है। मै चाहे जितना श्रम करुं, मुझे तदनुरूप फल प्राप्त नहीं होता।

आनन्द स्वामी ने कई बार उसे समझाया, ङ्गङ्गतुम अनावश्यक भयों एवं आशंकाओं के शिकार हो। हमेशा कुढ़ते रहते हो। इस संसार में बहुत से लोग ग़रीब हैं, पर अपनी स्थिति में सन्तुष्ट रहकर अपने दिन गुज़ारते हैं। तुम भी

Morning सुबह प्रातः Sanskrit प्रातः

अपने व्यवहार को बदल सको तो सुखपूर्वक अपनी ज़िन्दगी बसर कर सकते हो।

शान्ताराम सब बातें बड़ी सावधानी से सुनता, लेकिन उसके अन्दर कोई परिवर्तन न हुआ और वह ज्यों का त्यों बना रहता।

कुछ दिन और बीत गये। इस बीच आनन्द स्वामी ने बिस्तर पकड़ लिया। उन्होंने अपने सभी शिष्यों को बुलाकर कहा, ङ्घ अब मेरा अन्तिम समय क़रीब है। मैं चाहता हूं, तुम सब सुखी, स्वस्थ और सन्तुष्ट रहो। तुम लोग भगवान पर पूर्ण श्रद्धा और विश्वास रखना, इससे तुम्हें सुख और शांति प्राप्त होगी।

अगर तुममें से किसी की कोई जिज्ञासा हो, या किसी प्रकार के परामर्श की आवश्यकता हो, तो तुम लोग एक-एक करके मुझसे एकान्त में मिल सकते हो।

अपने गुरु की रुग्णता और अन्त समय की सन्निकटता देख सारे शिष्य एकदम अवसाद में डूब गये।

वे सब अलग-अलग अपने गुरु से मिले और सबने उनसे आशीर्वाद का निवेदन किया।

अन्त में लालची शान्ताराम भी अपने गुरु से मिलने आया। उसने कहा, ङ्घस्वामीजी, आप सबसे पहले मुझे यह वचन दीजिए कि मैं आपसे जो कुछ भी मांगुगा, आप अवश्य मुझे देंगे।फ्फ

आनन्दस्वामी अब सदा के लिए शांति की नींद सोने की आतुरता में थे। वे इस लालची सौदागर को शीघ्र विदा करना चाहते थे। उन्होंने उसके प्रश्न का कोई स्पष्ट समाधान न देकर केवल सिर हिला दिया।

लालची शान्ताराम झट बोला, ङ्घस्वामीजी, आपके सबसे अधिक पुराने और निकटतम शिष्य विलोचन ने मुझे बताया है कि आपके पास शक्तियों का अद्भुत भंडार है।

सुना है आप लोहे को सोना भी बना सकते हैं। आप अपनी यह शक्ति कृपा कर के मुझे प्रदान कीजिए।

सौदागर की यह कामना सुनकर मृत्यु की घड़ियां गिननेवाले संन्यासी को अपार आश्चर्य हुआ। वे बोले, ङ्घअच्छा, तो तुम यह समझते हो कि मेरे पास ऐसी अनोखी शक्तियां हैं! लेकिन, सुनो एक बात याद रखना, अगर तुम्हें ऐसी शक्ति

Afternoon दोपहर மதியம் Tamil मदियम

मिल गयी तो तुम और अधिक चिंता और व्याकुलता के शिकार हो जाओगे। मैं तो चाहुंगा कि तुम अपनी ऐसी कोई इच्छा बताओ, जिससे मैं तुम्हारी सच्ची भलाई कर सकूं।

ङ्घस्वामीजी, मेरी इस इच्छा में तो भलाई ही भलाई है। इस अद्भुत शक्ति को पाने के बाद संसार में मेरे जैसा सुखी व्यक्ति और कोई न होगा। सोने की प्राप्ति अत्यधिक सुख का कारण होती है।फ्फ लालची शान्ताराम ने साहस पूर्वक कहा।

आनन्द स्वामी ने समझ लिया कि इस व्यापारी को नीति का उपदेश देना निष्फल होगा। उन्होंने उसे तत्काल वहां से विदा कर देना चाहा और एक मंत्र बताते हुए कहा, ङ्घतो सुनो, यह मंत्र है। किसी भी प्रकार का लोहा क्यों न हो, तुम उसे छूकर इस मंत्र को जपना, वह सोना बन जायेगा।फ्फ

शान्ताराम अत्यन्त सन्तुष्ट होकर साधु की कुटी से बाहर आ गया।

इसके थोड़ी देर बाद योगी का देहान्त हो गया। अन्य शिष्य तो अवसन्न-से हो गये, लेकिन शान्ताराम कुछ प्रसन्न दिखा। यह देख अन्य शिष्यों ने सोचा कि गुरु महाराज ने इसे भगवान के सान्निध्य में जाने का कोई विशेष मंत्रोपदेश दिया है। हमें तो ऐसा सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ। अवश्य ही गुरुदेव ने इसके अन्दर कोई विशेष पात्रता देखी होगी। तभी तो इस को उपदेश दिया होगा।

एक सप्ताह निकल गया। शान्ताराम सौदागर ने सोचा कि बाज़ार से फूट का लोहा ख़रीद लेना

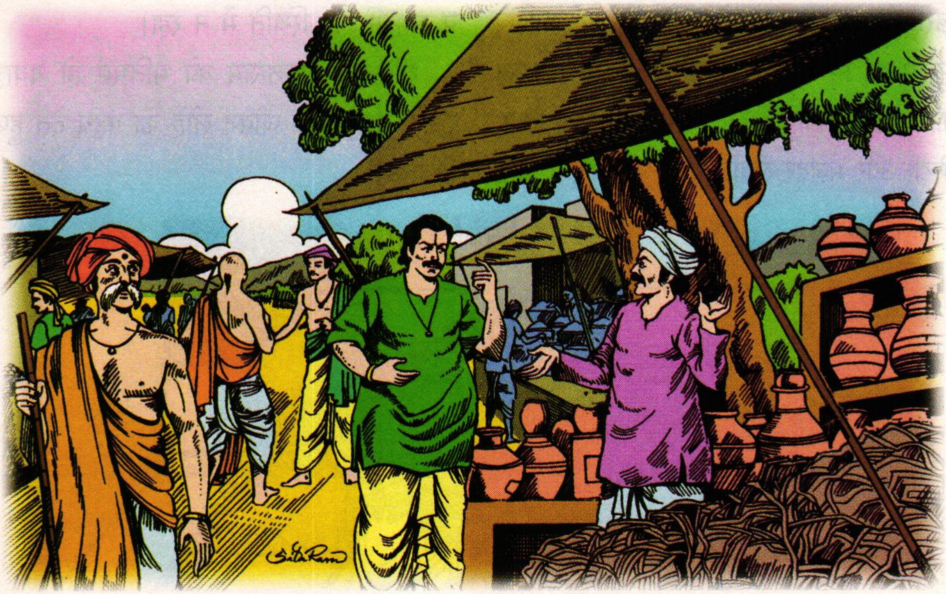

Afternoon दोपहर మధ్యాహ్నం Telugu मध्यानम

चाहिए। उसने एक व्यापारी से फूट के लोहे का दाम पूछा तो उसे कुछ ज्यादा प्रतीत हुआ। उसने लोहे का दाम घटने तक इन्तज़ार करना उचित समझा।

इसके बाद वह हर सप्ताह बाज़ार में जाता और लोहे के दाम का पता लगाता। लेकिन काफ़ी दिनों तक लोहे के दाम में कोई घटाव-बढाव न आया। उसके मन में यह बात आयी भी कि लोहे को तो सोने में बदलना है अगर कुछ महंगा भी मिल जाये तो कोई नुक़सान नहीं। पर, फिर वह यह सोचकर रुक गया कि लोहे के व्यापारी को क्यों नफ़ा दिया जाये?

इस प्रकार दो वर्ष और बीत गये। इस बार अचानक फूट के लोहे के दाम गिर गया। लालची सौदागर ने कई गाड़ियां भर कर फूट का लोहा ख़रीद लिया। यह सारा लोहा सोना बनेगा, इसलिए सुरक्षा का विचार रख उसने घर की मरम्मत का काम आरंभ किया। इस काम में अनेक राज, मिस्त्री और मज़दूर लगाये गये। बालू, चूना, ईंट, लकडी आदि ख़रीदने में शान्ताराम ने बहुत सा पैसा खर्च कर दिया।

जब सब हो गया तब एक रात शान्ताराम सौदागर लोहे के उस अम्बार के बीच बैठ मंत्रोच्चारण की तैयारी करने लगा। उसने अपने दिमाग़ पर बहुत दबाव डाला, उसे वह मंत्र याद नहीं आया। वह निराश होकर सिर पर हाथ मार-मार मंत्र का स्मरण करने लगा, लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। इस सौदागर ने लालच के कारण दो साल निकाल दिय थे। वह लोहे के भाव-ताव में इतना खो गया था कि मंत्र का उसे कोई ख़्याल ही नहीं रहा। यहां तक कि अब तो उस मंत्र की छाया भी उसके दिमाग़ में नहीं थी।

सच बात तो यह है कि धन के लोभ ने उसके दिमाग पर पर्दा डाल दिया था, वह कुछ सोचने व समझने की स्थिति में न रहा।

धीरे-धीरे शान्ताराम को मतिभ्रम हो गया। उसने अपना शेष जीवन लोहे का पहरा देते हुए बिताया।

Afternoon	दोपहर	বিকেল	Bengali	बिकेल

अंधविश्वास

सौ साल पहले की बात है। रामशास्त्री नामक एक गरीब ब्राह्मण के घर चार बेटियाँ पैदा हुईं। चारों बेटियों की शादियाँ करके ससुराल भेजते उसकी नाक में दम हो गया। उसने काफी रुपए कर्ज लिए थे। ऋणदाताओं से तंग आकर एक दिन आधी रात के वक़्त किसी को बताए बिना घर से चल पड़ा।

उस अँधेरे में पैदल चलते गाँव के बाहर एक बरगद के पास पहुँचा। उस पेड़ पर सैकड़ों सालों से एक ब्रह्म राक्षस रहा करता था। यह बात समीप के सभी गाँववाले अच्छी तरह से जानते थे। इस वज़ह से दिन के वक़्त भी उस पेड़ के पास जाने में लोग डरते थे। इसलिए उस पेड़ के समीप से जानेवाले ब्राह्मण को देख ब्रह्म राक्षस आश्चर्य में आ गया और चिल्ला पड़ा - रुक जाओ!

रामशास्त्री पल भर के लिए डर गया, फिर भी वह स्वभाव से समयस्फूर्ति रखनेवाला था। उसने अपनी कन्याओं की शादियों करके सब तरह की मुसीबतें उठाई थीं। वह हिम्मत करके पूछ बैठा - कौन हो तुम?

ब्रह्म राक्षस की आवाज़ सुनते ही रामशास्त्री को डर के मारे बेहोश न होते देख राक्षस को यह बात अपमानजनक महसूस हुई। वह राम शास्त्री के आगे कूद पड़ा और क्रोध में आकर चिल्लाया - क्या तुम्हें मालूम नहीं कि मैं कौन हूँ?

रामशास्त्री ने भोले बनकर पूछा - कौन हो भाई तुम? इस आधी रात के वक़्त अँधेरे में तुम यहाँ पर क्यों आए हो? ये तो बड़ी खतरनाक जगह है। यहाँ पर तो साँप, बिच्छू होंगे! तुम तो

Afternoon दोपहर दुपार Marathi दुपार

डर नहीं लग रहा है।

ये बातें सुनने पर राक्षस को बड़ा आश्चर्य हुआ। रामशास्त्री पुन: बोला - तुम्हारी आँखें बड़ी सुंदर और शांत हैं । तुम चाहे जैसी भी क्रोध भरी नज़र मुझ पर दौडाओ, उस दृष्टि में मेरे बड़े दामाद के क्रोध का सौवाँ हिस्सा भी मुझे नहीं दीखता। तुम्हारा कंठ स्वर कैसा कोमल है! तुम्हारा गर्जन मेरे दामादों की हँसी से ज़्यादा आनंददायक प्रतीत होता है।

ब्रह्म राक्षस सोचने लगा - यह आदमी क्या कह रहा है? क्या मानवों में मुझसे भी भयंकर व्यक्तियों का होना संभव है? क्या इन तीन सौ सालों के बीच मानवों की शक्ति इतनी बढ़ गई है? यों सोच कर अपनी शंका को दूर करने के ख़्याल से रामशास्त्री से पूछा - यह तुम क्या कहते हो ? मेरे अंदर जो ताकत नहीं है, वह ताक़त तुम्हारे दामादों को कैसे प्राप्त हुई?

रामशास्त्री ने राक्षस की ओर सहानुभूति पूर्ण दृष्टि डालकर पूछा - क्या तुम्हारी शादी हो गई है, भाई?

नहीं, लेकिन बताओ कि शादी होने से क्या होता है? ब्रह्म राक्षस ने पूछा।

हे मेरे भोले - भाले दोस्त! क्या तुम नहीं जानते कि शादी के मंत्रों में कैसी ताक़त है? उन मंत्रों के प्रभाव से साधारण मनुष्य दामाद बन कर अपार शक्ति प्राप्त कर सकता हैं। और इस प्रकार दामाद बन जाने के बाद, अब मेरे दामाद

देखने में बड़े नाज़ुक मिजाज के लगते हो। ब्रह्म राक्षस के मन में संदेह पैदा हुआ कि जैसे उसे सभी लोग भयंकर आकृति का मानते हैं, शायद वह वैसा नहीं है । इस पर वह रामशास्त्री की ओर शंका भरी नज़र दौड़ाकर बोला - मेरे सामने यह कपट भरा नाटक क्यो कर रहे हो? मैं ब्रह्म राक्षस हूँ, तीन सौ वर्षों से इसी पेड़ पर रहता हूँ। रामशास्त्री ने राक्षस की ओर अविश्वासपूर्ण दृष्टि दौडाक़र कहा - यह तो बिलकुल नामुमक़िन है। क्या तुम सोचते हो कि मैं ब्रह्म राक्षस को पहचान नहीं सकता? यदि तुम सचमुच ब्रह्म राक्षस होते तो क्या डर के मारे मैं मर न गया होता? तुम्हें देखने पर मुझे अपने दामादों को देखने से जो डर लगता है, उसका चौथा अंश भी

अगर आँखें लाल करके देखते हैं तो मेरी बेटी, मेरी पत्नी और मैं - हम सब पानी-पानी हो जाते हैं। अगर नाराज़ होकर चिल्ला उठते हैं तो क्या कहूँ, हम सब उनके पैरों पर गिर जाते हैं। इसलिए तुम्हारा क्रोध और गर्जन मुझ पर कोई असर डाल नहीं पाए। रामशास्त्री ने राक्षस को समझाया।

इस पर ब्रह्म राक्षस ने सोचा, अगर इस ब्राह्मण की यह बात सच हो और शादी के होते ही मानवों को ऐसी ताक़त मिल जाती हो तब तो मुझे भी शादी करनी होगी। क्योंकि सभी मनुष्य शादी करते हैं और अपनी ताकत बढ़ाते हैं। इस प्रकार तो सभी मानव मुझसे अधिक ताकतवर हो जाएंगे। यदि मेरी भी शादी हो जाए तो मेरा भी बल बढ़ जाएगा। यदि केवल मानवों की शादी होती रही तो धीरे-धीरे मुझे देख कर डरने वाला कोई नहीं रहेगा। इसलिए मुझे भी अपनी ताक़त बढानी होगी।

रामशास्त्री ने ब्रह्म राक्षस के चेहरे को परख कर देखा, उसके मन की चिंता को भाँप कर बोला- भाई, तुम भी आखिर कितने दिन तक ब्रह्मचारी बनकर रह सकते हो? शादी करके सब पर अपना अधिकार चलाओ। यों सलाह देकर ब्राह्मण वहाँ से निकलने को हुआ।

ब्रह्म राक्षस को ब्राह्मण की सलाह बड़ी अच्छी लगी। उसने रामशास्त्री को वापस बुलाकर पूछा- सुनिए तो, मुझसे शादी कौन करेगा? आप ही

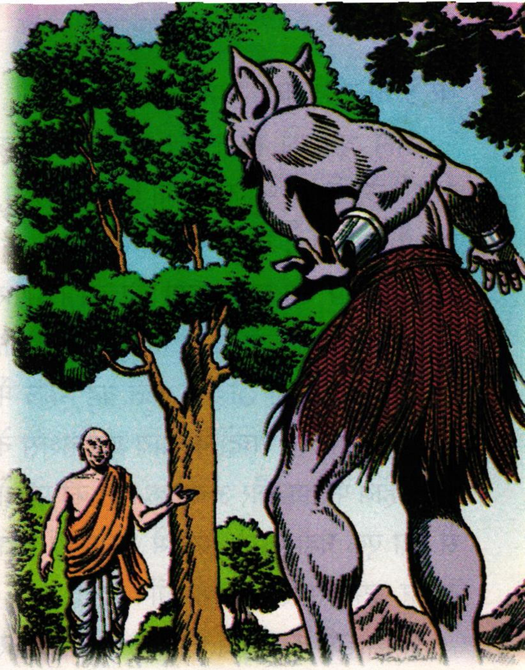

किसी कन्या को मेरे लिए तय कर लीजिएगा।

इस वक़्त तो हमारी मानव जाति में भी तुम्हें मात करने वाले कई आदमी हैं। कोई भी मनुष्य अपनी कन्या को बडे. घर में ब्याहना चाहेगा, लेकिन तुम जैसे भोले और गरीब के साथ शादी कराने को कौन तैयार होगा? रामशास्त्री ने समझाया। राक्षस के मन में शादी करने और अपनी ताक़त बढ़ाने की इच्छा तीव्र हो उठी। और कोई तरकीब न सूझने से वह अब नरम पड़कर रामशास्त्री से गिड़गिड़ाने लगा।

बड़ी देर तक अपनी ऐंठ जताकर रामशास्त्री बोला - सुनो भाई, यह काम आसान थोड़े ही है। इसके पीछे बहुत सारा धन खर्च होगा। अगर तुम यह कहोगे कि यह बरगद का पेड़ ही तुम्हारा

Afternoon दोपहर ଅପରାହ୍ନ Oriya अपरान्हा

घर है तो कौन तुम्हें अपनी लड़की देगा?

आप धन की फिक्र मत कीजिएगा। एक अच्छी लड़की को खोजने में जो कुछ खर्च होगा, वह मैं आपको दे दूँगा।

बस आप मेरा इतना काम कर दीजिए फिर मैं आप को बहुत बड़ा इनाम भी दूँगा। शादी के बाद इस बरगद को छोड़ मैं बहुत बड़े महल में चला जाऊँगा। इन शब्दों के साथ ब्रह्म राक्षस ने अपने हाथ फैलाए और अचानक सोने की मोहरों से भरा एक घड़ा उसके हाथ में आ गया। घड़ा लाकर उसने रामशास्त्री को सौंप दिया।

रामशास्त्री ने स्वीकृति सूचक सर हिलाकर कहा - ठीक है, मैं तुम्हारा काम करूँगा। लेकिन एक शर्त है। जब तक मैं तुम्हारे वास्ते कन्या ठीक न करूँगा, तब तक तुम किसी मानव की आँखों में मत पड़ो। अगर यह मालूम हो जाएगा कि दूल्हे का निवास बरगद के पेड़ पर है, तो जो रिश्ते कायम होंगे।

वे भी टूट जाएँगे। अलावा इसके तुम्हें देखने वाले लोग यह प्रचार करें कि तुम कमज़ोर हो, तो कोई अपनी लड़की देने आगे नहीं आएगा। वे लोग यही कहेंगे कि जब मनुष्यों के भीतर बड़े-बड़े धनी और ताक़तवर हैं, ऐसी हालत में उनकी कन्या को एक कमज़ोर राक्षस के गले मढ़ना उनकी इज्जत के लिए कलंक की बात है।

इस पर ब्रह्म राक्षस को रामशास्त्री की बात उचित मालूम हुई। उसने रामशास्त्री को वचन दिया कि अपनी शादी के पूरा होने तक वह किसी मानव को दिखाई नहीं देगा। इसके बाद किसी मानव ने ब्रह्म राक्षस को उस पेड़ पर नहीं देखा। आज अगर कोई बूढ़ा आदमी युवकों से बात करे कि किसी ज़माने में एक ब्रह्म राक्षस निवास करता था, तो युवक यही जवाब देते हैं - आप लोगों के ये सब अंधविश्वास हैं।

रामशास्त्री ब्रह्म राक्षस से प्राप्त सोने की मोहरें लेकर घर लौटा। अपने सारे कर्ज़े चुकाए। दामादों की माँगों की पूर्ति की। बचे हुए धन के साथ मज़े से अपने दिन काटने लगा।

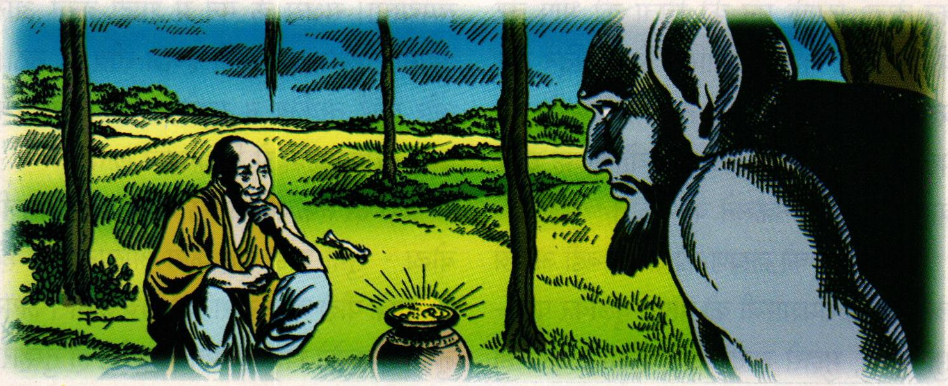

Afternoon दोपहर બપોર Gujarati बपोर

राज गामक

सिरिपुर के राजा एक दिन उपवन में टहल रे थे कि उनके कानों में किसी के संगीत की मधुर कँठ-ध्वनि पड़ी। उनके मन में विचार आया कि उनके दरबार में कवि और पंडितों के साथ एक गायक भी हो तो कितना अच्छा हो! उन्होंने मंत्रि के सामने अपना प्रस्ताव रखा और गायक का चुनाव करने के लिए एक संगीत-स्पर्धा चलाने का आदेश दिया।

महाराज, आपका विचार प्रशंसनीय है। लेकिन इस स्पर्धा के निर्णायकगण कौन होंगे? मंत्रि ने पूछा।

और लोग क्मों? मैं, रानी तथा आप हम तीनों निर्णामक होंगे। हम तीनों ही संगीत के प्रेमी हैं। इसलिए निर्णम बाहर के विद्वान नहीं करेंगे, हम स्वमं करेंगे। राजा ने कहा।

राजा संगीत के प्रेमी अवश्य थे, पर संगीत शास्त्र सम्बन्धी उनका ज्ञान बहुत साधारण था। रानी को शास्त्रीय संगीत का अच्छा ज्ञान था। मंत्रि बीच की स्थिति में था।

राजा के आदेशानुसार मंत्री ने सिरिपुर प्रदेश के संगीतज्ञों को तथा संपूर्ण साधारण सभी को भी आमंत्रित किया। एक अत्यंत विशाल मंडप में संगीत-प्रतियोगिता आरंभ हुई।

प्रतिमोगिताएँ तीन दिन चलीं। गामकों के मन में अत्मन्त प्रतिष्ठा-प्राप्त राज गामक का पद पाने की आकांक्षा थी, इसलिए उन्होंने अपनी सम्पूर्ण प्रतिभा का प्रदर्शन किमा।

प्रतिमोगी गामकों में से राजा ने मुरलीनाथ नाम के गामक को चुन लिमा। महारानी ने वेणुनाथ का तथा मंत्री ने सुसंगीतनाम के गामक का चुनाव किमा।

राजा ने अपने चुनाव के समर्थन में कहा, मुरलीनाथ का संगीत सर्वश्रेष्ठ था। उनका संगीत सुनकर मैं अपने को भूल गया। तुम दोनों ने जिन्हें

Afternoon दोपहर बियलि Assamese पियोली

चुना है, वे इतना अच्छा नहीं गा सके।

रानी ने अपने निर्णम का समर्थन करते हुए कहा, मुरलीनाथ और सुसंगीत दोनों ने ही बहुत अच्छा गामन प्रस्तुत किमा है। पर इनके पास संगीत शास्त्र के गहरे ज्ञान का अभाव है। पूर्ण शास्त्रीम ज्ञान के बिना सच्चे अर्थों में कोई भी संगीत का अधिकारी विद्वान नहीं कहला सकता। इसीलिए मैंने संगीत शास्त्र के ज्ञाता वेणुनाथ का चुनाव किमा है।

इसके बाद राजा ने मंत्रि से पूछा, मंत्रिवर, आपने सुसंगीत का चुनाव किस आधार पर किया है?

महाराज, सुसंगीत में शास्त्रीय ज्ञान भी है और सुमधुर स्वर में गाने की क्षमता भी। राजगायक होने लायक़ तो वही व्यक्ति है जो पंडित और पामर, विज्ञ और साधारण जनों का समान रूप से मनोरंजन कर सके।

अनेक गायकों ने यहाँ अपना प्रदर्शन किया, लेकिन यह सामर्थ्य मुझे सुसंगीत में ही दिखाई दिया। यह केवल मेरा ही मत नहीं है, बल्कि सभी पंडित एवं साधारण नागरिक भी मेरे इस विचार से सहमत हैं।

आपने उनके विचारों का संग्रह कब किमा? कैसे किमा?

तीनों संगीतज्ञों ने जब राजसभा में अपना कार्यक्रम प्रस्तुत किया, तब आपने सभासदों और श्रोताओं की प्रतिक्रियाओं का अवलोकन किया था क्या? मंत्रि ने विनीत स्वर में पूछा।

मुरलीनाथ के संगीत में मेरा मन रम गया था, इसलिए मैंने सभा-समुदाय की तरफ़ तो देखा

तक नहीं। राजा ने कहा।

मैं वेणुनाथ का संगीत सुनते हुए उनके संगीत-शास्त्र सम्बन्धी ज्ञान पर मुग्ध हो गई थी, इसलिए महाराज के सदृश ही मैंने भी सभा की प्रतिक्रिया पर कोई ध्यान नहीं दिया। रानी ने अपने मन की बात कही।

महाराज एवं महारानी, हम राजगायक के रूप में जिस संगीतज्ञ का चुनाव करते हैं, उसके लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि वह न केवल हम तीन, बल्कि राज्य भर के पंडित एवं साधारण नागरिक जनों को समान रूप से अपनी विद्या द्वारा संतुष्ट करे।

मैं समझता हूँ कि आप मेरे इस विचार से सहमत होंगे। मंत्री ने कहा।

हाँ, निश्चम ही, ऐसा ही होना चाहिए। राजा एवं रानी ने कहा।

अब मैं इस बात का विवरण देना चाहूँगा कि इन तीनों संगीतज्ञों के गीत-कार्यक्रम के समय आम जनता एवं दरबारियों की प्रतिक्रियाएँ कैसी थीं।

मुरलीनाथ ने जिस समय अपना गायन प्रस्तुत किया तो एक-एक कर सारे ही पंडित सभागार से बाहर चले गए, पर आम लोग हर्षातिरेक के कारण सिर हिलाते हुए अंत तक बैठे रहे। वेणुनाथ के गायन के समय साधारण जनता दल बाँध कर चली गई, पर पंडित समाज अन्त तक बड़े प्रशंसा भाव से बैठा रहा।

अब सुसंगीत का प्रभाव सुनिये। सुसंगीत के गाते समय पंडितों और साधारण जनों से एक साथ साधुवाद किया और सभी अपनी जगह से हिले बिना मंत्र-मुग्ध से अन्त तक अपनी जगह पर बैठे रहे और ध्यान से सुनते रहे! इसी कारण से मैंने सुसंगीत को राजगायक होने के योग्य समझा और उसका चुनाव किया। मंत्री ने स्पष्ट किया।

राजा और रानी दोनों को ही मंत्री के विचार से सहमत होना पड़ा और उन्होंने सुसंगीत को राजगायक के पद पर नियुक्त कर दिया।

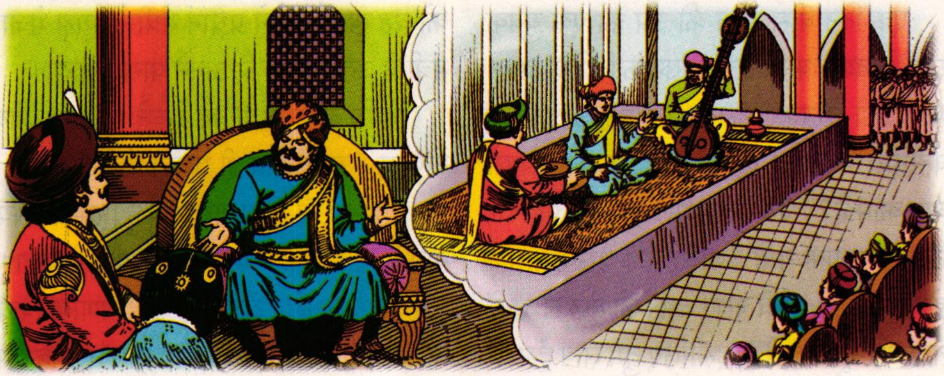

Afternoon	दोपहर	ᱛᱟᱨᱟᱥᱤᱧ	Santali	तारासिजं

साहसी युवक

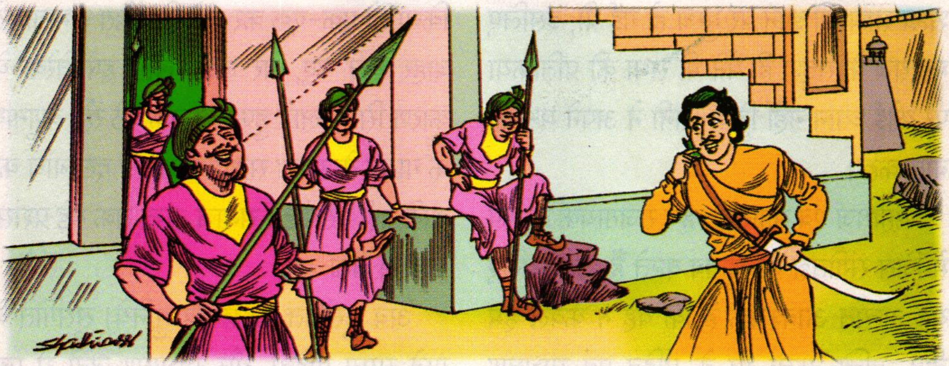

राजा विजयेंद्र, सिंधु नदी प्रांत के महेंद्रपुरी नामक राज्य का शासक था। उस समय, उत्तरी प्रांत के पर्वतारण्यों से हूण नामक असभ्य जातियाँ महेंद्रपुरी पर आक्रमण करती रहती थीं।

विजयेंद्रवर्मा ऐसे युवकों को ही अपनी सेना में भर्ती करते थे, जो पराक्रमी व साहसी ही नहीं, बल्कि राज्य की रक्षा के लिए अपनी जान भी निछावर करने को सन्नद्ध हों परंतु भर्ती करने के पहले उनके प्रधान मंत्री उन युवकों के पराक्रम और साहस की परीक्षा लेते थे।

एक दिन बीस साल की उम्र का एक युवक राजा के दर्शन करने आया। उसके विचित्र हाव-भावों को देखकर उसका मज़ाक उड़ाते हुए पहरेदारों ने उससे पूछा, ''महाराज से तुम्हारा क्या काम है?'' वह युवक भांप गया कि पहरेदार उसका मज़ाक क्यों उड़ा रहे हैं। उसने नाराज़ होते हुए कहा, ''मेरी बायीं तरफ़ की मूंछ से दायीं तरफ़ की मूंछ छोटी है, इसीलिए तुम लोग हँस रहे हो न? इसके पीछे बड़ी ही साहसपूर्ण कहानी है।'' इस पर पहरेदारों ने ठठाकर हँसते हुए कहा, ''कहो तो सही, वह कहानी क्या है?''

युवक ने कमर में लटकती हुई तलवार की मूठ पर हाथ रखते हुए कहा, ''हर ऐरे-ग़ैरे को यह कहानी सुनायी नहीं जा सकती। इसे सुनने के योग्य केवल महाराज या प्रधानमंत्री हैं। मुझे आगे जाने दोगे या नहीं,'' कहते हुए उसने म्यान से तलवार निकाली।

पहरेदार स्तब्ध रह गये। उन्होंने एक पहरेदार को यह खबर सुनाने प्रधान मंत्री के पास भेजा। मंत्री ने उस युवक को अपने पास बुलाया।

निर्भय होकर मंत्री को देखते हुए उस युवक ने पूछा, ''क्या आप ही प्रधान मंत्री हैं?''

''हाँ, हाँ, मैं ही प्रधान मंत्री हूँ। तुम्हारा क्या नाम है? किस काम पर आये?'' मंत्री ने पूछा।

युवक ने सिर झुकाकर उन्हें प्रणाम किया और कहा, ''महामंत्री जी, मेरा नाम नरसिंह वर्मा

Afternoon | दोपहर | मध्याह्नः | Sanskrit | मध्यान्हः

है। मालूम हुआ है कि महाराज ऐसे पराक्रमी और साहसी युवकों को अपनी सेना में भर्ती कर रहे हैं, जो हमारे राज्य पर हमला करनेवाले हूणों का सामना कर सकें और उनके छक्के छुडा सकें। इसी काम पर यहाँ आया हूँ।''

''इसका यह मतलब हुआ कि योद्धा बनकर हूणों से युद्ध करने का इरादा लेकर आये हो। परंतु तुम्हारी मूंछ को देखते हुए कोई भी दुश्मन तुम पर बार करने से हिचकेगा, संकोच करेगा।'' मंद मुस्कान भरते हुए प्रधान मंत्री ने कहा।

''महामंत्रीजी, मेरी मूंछ ऐसी क्यों है, इसके पीछे लंबी कहानी है,'' नरसिंहवर्मा ने कहा। मंत्री ने कहा, ''वह कहानी ज़रा संक्षेप में बताना।''

नरसिंहवर्मा ने अपना गला साफ़ करते हुए कहा ''मैं देशभक्त हूँ। मेरी नस-नस में देशभक्ति कूटकूटकर भरी हुई है। मैंने जान की बाजी लगायी और हूणों के सरदार के शिबिर में घुस गया।

वह बाघ के चर्म के आसन पर भल्लूक चर्म ओढ़कर बैठा हुआ था। उसके चारों ओर बाज और तलवार लिये सैनिक खड़े थे। वे मुझसे पूछें कि तुम कौन हो, उसके पहले ही मैंने हूणों के सरदार से कहा, ''जो भी तुम्हें देखेगा, उसे शंका होगी कि तुम कुत्ते हो या सियार हो। हमारे राज्य पर हमला करने का तुम्हारा इतना साहस ! तुम्हें...'' मैं अपनी बात पूरी करूँ, इसके पहले ही उसने सैनिकों को मुझे मार डालने की आज्ञा दी। एक सैनिक ने फ़ौरन मेरे गले को अपना निशाना बनाते हुए तलवार फेंकी। निशाना चूक गया और मेरे दायीं ओर की मूँछ उस तलवार से आधी कट गयी। दूसरे ही क्षण तेज़ी से मैं वहाँ से भाग निकला। मुझे पकड़ने की उनकी कोशिश नाकाम हुई।'' ''वाह, वाह, यह सब कुछ कब हुआ?'' मंत्री ने पूछा। ''यह बहुत पहले की घटना नहीं, पंद्रह मिनटों के पहले ही घटी है।'' नरसिंहवर्मा ने बिना सकपकाये कह डाला।

प्रधानमंत्री ठठाकर हँसा और बोला, ''अब राजा को चाहिये, एक विदूषक, आस्थान विदूषक। मेरे साथ आओ और राजा से मिलो।'' यों कहते हुए प्रधान मंत्री उसे अपने साथ ले गये।

- धर्माधिकारी

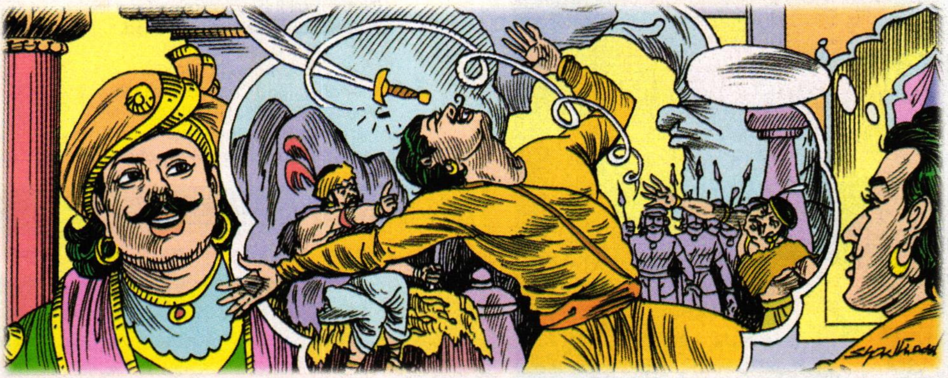

Evening	शाम	மாலை	Tamil	मालै

Avail the loyalty bonus!

Chandamama Subscribers will get flat 10% off on subscription renewals! (All Editions)

Chandamama!

Because stories make the world go round...

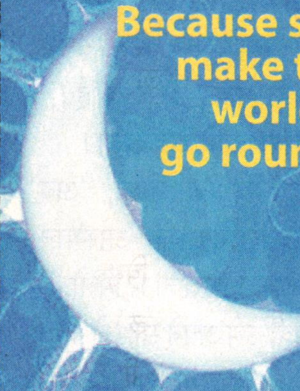

Choose your Chandamama!

Go to www.chandamama.com & subscribe Now!!

Chandamama is available in English and 12 regional languages. Junior Chandamama for children below 9 years is available only in English.

I want to subscribe to / gift / renew subscription for the following editions of Chandamama:

☐ English ☐ Telugu ☐ Tamil ☐ Kannada ☐ Hindi
☐ Marathi ☐ Gujarati ☐ Oriya ☐ Bengali ☐ Sanskrit
☐ Santali ☐ Malayalam ☐ Assamese ☐ Junior

Name: ....

Date of Birth: .... Sex :..............................

Address: ....

....

....

.... City: ....

State:.............................. Pin:..............................

Telephone:..

Mobile:..

Email:..

Subscription Number 9for renewals):..............................

Gift Subscription to the following address:

....

....

....

....

Enclosed Cheque/DD* for Rupees..............................

Cheque/DD No ....

favouring Chandamama India Ltd on..............................

....bank.

Please mail the subscription form to:
Chandamama India Limited,
B-3, Lunic Industries,
Cross Road 'B',MIDC,
Andheri (East), Mumbai-400093
Phone +91 22 28312872 / 28311849
Email: subscription@chandamama.com
You can also subscribe online at: www.chandamama.com

Take Your Pick!	1 YEAR	2 YEARS	3 YEARS	4 YEARS	5 YEARS
ENGLISH (Rs. 25/- per copy)	Rs. 300	Rs. 540	Rs. 765	Rs. 960	Rs. 1125
You Save		Rs. 60	Rs. 135	Rs. 240	Rs. 375
REGIONAL (Rs. 20/- per copy)	Rs. 240	Rs. 430	Rs. 610	Rs. 770	Rs. 900
You Save		Rs. 50	Rs. 110	Rs. 190	Rs. 300
JUNIOR (Rs. 15/- per copy)	Rs. 180	Rs. 325	Rs. 460	Rs. 575	Rs. 675
You Save		Rs. 35	Rs. 80	Rs. 145	Rs. 225

Annual Subscription Overseas : US $40 for English Chandamama, US $30 for Regional Languages, US $25 for Junior Chandamama (including shipping and handling charges) by air mail.

कछुओं के लिए एक मंदिर

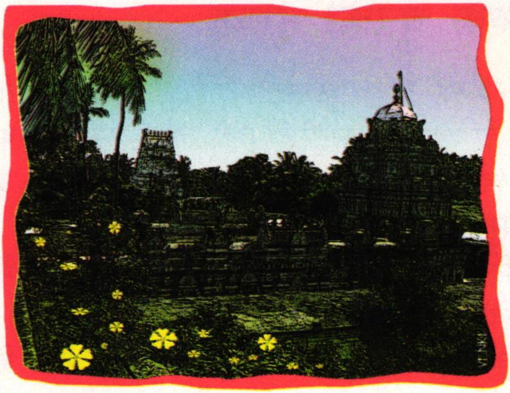

भगवान विष्णु के दूसरे अवतार, कूर्म को समर्पित कूर्ममंथ स्वामी मंदिर उत्तरी आन्ध्रप्रदेश के श्रीकाकुलम शहर के पास स्थित है। संपूर्ण भारत में भगवान विष्णु के कूर्मावतार का यह एक मात्र मंदिर बहुत ही पवित्र माना जाता है।

गर्भगृह के पवित्र स्थान में एक बहुत ही बड़ा कछुआ है। देवमूर्ति एक विशालकाय कछुए का कंकाल है जो देवस्थान के पास से ही आया होगा। यह मंदिर उड़िया मंदिर स्थापत्यकला के आधार पर निर्मित है।

जुड़वों का गाँव

कोडिन्जी गाँव केरल जुड़वों के २०४ जोडों.से अधिक का घर है। डॉक्टर किंकर्तव्य-विमूढ़ हैं कि २००० परिवारों वाले इस समुदाय में इतने अधिक जुड़वों का जन्म क्यों हुआ। न केवल कोडिन्जी में बल्कि यहाँ से दूर ब्याही गयीं कोडिन्जी स्त्रियाँ भी जुड़वें बच्चों को जन्म देने के लिए जानी गयी हैं।

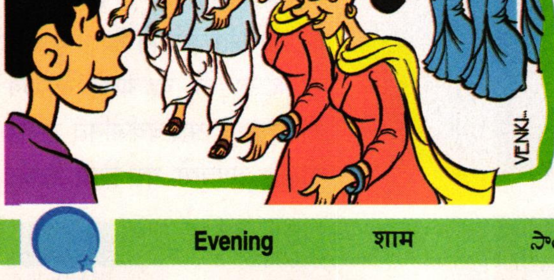

वहाँ का विश्वास है कि यह सब पानी के कारण है कोडिन्जी मैदानों में भरे पानी से घिरा हुआ है तथा मानसून के दौरान भारी वर्षा से भरे पानी की कोई निकासी नहीं है। जबकि इस विश्वास का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है।

Evening शाम సాయంత్రం Telugu सायन्त्रम

एक चुटकी नमक

२० मई, १९३०, बुलसर, बंबई प्रेसीडेन्सी लेकिन मेरा वहाँ होना ज़रूरी है! लंबा, तांबई अमरीकी तकरीबन गिड़गिडाया।

मुझे विश्वास है कि तुम्हें अच्छी तरह समझा दिया गया है कि तुम यह नहीं कर सकते। ब्रिटिश पुलिस अधिकारी के शब्द तीखे.व नपे तुले थे। वह रेल अधिकारी की मेज़ के पीछे की ओर पसरा हुआ, अमरीकी की परेशानी का मज़ा ले रहा था। पर मेरा वहाँ होना ज़रूरी है, भाई! मैं पत्रकार हूँ - और संसार ने इस तरह का कभी कुछ नहीं देखा -

यह केवल एक जानवरों का करतब है, सुना तुमने? ब्रिटिश आदमी की आवाज़ अचानक तेज़ हो गई। उनकी सुरक्षा के लिए बनाए हरेक कानून तोड़ते मुट्ठी भर लोग। मैं केवल इसे अवमानना मानता हूँ।

यह फैसला तो संसार को करना चाहिए और मैं उन्हें यह दिखाना चाहता हूँ।

मैं नहीं सोचता, मेरे दोस्त। एक बार कह दिया न, तुम्हारे लिए अच्छा होगा कि तुम उसमें अपनी नाक मत घुसाओ जिससे तुम्हारा कोई सरोकार नहीं है। पुलिसवाले ने मुड़ने से पहले उसे कारावास के कमरे की ओर इशारा करते हुए तकरीबन घृणा से देखा।

ठीक है। कम से कम मुझे बंबई तो वापस जाने दो। मैं अपने रहने के लिए जगह देख लूँगा।

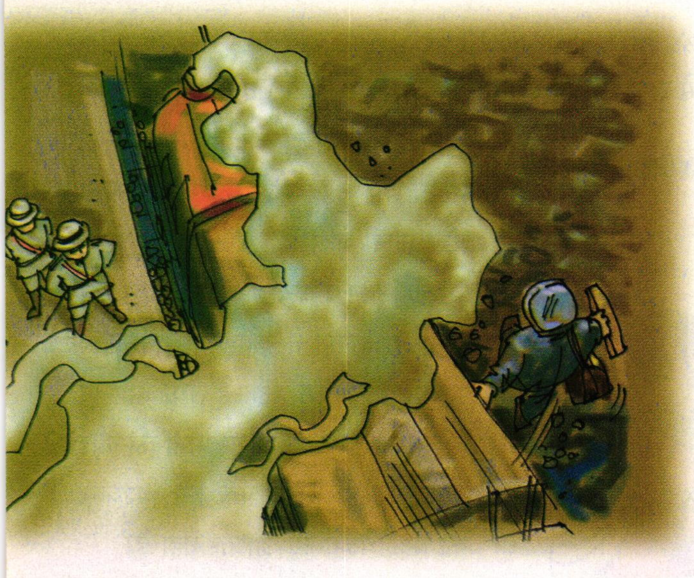

निश्चित रूप से - रेल इंतज़ार कर रही है। सच तो यह है कि मैं व्यक्तिगत रूप से तुम्हें विदा करूँगा।

जब अधिकारी खींसे निपोरते हुए कूद़ा, पत्रकार ने मुट्ठियाँ भींच लीं। ट्रेन ने भाप के बादल छोड़ने शुरू कर दिए। भारतीय गाँववाले बातचीत करते हुए ट्रेन में चढ़ कर बैठ गए और जैसे ही ट्रेन ने बुलसर की हद पार की, वह बाहर निकलने को दौडा.व आश्चर्यजनित डर से चीखते यात्रियों पर बिना ध्यान

दिए, लड़खड़ाते हुए कूद गया।

ढिंगरी! वह हाँफते हुए पटरियों पर खडे. आदमी से बोला। ढिंगरी टक कोई ट्रेन जाटा है? उसने टूटी - फूटी हिन्दी में पूछा। आदमी ने सर हिलाया।

कृपया! मुझे वहाँ जाना है! आदमी ने एक टूटी-फूटी मालवाहक ट्रेन की ओर इशारा किया जो सामान लादे हुए एकांत में खडी.थी। अमरीकी ने उसे घूरा फिर अपना इरादा बनाते हुए दिखाई दिया और तेज़ी से एक गंदे से अंधेरे डिब्बे में घुस गया। वैब मिलर पर किसी ने कभी बहुत उत्साही होने के लिए आरोप नहीं लगाया।

***

ढिंगरी पहुँचने के चुनाव का निर्णय पूरी तरह तर्क संगत था - यह धारणा के सबसे नज़दीकी स्टेशन था। एक विशेष कारण हेतु वहाँ तक पहुँचने के लिए उसने अपने दिमाग की हरेक नस को दौड़ा दिया था।

कच्ची उम्र का होने के बावजूद वैब मिलर को कभी यह शक नहीं हुआ कि उसे अपने जीवन में क्या करना है। वह पूरे संसार भर में घूमना चाहता था। वह दूर-दराज़ जगहों में होने वाली हरेक महत्त्वपूर्ण घटना के बारे में लिखना चाहता था - और वह भी इस तरह कि जो उसने देखा वह पूरे संसार को दिखा सके और जो उसने सुना वह सुना सके।

और अब वह भारत में था, वे गतिविधियाँ देखने जिसे भारतीय सत्याग्रह कहते हैं। वह इसे पहली बार तो उच्चारित ही नहीं कर पाया था। एम के गांधी नामक आदमी सबसे पहले इस विचार के साथ सामने आया और यह सर्वप्रथम इतना अजीब अद्‌भुत विचार लगा कि हरेक इस पर ज़ोर से हँसा।

मिलर अब तक निश्चित नहीं था कि अहिंसा या नमक कानून के विरुद्ध जाना सरकार के विरोध में सबसे अच्छा हथियार कैसे हो सकता था। अपने ठीक-ठाक दिमाग के साथ कौन हवाई बात करना चाहेगा जब कि उसे मालूम है कि उस पर आसानी से वापस हमला किया जा सकता है? यह हर मानव की स्वाभाविक प्रतिक्रिया है।

लेकिन तब - अगर यह वास्तव में एक बेवकूफ़ी भरा विचार था तो इतने भारतीयों ने इसे क्यों स्वीकार किया। भारतीय नेताओं ने सार्वजनिक रूप से इसकी अधिकृत घोषणा क्यों की? और इन सबसे ऊपर - धरती पर यह गांधी कौन है?

***

मिलर का एक मुश्किल दौर से गुज़र रहा था

जिसे वह दूर भागने की कोशिश भी नहीं कर रहा था। वह ढिंगरी से धरषाणा पूरे ६ मील तक पैदल चला और बहुत टूटा हुआ महसूस कर रहा था - जब तक कि गांधी के बन्दी बना लिए जाने के बाद, कवयित्री व नेता, सरोजिनी नायडू धरषाणा नहीं पहुँच गयीं।

पूरे गुजरात से २५०० से भी अधिक स्वयंसेवी कार्यकर्ता शान्तिमार्च के लिए आ चुके थे। साथ ही नमक निर्माणस्थलों पर छापे मारे जा रहे थे। गांधी वहाँ नहीं थे - लेकिन वास्तव में वह थे। उनकी आत्मा धरषाणा की हवा में हर कण में व्याप्त थी। मिलर को आज भी मार्च से पहले सरोजिनी नायडू का प्रेरक भाषण याद है:

गांधी जी का शरीर जेल में है लेकिन उनकी आत्मा आप के साथ है, उन्होंने समूह से कहा। भारत का सम्मान तुम्हारे हाथों में है; तुम्हें किसी भी परिस्थिति में कोई भी हिंसा का रास्ता नहीं अपनाना है। तुम पीटे जाओगे, परंतु आपको प्रतिकार नहीं करना है; तुम्हें मार के आगे अपना एक हाथ तक नहीं उठाना है।

बहुत ही तेज़ आवाज़ों ने उनके भाषण का साथ दिया। धीरे से, शांति से जन समुदाय नमक की ढेरियों की ओर आधा मील आगे बढ़ गया। कुछ के हाथों में नमक ढेरियों के चारों ओर बाँधे गए काँटेदार तारों को फंदे द्वारा खींच कर हटाने के लिए रस्सियाँ थीं। गांधीजी का दूसरा बेटा, मणिलाल, मार्च करने वालों में सबसे आगे था। वे बार-बार ज़ोरों से चिल्ला रहे थे इंकलाब जिंद्राबाद!। मिलर की पूरी त्वचा के रोंगटे खड़े हो गए।

पुलिस कर्मी हाथों में लोहे की मूठ वाली पाँच फुट लंबी लाठियाँ लिए हुए नमक की ढेरियों की सुरक्षा में लगे थे। पच्चीस बंदूकधारी हथियारों से लैस गोली दागने के इंतज़ार में थे।

गांधी के आदमी आगे बढे. और सौ गज दूरी पर लगे अवरोध पर रुके। आगे की पंक्ति के लोग आगे बढे.और बाढ़ के पास आए, जहाँ सूरत की पुलिस लाठियों के साथ खडी.थी। जब चेतावनी की गोली दागने के बावजूद भीड़ ने आगे बढ़ना जारी रखा तो कइयों की संख्या में पुलिस अधिकारी मार्च करने वालों की ओर लपके और उनके सिरों पर लाठियाँ बरसानी शुरू कर दीं। किसी ने भी आत्म रक्षा में अपना एक

Evening शाम ಸಾಯಂಕಾಲ Kannada सायंकाल

हाथ भी ऊपर नहीं उठाया।

एक एक करके बेहोश होकर गिरने लगे या दर्द से कराहने लगे। ज़मीन शरीरों से ढक गई; उनके सफेद कपडे. खून से लथपथ हो गए। शान्ति से प्रतीक्षा करते एक आदमियों के समूह ने गिरे हुए लोगों को उठा लिया जब तक दूसरी पंक्ति के लोगों ने उनका स्थान ले लिया।

दोबारा - और दोबारा - और दोबारा। प्रदर्शन करने वाले समूह में आगे बढ़ते रहे लाठियों के नीचे गिरते रहे और उठाए जाते रहे, खून बहाते हुए, अधमरे। विरोध प्रदर्शन में एक आवाज़ नहीं उठी; यहाँ तक कि दर्द की कराहें तक हवा में प्रतिध्वनित होती रहीं।

मिलर हिल गया।

मैंने आत्मानुशासन या आत्मबलिदान की ऐसी अनोखी भावना कहीं नहीं देखी, उसने अपने समाचारपत्र को अपने विवरण में लिखा।

गांधी की आत्मा इन प्रदर्शनकारियों में समा चुकी है; उन्होंने अपने विचारों को उनके मस्तिष्कों में रमा दिया है।

अपने दतर को बता चुकने के बाद वह बहुत ही दुखी हुआ और बंबई के डाक घर से बाहर आ गया। उसने एक बूढ़े आदमी को पैसा दिया जो एक कवर पर डाक टिकट चिपका रहा था। बूढ़ा आदमी बदले में मुस्कुराया। धन्यवाद, श्रीमान्।

ज़रा ध्यान दीजिए, मिलर ने कहा। यह उस आत्मा के समक्ष कुछ भी नहीं है जो तुमने दिखाई है।

आह - तुम अहिंसात्मक आन्दोलन की बात कर रहे हो।

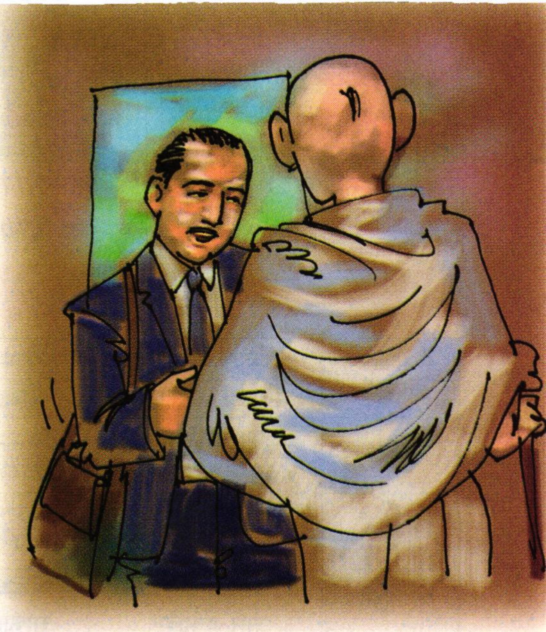

यहाँ तक कि पुलिस भी अपने व्यवहार पर शर्मिंदा है! मैं नहीं समझता मैंने इससे पहले खून खराबा रोकने का इससे अधिक प्रभावशाली तरीका अपनी जिंदगी में कभी देखा है। मिलर रुका। मुझे केवल एक दुख: रहेगा कि मैं श्री गांधी से रूबरू नहीं मिल सका।

बूढ़ा आदमी मुस्कुराया। तुम्हें संसार को बताना चाहिए कि तुमने क्या देखा, मिस्टर मिलर। लोगों को मालूम होना चाहिए कि दमन के विरुद्ध अहिंसा एकमात्र सच्चाई है। तुम्हें हमारी तरह ही लोगों में आशा का संचार करना चाहिए।

मिलर मुस्कुराया। मैं ऐसा ही करना चाहता हूँ और मैं आप जैसे और लोगों से भी बात करना चाहता हूँ - लेकिन मुझे आपका नाम नहीं मालूम, श्री ....?

गांधी, बूढ़ा आदमी मुस्कुराया। मोहनदास करमचन्द गांधी।

- पवित्रा श्रीनिवासन

Evening शाम ସନ୍ଧ୍ୟା Oriya संध्या

चूँ चूँ का डिब्बा

नीचे दी गई सूची देखिए और अपनी भाषा में उन्हें पढ़िए । तत्पश्चात् नीचे सूची देखिए और सीखिए उन्हें अन्य भाषाओं में क्या कहते हैं ।

English	Happy Birthday	Morning	Afternoon	Evening	Night
Hindi	जन्मदिन की शुभकामनाएँ	सुबह	दोपहर	शाम	रात
Telugu	జన్మదిన శుభాకాంక్షలు जन्मदिन शुभाकांक्षलु	ఉదయం उदयम	మధ్యాహ్నం मध्यानम	సాయంత్రం सायन्त्रम	రాత్రి रात्रि
Tamil	பிறந்தநாள் வாழ்த்துகள் पिरन्दलाल वालतुगल	காலை कालै	மதியம் मदियम	மாலை मालै	இரவு इरवु
Bengali	শুভ জন্মদিন सुभ जन्मदिन	সকাল साकाल	বিকেল बिकेल	সন্ধ্যা सन्धया	রাত रात
Marathi	शुभ जन्मदिवस शुभ जन्मदिवस	सकाळ साकाल	दुपार दुपार	संध्याकाळ संध्याकाल	रात्र रात्र
Kannada	ಹುಟ್ಟಿದ ಹಬ್ಬದ ಶುಭಾಶಯಗಳು हुट्टिद हब्बादा शुभाशयगलु	ಪ್ರಾತಃಕಾಲ प्रातः काल	ಮಧ್ಯಾಹ್ನ मध्याह्न	ಸಾಯಂಕಾಲ सायंकाल	ರಾತ್ರಿ रात्रि
Oriya	ଶୁଭ ଜନ୍ମଦିନ सुभ जन्मदिन	ସକାଳ साकाला	ଅପରାହ୍ଣ अपरान्हा	ସନ୍ଧ୍ୟା संध्या	ରାତ୍ରି रात्रि
Gujarati	શુભ જન્મદિવસ शुभ जन्मदिवस	સવાર सवार	બપોર बपोर	સાંજ सांज	રાત रात
Assamese	শুভ জন্মদিন हुबा जन्मदिन	পুৱা पुवा	বিয়লি पियोली	সন্ধ্যা हन्धया	ৰাতি रातिलोई
Malayalam	ജന്മദിനാശംസകൾ जन्मदिनासमसगल	പ്രഭാതം प्रभातम	ഉച്ചക്ക് उच्चक्कु	വൈകിട്ട് वैकिट्ट	രാത്രി रात्रि
Santali	[illegible] सागुन जानाम माहा	[illegible] सेताह	[illegible] तारासिजं	[illegible] अईयुव	[illegible] निन्दा
Sanskrit	जन्मदिनस्य शुभाशयाः जन्मदिनास्य शुभाशयाः	प्रातः प्रातः	मध्याह्नः मध्यान्हः	सायङ्कालः सायंकालः	रात्रिः रात्रिः

तिरछे लिखे शब्दों तथा कोष्ठक में इंगित भाषा को देखिए । ऊपर दी गई तालिका में शब्द ढूँढ़िए तथा वाक्यों के बराबर में लिखिए -

१. कक्षा ने जन्मदिन की बधाई देते हुए लड़की को .... दीं । (तेलगू)

२. नाश्ता .... खा लिमा है । (असमिमा)

Evening शाम સાંજ **Gujarati** सांज

English	Welcome	Goodbye	Congratulations	How are you	I am fine
Hindi	स्वागत	राम राम	बधाइयाँ	तुम कैसे हो	मैं अच्छा/अच्छी हूँ
Telugu	స్వాగతం स्वागतम	వీడ్కోలు वीडकूलू	అభినందనలు अनिनन्दनलु	బాగున్నారా बागुन्नारा	బాగున్నాను बागुन्नानु
Tamil	நல்வரவு नल वरवु	போய் வருகிறேன் पोय वरुगिरेन	வாழ்த்துகள் वालतुगल	எப்படி இருக்கிறாய் एप्पडी इरुक्किराय	நன்றாக இருக்கிறேன் नन्राग इरुक्किरेन
Bengali	স্বাগতম स्वागातम	বিদায় बिदाय	অভিনন্দন अभिनन्दन	কেমন আছ केमोन आछो	আমি ভাল आमि बालो
Marathi	स्वागत स्वागत	बराय, येतो बराय, येतो	अभिनंदन अभिनन्दन	कसे आहात कसे आहात	मी ठीक आहे मी ठीक आह
Kannada	ಸುಸ್ವಾಗತ सुस्वागत	ಶುಭಮಸ್ತು शुभमस्तु	ಅಭಿನಂದನೆಗಳು अभिनंदनेगलु	ಸೌಖ್ಯವಾಗಿದ್ದೀರಾ सौक्यवागिददीरा	ಸೌಖ್ಯವಾಗಿದ್ದೇನೆ सौक्यवागिददीने
Oriya	ସ୍ୱାଗତଂ स्वागतम	ବିଦାୟ बिद्या	ଶୁଭେଚ୍ଛା सुबेच्छा	ତୁମେ କିପରି ଅଛ तुमे किपारी अछा	ମୁଁ ଭଲ ଅଛି मु भाला अछाय
Gujarati	આવો आवो	આવજો आवजो	અભિનંદન अभिनन्दन	તમે કેમ છો तमे केम छो	હું સારી છું हुं सारी छूं
Assamese	স্বাগতম स्वागतम	বিদায় बिदाय	অভিনন্দন अभिनन्दन	কি খবৰ की खबर	মোৰ ভালেই मोर भालेय
Malayalam	സ്വാഗതം स्वागतम	വിട विड	അഭിനന്ദനങ്ങൾ अभिनन्दनंगल	സുഖമാണോ सुखमानो	എനിക്ക് സുഖം തന്നെ एनिक्कु सुखम दन्ने
Santali	[illegible] अतांग दराम	[illegible] विदा	[illegible] सारहाव	[illegible] चेड रेका मेनामा	[illegible] नापाय जियांज
Sanskrit	स्वागतम् स्वागतम	शुभं भवतु शुभं भवतु	अभिनन्दनानि अभिनन्दनानि	कथम् अस्ति भवान् कथम अस्ति भवान	अहं कुशली अहं कुशली

३. सूरज .... में डूबता है। (मराठी)
४. गर्मियों में .... सबसे गर्म कालांश होता है। (कन्नड़)
५. चन्द्रमा .... में निकलता है। (गुजराती)
६. मेज़बान ने मेहमानों को .... कहा। (तमिल)
७. अपनी मात्रा पर जाने से पहले दिनेश ने .... कहा। (संथाली)
८. अपना नमा काम मिलने पर राजू को उसके मित्रों ने उसे .... कहा (मलमालम)
९. डॉक्टर ने बीमार से पूछा .... । (हिन्दी)
१०. बीमार ने कहा .... । (बंगाली)

Evening	शाम	সন্ধ্যা	Assamese	हन्धया

पाताल दुर्ग-१९

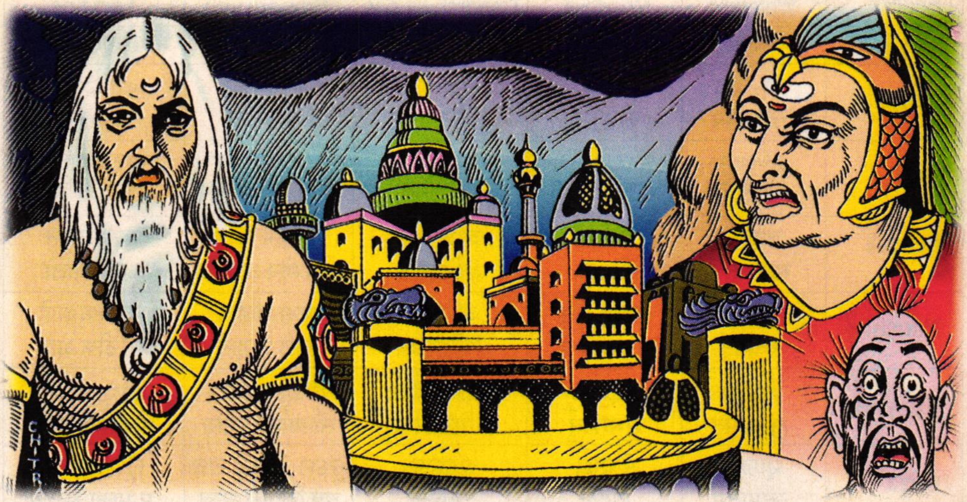

(सूर्योदय होते ही मान्त्रिक के साथियों ने पाताल दुर्ग पर औषधि भस्मों का उपयोग किया। राक्षस उनके प्रभाव से नशे में चूर होकर एक दूसरे को मारने लगे। महाकलि हाथियों के रथ पर सवार होकर वहाँ आया।विरूप का छोड़ा हुआ गरुड़ पक्षी, सोने के मगर के बच्चे को पैरों में लटका कर पाताल दुर्ग पर मंडराने लगा। उसके बाद-)

महाकलि ने राक्षसों को काले गरुड़ की ओर देखते देखा। उसने अपने हाथियों के रथ को रोका। सिर उठाकर उसने ऊपर देखा। उए गरुड़ के पैरों से लटकता मगर का बच्चा दिखाई दिया। पक्षी में कोई विशेषता न थी। उसी तरह के पक्षियों को उसने कभी पूर्व में पहाड़ों के इलाके में उड़ते देखा था।

पर सोने की तरह चमचमाने वाला मगर का बच्चा इसके पैरों में कैसे लटक रहा है? क्या कहा मगर सोने के होते हैं?

राजा को यूँ अचरज में पड़ा देखकर एक बूढ़े राक्षस ने उसके रथ के पास आकर कहा - राजा, हमारे लोग इस पक्षी को आपके पिता घोरकलि समझकर नमस्कार कर रहे हैं। आपका नमस्कार करना भी अच्छा है, नहीं तो वे सोचेंगे कि आप में पिता के प्रति भक्ति आदर नहीं है। वे आपकी निन्दा करेंगे।

गरुड़ पक्षी मेरा पिता कैसे हो सकता है? इसमें ज़रूर कोई धोखा है। सप्ताह भर से पहाडों. पर से हमें कोई देख रहा है, इसकी खबर मुझे

Evening | शाम | വൈകിട്ട് | Malayalam | वैकिट्टु

पहले मिल चुकी है। यह शायद तुम्हें मालूम नहीं है? महाकलि ने गुस्से में कहा।

महाकलि की बात को बूढे. राक्षस ने ऊँचे पत्थर पर खडे. होकर सबको बताया - यह पहाड़ों की चोटियों पर रहने वाला अन्धा गरुड़ पक्षी है, महाबलवान धारकालेश्वर नहीं है। यह बात हमारे दुर्गेन्द्र महाकलि बता रहे हैं। यह सुनकर, राक्षसों में से कई ने पत्थर लेकर गरुड़ पर निशाना मारा। कई ने यह सोचकर कि बूढा, राजा का अपमान कर रहा है, उस पर तरह-तरह के हथियार फेंके।

महाकलि ने अपने अंगरक्षकों को आस बुलाया और उनसे सलाह मशवरा करने लगा।

पहाड़ की चोटी पर से, पेडों.की झुरमुट के पीछे से कालशम्बर मान्त्रिक ने यह सब देखा। अट्टहास करके उसने कहा - सरोवर के बडे. पत्थर को अब तक हमारे लोगों ने बाहर निकाल दिया होगा।

गुफाओं में रहने वाले हमारे लोग, अभी तक मालूम होता है, पहाड़ पर नहीं आए हैं? जय शाम्भवी, जल्दी आओ, जल्दी आओ। वह मन्त्रदण्ड को उठाकर घुमाने लगा।

इतने में पहाड़ इस तरह हिला, जैसे कोई भूचाल आया हो। पाताल दुर्ग की ओर पहाडी. की तलहटी पर, दो-चार जगह पानी, ताड़ के पेड़ के बराबर ऊपर उठा और गरजता दुर्ग के सामने के मैदान में बहने लगा।

प्रलय, प्रलय ...कई राक्षस भय से काँपते हुए चिल्लाए। बूढ़े राक्षस ने आवाज़ ऊँची करके कहा - घोरकालेश्वर यह सोचकर कि हमने उनका अपमान किया है, हमें दण्ड दे रहे हैं। राक्षसों का सर्वनाश होकर रहेगा और इसके लिए जिम्मेवार महाकलि ही है यह मैं पहले ही बताए देता हूँ।

सरोवर में मान्त्रिक के जिन अनुचरों ने, बेलों की मदद से पत्थर खींचा था वे भागे - भागे उसके पास आये। भद्र ने बडे.जोश के साथ कहा - महामान्त्रिक, हम जीत गए हैं। अब तक जो तुमने बडा.पत्थर छुपा रखा था, उसको बाहर खींचते ही सरोवर में खलबली मच गई और पहाड़ इस तरह काँप उठा, जैसे कोई भूकम्प आया हो।

यह भूकम्प है? नहीं, नहीं, प्रलय है महाप्रलय

Evening शाम ᱟᱭᱩᱵ Santali अईयुव

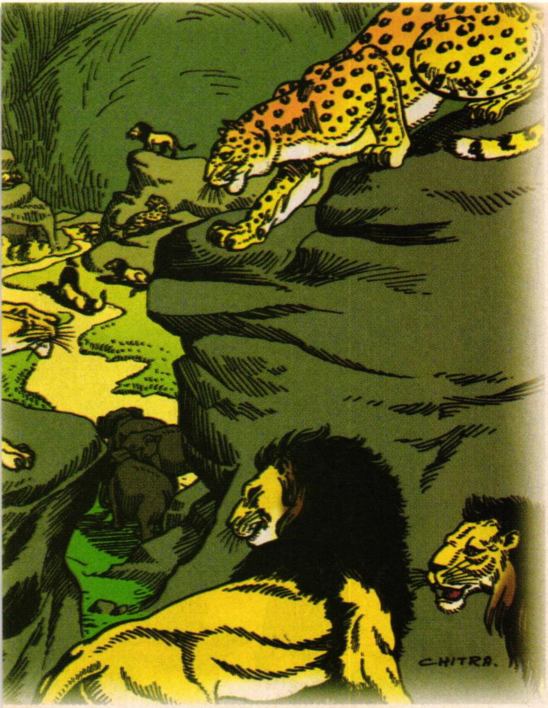

पास खडे. लोगों से पूछा।

कहीं दूर शेर, बाघ गरजते मालूम होते हैं। विरूप ने कहा।

गरज रहे हैं? मान्त्रिक ने मुस्कुराकर कहा - वे कुम्भीर के पालतू जानवर हैं। उनको दो-तीन दिनों से खाना नहीं मिला है, वे अब उस एकमात्र सँकरे रास्ते की रक्षा करने आ रहे हैं। उस रास्ते से महाकलि अपने साथियों के साथ नहीं भाग सकता यदि उसने हिम्मत करके हमारे पहाड़ की ओर आने की कोशिश की, तो हमारे लोग उसे मार देंगे। उन सब क्रूरों को पानी में डूबकर मरना होगा।

कुम्भीर, जो शशिकान्त और राजकुमारी कान्तिसेना को लेकर, सरोवर की ओर निकला था, न मालूम उसका क्या हुआ? भद्र ने पूछा।

मेरे मित्र और शत्रु पुलिन्द की नौजवान स्त्री भामा सिन्गी भी उसी के साथ है, तुमने बताया था। वह चुडैल उन सबको कहीं गलत रास्ते पर तो नहीं ले गई? विरूप ने पूछा।

हमारे लिए सबसे अधिक मुख्य राजकुमारी है। हमने कदम्ब राज्य के लोगों को वचन दे रखा है कि उन्हें लाकर हम रानी बनाएंगे। धूमक ने कहा।

सोमक ने सिर हिलाते हुए, कन्धे पर लटके तरकश से बाण निकाले।

कालशम्बर ने कुछ खीझकर, सिर एक तरफ मोड़ कर कहा - अगर अब हर कोई अपने अपने

है। मैंने कई दिनों तक जल स्तम्भन करके, सरोवर की तह से, पहाड़ों में सुरंग बनाकर रास्ते बनाए और मैंने उस पत्थर को इस तरह रख दिया, ताकि जरूरत पड़ने पर, सरोवर के पानी में पाताल दुर्ग को डुबो सकूँ। पत्थर अपनी जगह से हिला कि नहीं कि पाताल दुर्ग पानी में डूब जाएगा।

पर इस बीच कुछ राक्षसों के, पगडंडी से, किले से जंगल में भाग जाने की गुँजाइश है। उनमें से कोई भी इस तरह न भाग निकले इसलिए ही हमें इतनी देर प्रतीक्षा करनी पड़ी। कहते - कहते, कालशम्बर ने अपने कान पर हाथ रखकर कुछ सुना - क्या हैं ये आवाज़ें? क्या तुम्हें कुछ सुनाई नहीं पड़ रहा है? उसने

Evening	शाम	सायङ्कालः	Sanskrit	सायंकालः

मतलब की बात देखने सोचने लगे तो आफत आ पडेग़ी।जिसने मेरे पिता को इतनी क्रूरता से मारा था अगर मैं उस महाकलि राक्षस को अमार सका, तो मेरा बदला निकल जाएगा। पर इससे क्या लाभ होगा? पर उसके साथियों में से कोई एक और पाताल दुर्ग को अड्डा बनाकर, महाकलि से भी अधिक अत्याचार कर सकता है। इसलिए पहले इन सब राक्षसों को यम के पास भेजना होगा।

उसके बाद, राजकुमारी, मन्त्री के लड़के शशिकान्त की हिफाजत के बारे में सोचा जा सकता है। कुछ सब्र करो।

इन सब बातों का, भद्र और धूमक एक साथ ही उत्तर देने जा रहे थे कि पाताल दुर्ग की ओर से भयंकर शब्द सुनाई।

मान्त्रिक और उसके साथी भागे-भागे गए, उन्होंने पत्थरों पर झुककर नीचे देखा। पाताल दुर्ग का एक हिस्सा पानी की चोट के कारण ढह गया था। जो राक्षस उस पर खड़े थे, वे पानी में कूद कर हाहाकार करके तैरने लगे। कई हाँफते-हाँफते मान्त्रिक के पहाड़ की ओर तैरते चले जा रहे थे।

कालशम्बर ने मन्त्रदण्ड उठाकर कहा- भद्र और धूमक ज़रा मेरी बात सुनो। विश्वास करो कि शशिकान्त और राजकुमारी सुरक्षित हैं। कहकर, उसने मन्त्रदण्ड उनके सामने करके कहा - देखो, इस पेड़ के नीचे वे दिखाई दे रहे हैं न? उनकी बगल में कुम्भीर खडा.है।

वे अभी मन्त्रदण्ड की ओर ह देख रहे थे कि मान्त्रिक ने कहा - भद्र, जो हमने बडी.- बडी.

Night रात இரவு Tamil इरवु

गुलेलें छुपा रखी थीं उनका राक्षसों पर उपयोग करने का यही अच्छा मौका है। जो इधर तैरते आ रहे हैं, उन पर निशाना गाकर पत्थर फेंको। सम्भल कर रहो।

भद्र तालियाँ बजाकर, गुफाओं में से बाहर आए हुए मान्त्रिक के कुछ सेवकों को लेकर, पेडों. के झुरमुट के पास गया। वहाँ बड़े-बड़े पत्थर रखे हुए थे।

उसने उनको तैयार करके रख लिया, उनके उपयोग के लिए आज्ञा की प्रतीक्षा करने लगा।

भद्र ने समीप जाकर कहा - अब पत्थर बरसाओ। एक-एक चोट से एक-एक राक्षस को यम लोक भेज दो।

फिर उसने कुछ साथियों से कहा - तुम जिसने पत्थर ढो सको, उतने उनके पास ले जाओ। कुछ देर बाद, पेडों.पर से बडे.-बडे.पत्थर, तैरते हुए राक्षसों पर बरसने लगे।

चोट लगते ही राक्षस ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाते छटपटाकर पानी में डूब कर फिर तैरने लगते। तब तक पाताल दुर्ग के काफी भागमें पानी भर गया था। किले के कुछ ही बुर्ज़ पानी के ऊपर दिखाई दे रहे थे। कुछ राक्षस उन बुर्ज़ों को पकड़कर लटक रहे थे। नीचे झाग होते पानी को देख सोने का मगर का बच्चा, उसमें कूदने के लिए छटपटाने लगा। इसलिए बहुत कोशिश करने पर भी गरुड़ पक्षी ऊपर न उड़ सका। पानी से चार-पाँच गज ऊपर ही उड़ता गया।

घोरकलेन्द्र हमें बचाने के लिए आ रहे हैं। पाताल दुर्ग के बुर्ज़ से लटकता हुआ एक राक्षस चिल्लाया।

तुरंत ही बहुत से लोग चिल्लाने लगे - घोरकलेन्द्र, रक्षा करो, हमारी रक्षा करो।

यह सब देख, कालशम्बर का हँसते-हँसते पेट फूल गया। विरूप, जैसे तुमने कहा था, तुम्हारा काला गरुड़ पक्षी सचमुच देवता पक्षी ही है।

उसकी सहायता से हमने राक्षसों की आँखों में अच्छी तरह धूल झोंकी। पर महाकलि का क्या हुआ? कहीं वह पानी से बचकर निकल तो नहीं गया है? उसने चिन्ता प्रकट की।

सबने पानी की ओर ध्यान से देखा यकायक

Night रात రాత్రి Telugu रात्रि

दो हाथी पाताल दुर्ग के बुर्ज़ के पीछे से आए। उनमें से एक पर महाकलि सवार था। दूसरे पर उसके दो अंगरक्षक बैठे हुए थे। सब के कपडे. गीले थे।

महाकलि ने अपने हाथ की गदा उठाकर कहा - उस मनहूस पक्षी को पिता समझकर न मालूम हमने क्या-क्या किया और आने वाली आपत्ति के बारे में सोचा ही नहीं। अब सोचने से क्या फ़ायदा? सब जंगल की ओर जाने वाली सुरंग की ओर तैरकर आओ, जो-जो पहाड़ पर जाने की कोशिश कर रहे हैं, उनको वह दुष्ट मान्त्रिक कैसे पत्थर फेंक-फेंककर मार रहा है, देख नहीं रहे हो? वह ज़ोर से चिल्लाने लगा।

महाकलि के अंगरक्षकों ने अपने हाथियों को पानी में घुमाया। वे महाकलि के बताए पहाड़ी सुरंग के रास्ते की ओर जाने लगे। महाकलि ने उस ओर हाथी चलाते हुए कहा - जल्दी आओ ..अगर हम सुरंग पार करके ज़मीन पर पहुँच गए तो उस मान्त्रिक को मरा समझो। मेरी होने वाली पत्नी कान्तिसेना कहाँ है? और वह शशिकान्त कहाँ है?, जिसकी बलि दी जानी थी। चुडैल़ भामासिंगी क्या डूब गई है? हाँ .म़गर कुम्भीर कहाँ है? वही तो उन सबका चौकीदार है। कुम्भीर-कुम्भीर ! वह पुकारने लगा।

महाकलि की अक्ल मारी गई है। अब यह सन्धि का समय है न? तो चलो, सब पहाडी. सुरंग के पास चलें, वह कुम्भीर जंगली जानवरों की मदद से द्वार की रक्षा कर रहा होगा। पर राक्षसों के सामने भला शेरों की क्या चलेगी? हमारा कुत्तों के साथ लड़ने के बराबर है ! कहकर कालशम्बर तेज़ी से चलने लगा।

सब राक्षस अपने राजा के पीछे तैरते-तैरते सुरंग मार्ग की ओर जाने लगे। मान्त्रिक ऊँचे नीचे रास्ते पर चढ़ता उतरता कहीं-कहीं पहाड़ के छोर पर रेंगता, उनसे कुछ देर पहले ही वहाँ पहुँचा। उसे जंगल की ओर कुम्भीर और उसके वंश के कुछ राक्षस दिखाई दिए।

(अगले अंक में समाप्त)

Night	रात	ৰাত	Bengali	রাত

रहस्य और बलिदान

(डोडो शिवा को बताता है कि अनुनिर्वा में मृत्यु नहीं है। जो रूप वह देखता है वे सब भ्रम हैं वे परिवर्तनशील हैं और बदल सकते हैं। वे मरते नहीं हैं। एक बेचैनी भरी रात की नींद के बाद शिवा को चाइनीज़ हाथी जगाते हैं जो उसे सभा में ले जाने आए हैं।)

आज बड़ा दिन था। चाइनीज़ हाथी मुझे गिरते हुए पानी के छेद तक ले गया। मेरी त्वचा पर पानी ठंडा और अच्छा महसूस हुआ। मैंने अपना मुँह धोया और स्वयं को ठीक-ठाक दिखने लायक बनाया। पानी में हाथ डालते हुए मैं अपने दिमाग को आवारा छोड़ दिया .....सूर्य आसमान में एक देवता की तरह मेरी जिंदगी के आखिरी दिन धरती पर अपना फैसला सुनाता हुआ; मेरे पिता मुझे अपना व्यवहार ठीक रखने और अपने दादाजी को को किसी परेशानी में न डालने के लिए कहते हुए; डोडो ट्रेन पर......मैंने आश्चर्य से सोचा अगर चीज़ें भिन्न तरीके से बदल गयीं अगर मैंने उन से बिल्कुल बात नहीं की तो.....पानी दादाजी के आँगन में बहता हुआ समुद्र की तेज़ गंध....सभ्यताओं की धूल, धातुई आभा वाले खोए खज़ाने, सैकडों. वर्षो पहले अपराध.....समुद्र यह सब जानता था। और अब यह हम पर दावा करने आया गया। अपना हिसाब। मैंने पानी को अपने हाथ के नीचे साँस लेते महसूस किया। यह जीवित था। इसे मालूम था कि मैं यहाँ था। एक पंजे ने मेरा हाथ पकड़ लिया। मैंने अपनी आँखें नहीं खोलीं। वह क्या था उसे देखने की हिम्मत भी न कर सका।

उसने मुझे पानी में खींच लिया। कुछ दूरी पर मैं चाइनीज़ हाथी की प्रसन्नता भरी सीटियाँ सुनाई दे रही थीं। या मैंने देखा ही नहीं क्या हो रहा था या मैंने इसे एक अनजाना नाटकीय प्रदर्शन मान लिया था और अपनी सहमति की सीटी

Night	रात	रात्र	Marathi	रात्र

बजा रहा था। मेरे कंधे पर किसी ने थपथपाया. ...कोई मुझे आँखें खोलने को कह रहा था.... अपने अहसास से संघर्ष करते हुए मैंने आँखें खोलीं और देखा। ये दादाजी थे!! और उनके पास सैकडों. जलपरियाँ तैर रहीं थीं। उनकी नारंगी हरी आँखें अपलक, मुझे भेद रहीं थीं। लड्डू एक जलपरी की गोद में था जो उसे बडी. कोमलता से पकडे.थी। वह उसके बालों को चबा रहा था लेकिन मुझे लगा वह उसे खेल लग रहा था।

दादाजी मुझे कुछ बताने की कोशिश कर रहे थे। मैंने उनके हाथ में एक रबर का मुखौटा देखा।

निश्चय ही मुझे उनकी बात समझने के लिए एक पहनना होगा। मैंने उनसे वह लेकर मेरे सर पर कस लिया। मैं अच्छी तरह से साँस ले सकता था। दादाजी अपनी जवानी में एक अच्छे डॉक्टर रह चुके थे, लेकिन उन्होंने इसे पर्यावरण संबंधी एक स्वतंत्र समाज सेवी संस्था चलाने के लिए छोड़ दिया था। परिवार के बहुत से लोगों को उनके इस निर्णय से बहुत आश्चर्य हुआ था। उन्होंने उनसे अपना निर्णय बदलने की बहुत मिन्नतें कीं, पर दादाजी गोली दाग चुके थे। मेरे पिताजी ने तब अपना कॉलेज खत्म ही किया था और आगे की पढाई के लिए विदेश जाना चाहते थे...लेकिन पैसा खत्म हो चुका था और उन्हें एक नौकरी करनी पड़ी। इसके लिए उन्होंने दादाजी को अभी तक माफ नहीं किया। बात करने में यह प्रद्धति बहुत

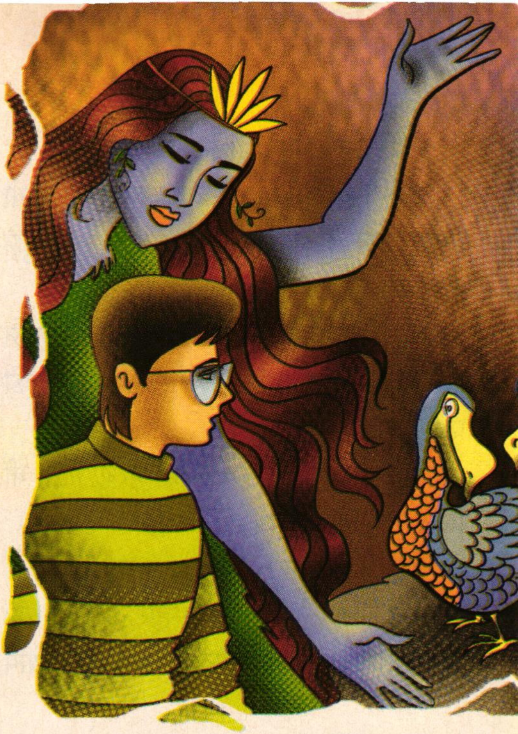

अच्छी लगती है लेकिन यह क्या अच्छा करेगी? वे जब भी अपनी कहानी याद करते बार-बार मन में बुड़बुडाते। एक बार मैंने दादाजी से पूछा था कि वे ऐसा क्यों करते हैं और वे बोले अपने अपराधों के लिए प्रायश्चित करने का यह उनका तरीका है। मैंने आगे कुछ नहीं कहा क्योंकि उनका चेहरा राख जैसा हो गया।

क्या तुम भी सभा के लिए आ रहे हो? मैंने पूछा। अगर वे मेरे साथ होते तो मैं अच्छा महसूस करता।

मैं ऐसा नहीं कर सकता, शिवा। मैं डरता हूँ, यहाँ मानवों के प्रतिनिधित्व के लिए केवल तुम्हें चुना गया है! हमें नीचा न देखना पडे! वे दाँत भींच कर हँसे।

ठीक है? तब क्या आप यहाँ मुझे शुभकामनाएँ

Night	रात	ರಾತ್ರಿ	Kannada	रात्रि

देने आए हैं ?

नहीं, उनकी मुद्रा गंभीर हो गई।

जलपरियों ने सभा में आज तुम्हारी जिंदगी बनाए जाने की एक कोशिश के बारे में मुझे बताया।

मेरा पेट मेरे पैरों तक आ गया। मैं अपने ऐतिहासिक दाँत के साथ जंगली जानवरों की एक सेना से कैसे लडूँगा?

मुझे अपने लिए स्वयं का मृत्यु गीत भी लिख ही लेना चाहिए।

उन्हें कैसे पता? मैं गटक गया।

उन्हें रॉबिन ने बताया। तुम्हारे यहाँ होने की बात पता चल गयी और निश्चय ही यद्यपि मयूरी ने तुम्हारी सहायता करने की बात की है पर अन्य खतरनाक जानवर तुम्हारे प्रति अभी तक खफा ही हैं।

मैंने कुछ नहीं कहा। पानी अचानक भारी और घातक हो गया। मैंने स्वयं को डूबता हुआ महसूस किया...डूबता हुआ...मैंने स्वयं को बताया...मेरी प्रतीक्षा करने वाले भविष्य से यही अच्छा था।

याद रखो, वे तुम्हारे बारे में कुछ नहीं जानते। वे तुम्हें मानव के हरेक कारनामे के लिए खडा. देखते हैं...उनके गुस्से को समझो। और समझने के बाद मुझे क्या करना चाहिए? मैंने चिड़चिडाते हुए पूछा। इस प्रकार की बातें बनाना सब बहुत अच्छा था लेकिन मैं क्या करने जा रहा था?

शुरुआत के लिए तुम अपने इस गुस्से पर काबू पाओ, दादाजी मुँह में मुस्कुराए। उन्होंने आगे कहा, वे माँग रखेंगे कि तुम्हें मार दिया जाए। कोई प्रतिक्रिया न करो।

ओह? और तब? मैं सोचता हूँ सब घर जाएँगे और प्रदर्शन के बाद टेलिविज़न देखेंगे! मैं गुस्से से भर उठा था। दादाजी क्या सोच रहे थे! हाँ, यही विचार है, उन्होंने मुस्कुराना जारी रखा। मुझे आश्चर्य हुआ जैसे कि उनका दिमाग ठिकाने पर न हो।

अभी तक मेरी महत्त्वपूर्ण चीज़ें मिल गईं, चिंता मत करो! हमेशा की तरह वे मेरे मन की बात जान गए थे। प्रदर्शन, शिवा। यह एक प्रदर्शन होगा।

सचमुच नहीं। हुह ?

Night रात ରାତ୍ରି Oriya रात्रि

मयूरी तुम्हें सब के सम्मुख डाँटेगी। वह सबको तुम पर गुस्सा उतारने का मौका देगी। चिन्ता न करो, वे तुम्हें शारीरिक रूप से हानि नहीं पहुँचाएँगे। खून बहाना यहाँ एक मानवीय कारनामा समझा जाता है... .वे इन कामों में नहीं लगेंगे।

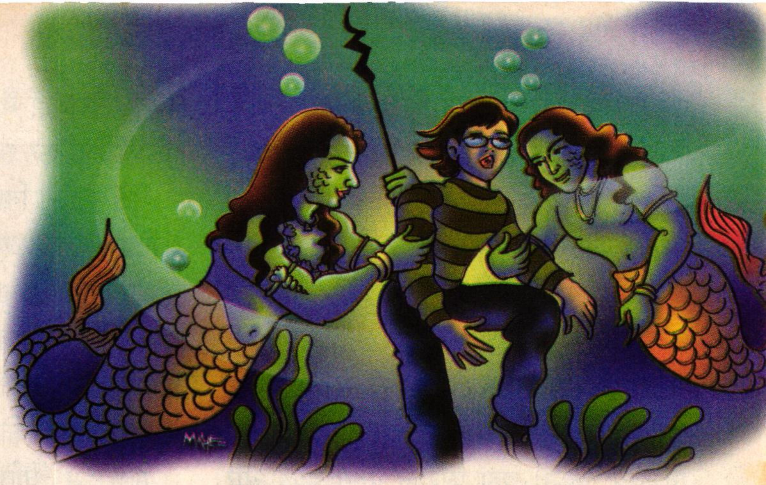

प्रदर्शन से आपका क्या मतलब है? मैंने पूछा।

यह एक बहाना होगा वे तुम्हें पानी में डुबा कर मौत की सज़ा सुनाएँगे..मरने का प्राकृतिक तरीका।

वह एक प्राकृतिक तरीका कैसे है?

क्योंकि हम हम पानी से ही आए हैं और पानी में ही हमारा अंत होना है।

जब वे तुम्हें पान तक लाएँ, तुम्हें अपने अपराध का बोझ स्वीकार कर लेना चाहिए। तब वे तुम्हें समुद्र में डालेंगे..।

और आप मुझे बचा लेंगे?

मैं बचा लूँगा। ज़मीन के ऊपर के जीव नहीं जानते कि मैं यहाँ हूँ। न ही वे यह जानते कि जलपरियाँ हमारे साथ हैं।

यह कैसे हुआ?

क्या जलपरियों का सहयोग। वे दोस्त जाति की नहीं दिखतीं। मैंने, यह भूल कर कि उनमें से बहुत सी हमारे चारों तरफ हैं, एकदम से कहा।

मैंने एक मूल्य चुकाया है, दादाजी ने कहा।

क्या है?

तुम्हें पता है कि जलपरियों का खज़ाना क्या होता है, शिवा? नहीं....मुझे बताइए।

रहस्य। हुह?

वे पूरे संसार के रहस्य इकट्ठा करते हैं। रहस्य जो समुद्र में आते हैं...मानवों से, जानवरों से, पक्षियों से.... क्योंकि अंत में सबको समुद्र में आना है। और वे क्या करते हैं....रहस्यों के साथ। वे उन्हें सहेजते हैं। वह सब करने का क्या कारण है? मैंने अनजाने में पूछा।

वे सच्चाई जानते हैं, शिवा। सच, जिसके पीछे मानव हर समय भागते हैं। अनजाने में जब वे उसे हमेशा उस अद्भुत की खोज में संलग्न देखते हैं जो हमें भगवान से अलग करता है। विज्ञान, गणित, साहित्य, दर्शन...ये सब क्या हैं बस सच्चाई की खोज?

मैं शांत था। मुझे याद आया ओमेन ने मुझे प्लेटो का आकार का सिद्धान्त बताया था।

और?

और ब्रह्मांड की कहानियाँ सुरक्षित रखते हैं।

Night	रात	રાત	Gujarati	रात

उनके लिए जानना यानि जिंदा रखना।

मैंने सर हिलाया। आपने उन्हें क्या बताया?

मुझे डर है मैं तुम्हें यह नहीं बता सकता... उन्होंने मुझसे वह रहस्य पूछे हैं जो कोई और न जानता हो या न ही जान पाएगा, और मैंने उन्हें बता दिया।

दादाजी मुझसे नज़रें चुरा रहे थे। वे समुद्री घास को देख रहे थे। मैंने इसे जाने देने का निश्चय किया। यहाँ परेशान करने वाले और भी मामले हाथ में थे। समय हो गया, मेरी कोहनी के पास एक झटका लगा। मैं डर के मारे घूमा। जलपरियों का नेता वहाँ खड़ा, मुझे घूर रहा था।

तुम्हें अब जाना चाहिए, शिवा, दादाजी ने कहा। हमें तुम पर गर्व हो।

मैं बोल नहीं पाया, बस सर हिलाया मैंने कभी अपने विद्यालय का भी प्रतिनिधित्व नहीं किया और यहाँ मैं....संपूर्ण मानव जाति का प्रतिनिधित्व कर रहा था!

मैंने मुखौटा निकाल दिया और दादाजी को दे दिया। दो जलपरियों ने दूसरी ओर से मेरे हाथ पकडे. और मुझे ऊपर की ओर धक्का दे दिया। मैंने दोबारा अपनी आँखें बन्द कर लीं और स्वयं को पानी के छेद में से निकालने से पहले एक क्षण की शान्ति दी।

हैलो! मैं चिंतित होने लगा था, चाइनीज़ हाथी मेरे कान में गरजा।

तुम विश्वास नहीं करोगे कि क्या हुआ! मैंने एक बडे. झटके से कहा।

क्या तुम्हारे दादाजी ठीक हैं ? उसने अपनत्व भरे स्वर में पूछा।

क्या....? तुम कैसे जानते हो?

दरअसल, तुम्हें मालूम है ...तुम सभा में जाने से पहले उनसे मिलने वाले थे....क्या मैंने तुम्हें बताया नहीं था ?

नहीं! मैं चिल्लाया।

आह ठीक है, अप्रत्याशित घटनाएँ जिंदगी को और मज़ेदार बना देती हैं, क्या ऐसा नहीं है?

उसने खींसे निपोरीं। मैं अपने पलट जवाब से पीछे हट गया....मुझे झटका लगा था जब एक पंजे ने मुझे अंदर खींचा था....लेकिन दादाजी और लड्डू को देखना एक

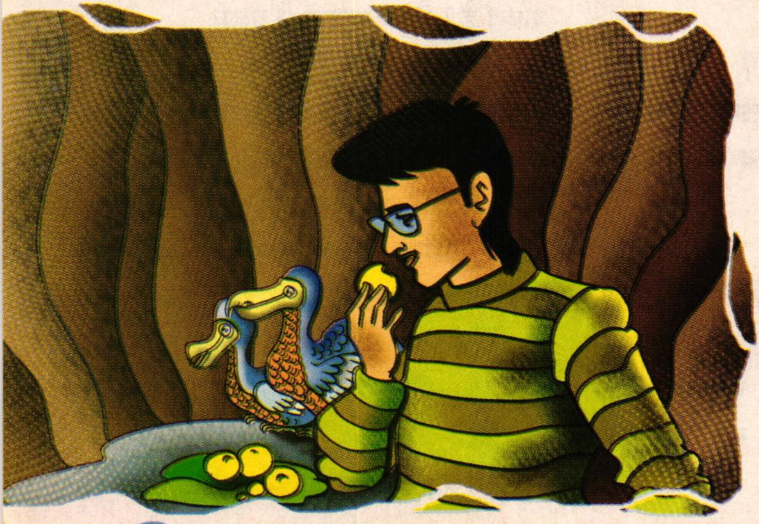

Night	रात	ৰাতি	Assamese	रातिलोई

सुखद घटना थी। स्वयं को सुखा लो, लड़के, चाइनीज़ हाथी ने एक विशाल पत्तियों वाले पौधे की ओर इशारा करते हुए कहा।

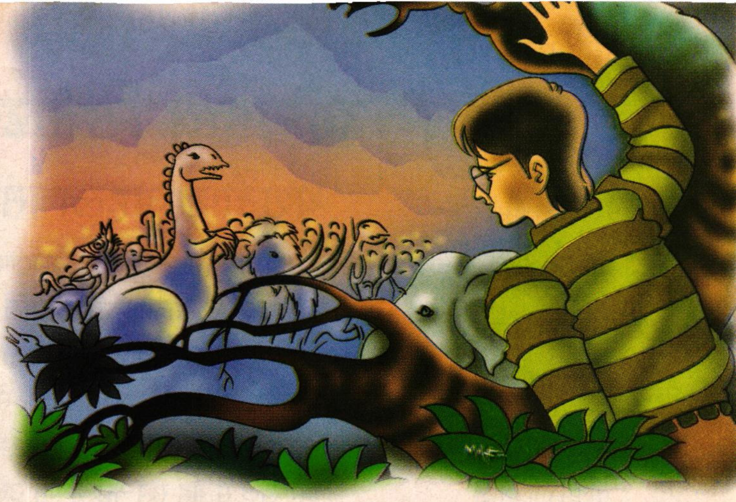

मैंने एक पत्ती तोड़ी और झिझकते हुए स्वयं को इससे रगड़ा। तुरंत ही मेरे कपडे.सूख गए।

एक और आश्चर्य! चाइनीज़ हाथी ज़ोर से हँसा। मैंने अपनी डरते हुए आँखें घुमाईं। तैयार? उसने पूछा मैंने सर हिलाया।

मैंने उसका पीछा किया धीरे से झूमते हुए, बेध्यानी में कविता की पंक्तियाँ गुनगुनाते हुए और वास्तव में बहुत बुरा गाते हुए वह मेरे आगे चलने लगा। यह पहली बार था कि मैं अनुनिर्वा को दिन के उजाले में देख रहा था और मैं खूबसूरत जगहों से अंदर ले जाया जा रहा था। यह अपरिपक्व और शक्तिशाली था। मेरे नथुनों में घुसने वाली सुगंधें नयी और उत्तेजक थीं। मैंने कीडों.के गुनगुनाने की आवाज़ें सुनीं....क्या वे मधुमखियाँ थीं? ये होती गई चम्बा - वम्बा - चम्पा - वम्पा....मैंने लय पर कुद्‌कना शुरू कर दिया।

बिल्कुल एक खेल, यही खेल रहे हो न तुम ? चाइनीज़ हाथी मुस्कुराया।

हम्म, अपने कूदने के क्रम को न तोड़ते हुए मैंने कहा।

यह तुम्हारी सभा के प्रदर्शन हेतु नगाडे.की आवाज़ें हैं, मैंने प्यार से बताया।

मैं अपने रास्ते में रुक गया। अपनी मृत्यु संस्कार में खुद के नाच की बात।

क्या हम पहुँच चुके हैं? मैं फुसफुसाया।

तकरीबन, उसने कहा। क्या तुम देखना चाहोगे?

मैंने सर हिलाया।

वह थोड़ा झुका और अचानक अपनी सूँड़ मोड़ी मेरे ऊपर आओ। हे! मैं खुशी से चीखा।

आराम से, उसने कहा और मुझे एक विशाल पेड़ की शाखा पर बिठा दिया। बिल्कुल सर की सीध में देखो, उसने कोमलता से कहा। रंगों का एक अद्भुत समुद्र मेरी आँखों के आगे फैला हुआ था। सर और पूँछें। टाँगें और दाँत।

एक अनंत चित्रखंड पहेली। आँखें....आँखें हज़ारों खतरनाक जानवरों की। सूर्य की रोशनी में चमकती हुईं। प्रतीक्षारत। देखते हुए।

मेरी प्रतीक्षा करते हुए। *आगे है*

- सौम्या राजेन्द्रन

Night	रात	രാത്രി	Malayalam	रात्रि

उदीयमान सितारा

उपलब्धियाँ :

- अन्तर्राष्ट्रीय पदक-२
  राष्ट्रीय पदक - ४
  प्रांतीय पदक - २७
- सिडनी, ऑस्ट्रेलिया में प्रशिक्षण तथा प्रतियोगिता हेतु भारतीय टीम का प्रतिनिधि (जूनियर कैटैगरी)
- जूनियर राष्ट्रीय घुड़सवारी चैम्पियनशिप सर्वश्रेष्ठ घुड़सवार - (२००७-०८) एव (२००८-०९).
- तीन बार अनवरत दिल्ली हॉर्स शो में सर्वश्रेष्ठ घुड़सवार - (२००६-०७), (२००७-०८) तथा (२००८-०९)

यशदीप अहलावत

मेरठ के मास्टर घुड़सवार यशदीप अहलावत ने इस खेल के प्रति अपनी प्रबल भावनाएँ हमसे बाँटीं। वह कहता है कि दस वर्ष की आयु में इस घुड़सवारी से संबंधित खेल से नाता जोड़ा। एक अर्जुन पुरस्कार विजेता, उसके पिता लेफ्टिनेन्ट कर्नल दीप अहलावत प्रेरणा के एक महान स्रोत हैं। इसके साथ ही यशदीप ने पाया कि इस खेल में वह सब कुछ है जो उसे प्रिय है - साहस, जोखिम तथा कार्यशीलता! शान से इस खेल में कूद पड़ने के लिए उसे इन सब की ही आवश्यकता थी।

दीवान पब्लिक स्कूल की नवीं कक्षा का विद्यार्थी रोज़ ९० मिनट अभ्यास करता है सिवाय तब कि उसकी परीक्षाएँ करीब न हों। यह सब समयायोजन है! वह बुद्धिमत्ता से कहता है। जबकि उसकी माँ उसका शेड्यूल नियोजित करने में उसकी मदद करती हैं। उसके विद्यालय ने उसकी प्राप्तियों पर एक लेख भी छपवाया। यश सब ओर से प्रेरणा मिलने पर बेहद खुश है! ड्रेसेज तथा शो जंपिंग आदि कुछ प्रतियोगिताएँ हैं जिनमें यश हिस्सा लेता है। यश ने अपने खेल से जीवन में भी बहुत कुछ सीखा है - कठिन परिस्थितियों में भी शांत रह पाना, जिंदगी में हमेशा बेहतर कोशिश करना, तेज़ निर्णय लेना तथा जानवरों के प्रति प्रेम की भावना का विकास!

चन्दामामा की चैम्पियन घुड़सवार को उसके सभी प्रयासों हेतु बहुत बहुत शुभकामनाएँ!

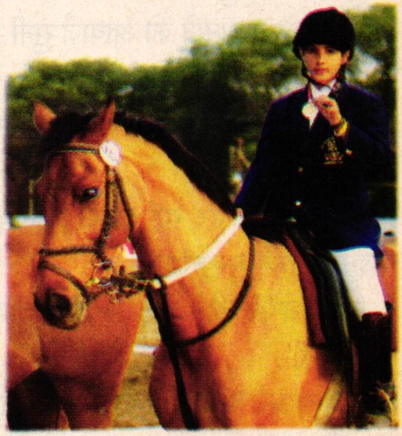

Night रात ᱧᱤᱫᱟ. Santali निन्दा

नवजात कोमोडो ड्रैगन

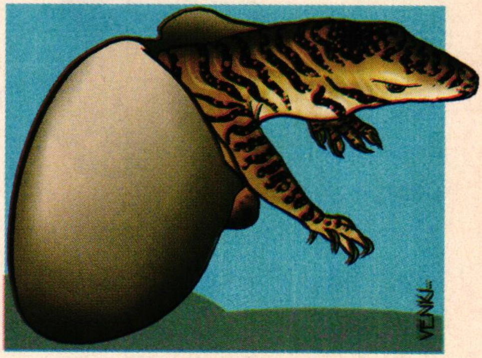

३४ वर्ष की कोशिशों के बाद, सिंगापुर चिड़ियाघर कोमोडो ड्रैगन के प्रजनन में कामयाब हुआ है।

प्रवक्ता ने बताया कि संसार की सबसे विशाल छिपकली की प्रजातियों के मूल निवास, इंडोनेशिया से बाहर एक एशियाई चिड़ियाघर में पहले १६ इंच के कोमोडो ड्रैगन ने अंडे से बाहर आया।

चिड़ियाघर के सहायक निदेशक, बिस्वजीत गुहा के अनुसार, कोमोडो ड्रैगन का अंडे से बाहर आना चिड़ियाघर के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पलों में से एक है। पिंजरे में बेमेल जोड़े, अंडे सेने हेतु सही तापमान के ज्ञान का अभाव तथा चिड़ियाघरों में नरों के प्रतिनिधित्व की बहुतायत के साथ कोमोडो ड्रैगन का प्रजनन कठिनाइयों से भरी मुसीबत है।

कोमोडो ड्रैगन, प्रकृति की लाल सूचीगत विलुप्तप्राय प्रजातियों के संरक्षण हेतु गठित अंतर्राष्ट्रीय संगठन की असुरक्षित प्राणियों की सूची में दर्ज़ है।

मगरमच्छों के साथ रहने वाला बच्चा

एक चार साल की बच्ची अपने जन्म से ही मगरमच्छों के साथ उनके पिंजरे में रह रही है। उसके माता-पिता मार्गेरिटा टारान्टिना तथा सर्जी टारान्टिना वास्तव में प्राणी प्रशिक्षक हैं। रीटा के जन्म के कुछ समय पूर्व ही पति-पत्नी को दो मगरमच्छ मिशा व माशा प्राप्त हुए। इसलिए उन्होंने उन्हें अपनी बच्ची के साथ पालने का निश्चय किया और यह सफल रहा।

मगरमच्छ तथा रीटा उसके जन्म से ही साथ हैं अत: वे उसे भोजन की तरह नहीं देखते। अब वे एक दूसरे के बिना नहीं रह सकते।

उसके पिता के अनुसार मगरमच्छ क्रूर परभक्षी हैं, लेकिन इसका एक कारण है। सरीसृप समझते हैं कि रीटा मात्र एक बच्चा है और उसे नुकसान नहीं पहुँचाना चाहिए। चार सालों में रीटा मगरमच्छों के साथ ही रही है पर उन्होंने उसे कोई नुकसान नहीं पहुँचाया।

Night रात रात्रिः **Sanskrit** रात्रिः

हँसते - हँसते हो जा लोट पोट

शिक्षक : तुम्हारे हाथ की लिखाई भयंकर है, मोनल। तुम्हें अच्छा लिखना सीखना चाहिए।

मिनल : अगर मैं अच्छा लिखूँगी तो आप को मालूम होगा कि मेरी वर्तनी भी भयंकर है!

रानी : एक बार मैं सड़क पर खेल रही थी एक तेज़ी से दौड़ती कार ने मुझे टक्कर मार दी और मैं बेहोश होकर गिर पडी।

वाणी : हे मेरे भगवान! उस दुर्घटना के बाद तू जिन्दा बच गई या मर गई?

रानी : मुझे अच्छी तरह से तो याद नहीं उस समय मैं केवल चार साल की थी।

दादा जी : तुम केवल एक ही दस्ताना क्यों पहन रहे हो?

रोशन : क्योंकि मौसम की भविष्यवाणी है कि आज यह ठंडा भी हो सकता है और गर्म भी!

मनीष : क्या स्याही बहुत महंगी है, पिता जी?

पिता : नहीं, बेटा, तुमने यह क्यों पूछा?

मनीष : दरअसल, मुझसे यह सोफे पर फैल गई है और माँ बहुत गुस्से में हैं!

दत्तु

Welcome स्वागत நல்வரவு Tamil नल वरवु

दर्ज़ी और कपड़ा

एक बार अकबर बादशाह के दरबार में चीन से तोहफेके तौर पर एक बेहद खूबसूरत नक्क़ाशीदार संदूक आया। इसके अंदर बहुत ही महीन व नर्म रेशम का बना एक नायाब कपड़ा था। बेगम को यह पसंद आ गया और उन्होंने सबसे बढ़िया दर्ज़ी से एक खूबसूरत लिबास सिलवाने का निश्चय किया। उन्होंने कपडा बीरबल को दिखाया जिसने कपड़े के महीन रेशम की तारीफ़ की। उसने कहा, यह वस्तु तो हमारी हरदिल अजीज़ बेगम के लायक है।

बीरबल, मैंने सुना है कि हमारे सिलवाने के लिए भेजे हुए कपडों.में से सभी दर्ज़ी कुछ कपडा. चुरा लेते हैं। क्या यह सच है? बेगम ने पूछा।

कहना तो नहीं चाहता पर यह सच है, बेगम! बीरबल ने कहा।

पर मैं नहीं चाहती कि कोई भी मेरे लिबास के लिए इस्तेमाल होने वाले कपडे को कोई और पहने, बेगम ने कहा।

यह नहीं हो सकता। यह मुद्दा नहीं है कि दर्ज़ी किस जुगत से पर वह आपका कुछ सामान ले ज़रूर लेगा, बीरबल ने कहा।

बेगम परेशान हो उठीं। तुम इतने यकीन से कैसे कह सकते हो? जब मैं कडी निगरानी में दर्ज़ी को मेरे लिए लिबास सिलने को कहूँ तो कैसा रहेगा?

बीरबल ने एक मुस्कान छोडी। बेगम, बाखुद्रा आप खुद की तर्ज़ पर चलिए पर आपके तरीकों से बेअसर, दर्ज़ी आपके कपडे.में से एक टुकडा. निकालने का तरीका ढूँढ़ ही लेगा!

बेगम ने अपना सर मज़बूत इरादे से हिलाया। शाही दर्ज़ी को फ़रमान भेजो। उसे लिबास शाहीमहल में ही सिलने को कहो। उसके चारों तरफ संतरी तैनात करवाओ !

मैं तुरंत ही इंतजामात करवाता हूँ, बेगम साहिबा। बीरबल ने कहा।

अगले दिन शाही दर्ज़ी शाहीमहल में लाया

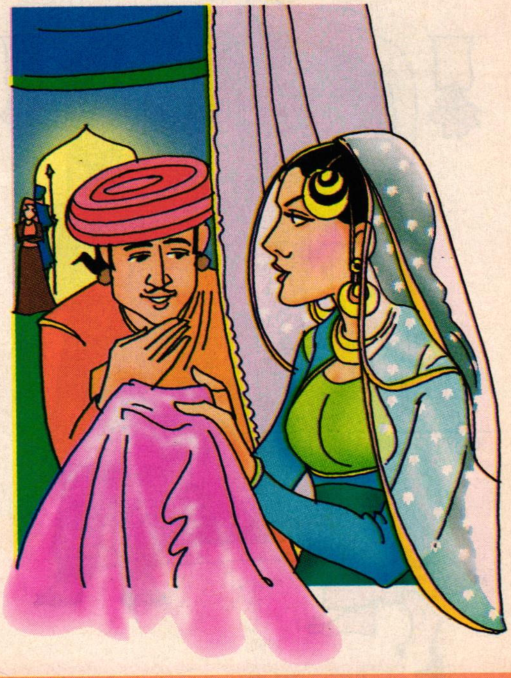

गया। बेगम ने सारी तज़वीजें उसके सामने रखीं। उसने हामी भरते हुए अपना सर हिलाया। चार सिपाही उसे एक कमरे में ले गए और उस पर नज़रें टिकाए हुए चारों कोनों में खडे. हो गए। उसने उसी कमरे में खाया और पीया। उसने सिलाई की और कमरे में ही सो गया। यहाँ तक कि उसे अपने घर जाने के लिए भी कमरे से बाहर अकेले नहीं जाने दिया गया !

ऐसा करते-करते एक हता गुज़र गया। दर्ज़ी के हाथ में एक खास काम था और उसने बहुत ही सब्र से काम को अंजाम देना था। बेगम के लिबास को आला दर्जे.का होना चाहिए था। एक दिन महल में एक छोटी लड़की आई। वह दर्ज़ी की बेटी थी और वह बहुत ही उदास दिखाई दे रही थी। वह अपने अब्बा से मिलना चाहती थी।

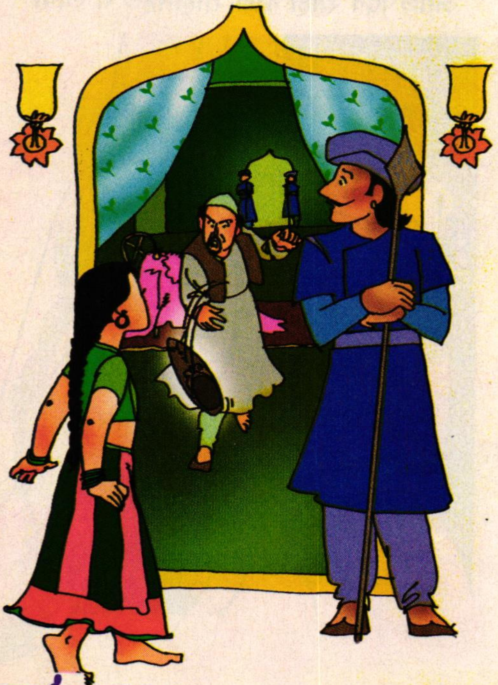

वह उस कमरे की चौखट तक आई जहाँ उसके अब्बाजान लिबास सी रहे थे। लड़की अपने अब्बा को देखकर खुश हो गई और उसकी तरफ दौड़ पडी। लेकिन संतरियों ने उसे रोक दिया।

किसी को अंदर जाने की इजाज़त नहीं है ! उन्होंने झिड़का।

लेकिन मुझे अपनी अम्मी की ज़रूरी बात बतानी है। लड़की ने कहा।

जो भी हो तुम जहाँ खडी.हो वहीं से कह दो! संतरियों में से एक ने कहा

अब्बा, हम सब को आपकी याद आ रही है। जल्दी घर आओ। अभी आओ ! लड़की ने कहा।

नहीं मैं तुम्हारे साथ नहीं आ सकता। उसने कहा और कारण बताया। लेकिन लड़की उसे घर लौटने के लिए जिद्द्द करती रही।

दर्ज़ी को दिन ब दिन एक ही कमरे में बैठना पड़ता और वह बहुत ही चिड़चिड़ा हो गया था। उसकी आँखें लाल और भारी हो गई थीं तथा वह बहुत ही खफ़ा दिखता था।

चली जाओ। अपनी अम्मी से कह दो मैं तभी आऊँगा जब काम खत्म हो जाएगा, दर्ज़ी ने रूखेपन से कहा।

अब्बा, मेरे साथ आओ, उसने दोबारा इल्तिजा की।

दर्ज़ी बेहद खफ़ा हो गया। तुम बेवकूफ़ लड़की एक ही बात मुझे बार-बार कितनी दफ़ा बतानी

Welcome स्वागत স্বাগতম Bengali स्वागातम

पड़ेगी, अपना मुँह गुस्से से लाल करके दर्ज़ी ज़ोर से चिल्लाया।

इस सब से दर्ज़ी की बेटी को काम करते अपने अब्बा को देखना बहुत ही अच्छा लगा। वह दाँत दिखाते हुए मुस्कुराई।

दर्ज़ी ने गुस्से से देखा। उसने अपना जूता लिया और इसे बाहर फेंका। लड़की दोबारा हँसी, जूता उठाया और दौड़ गई। दर्ज़ी ने गुस्से में अपना सर झटका। आजकल बच्चे हमारी कभी सुनते ही नहीं हैं, वह बुड़बुड़ाया और अपने काम में लग गया।

दो हतों की कडी.मेहनत के बाद बेगम का लिबास आखिरकार तैयार हो गया। हर पल की कडी.मेहनत इस पर झलक रही थी क्योंकि दर्ज़ी द्वारा अब तक सिली गयी यह सबसे खूबसूरत पोशाक थी। बेगम अपने बहुत ही अच्छी तरह सिले गए लिबास को देख कर बहुत खुश हुई और दर्ज़ी को ढेर सारा इनाम दिया। बेगम खुश थी कि अकेले उसके पास ही एक आलातरीन सिल्क के कपडे.से बनी एक बढ़िया पोशाक थी। उसने बीरबल पर एक फतह से भरी नज़र डाली।

एक दिन बेगम शहर घूमने निकलीं और उन्हें एक तगडा.झटका लगा ! एक दूसरी औरत ने उसी कपडे.की बनी कुर्ती पहनी है। बेगम अपनी आँखों पर यकीन न कर सकीं ! उन्होंने तुरंत ही अपने संतरियों को उस औरत को बुला लाने का हुक्म दिया और उससे पूछा कि उसे यह कपडा.कहाँ से मिला। डरी हुई औरत ने जवाब दिया कि उसके दर्ज़ी शौहर ने ही उसके लिए कुर्ती बनाई है।

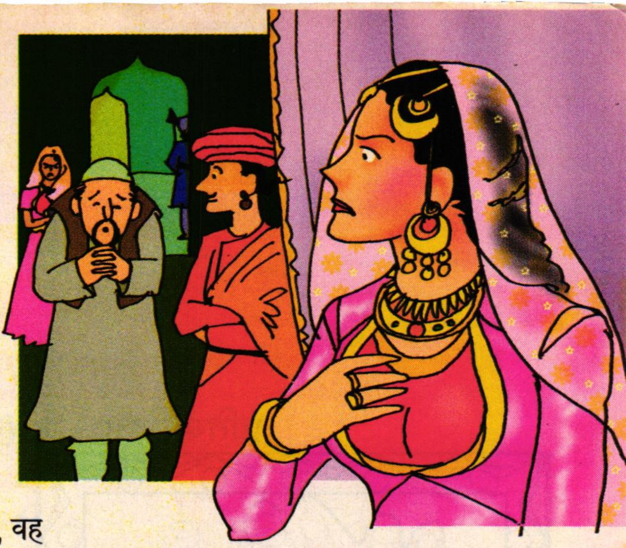

बेगम चकित रह गईं। दर्ज़ी कडे. पहरे के बावजूद कपडा.चुरा पाने में कैसे कामयाब हो सका। उसने यह बीरबल को बताया और दर्ज़ी को ले आने को कहा। दर्ज़ी पूरे रास्ते काँपता आया।

डरो मत। मैं तुम्हें मुआफ़ कर दूँगी अगर तुम मुझे यह बता देते हो कि संतरियों की मौजूदगी में भी तुमने कपड़ा कैसे चुराया? जानने को हैरान बेगम ने पूछा।

ओ बेगम ! जब मैंने जूता कमरे से बाहर फेंका, मैंने उसमें कपड़ा ठूँस दिया था मैंने अपनी बेटी को सब समझा दिया था और वह मेरे समझाने के अनुसार ही जूता ले कर घर चली गई, दर्ज़ी ने कहा। बेगम को यह बहुत ही मनोरंजक लगा और वह दिल खोल कर हँस पड़ी।

तुम हमेशा की तरह ही सही निकले, बीरबल! बेगम ने टिप्पणी की।

- रामा रमेश द्वारा पुनर्कथित

FABER-CASTELL

since 1761

छोटा कलाकार

FABRIC COLOUR & 3-DIMENSIONAL OUTLINERS

प्रतियोगिता - २ (ग्रीटिंग कार्ड)

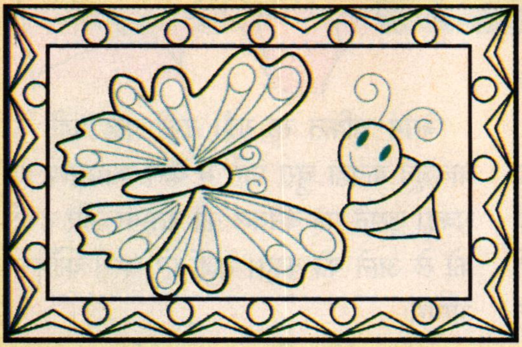

- डिज़ाइन को 15 x 11 (तकरीबन) बड़ा कीजिए।
- अपनी कल्पना से फैब्रिक रंगों द्वारा रंग भरिए। थ्री डाइमेंशनल आउटलाइनर्स द्वारा चित्र की रेखाएँ खींचिए तथा सजाइए।
- २ घंटे तक चित्र को सूखने दीजिए।
- फैबर कैसेल फैब्रिक रंगों तथा थ्री डाइमेंशनल आउटलाइनर्स के विभिन्न पैक प्रयोग में लाइए।

केवल फैबर कैसेल रंगों तथा थ्री डाइमेंशनल आउटलाइनर्स के डिब्बे को (सामने का पैनल) चित्र पर चिपकाइए।

फैबर कैसेल प्रमाण पत्र केवल 20 सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टियों को दिए जाएँगे।

विजेताओं के फोटोग्रॉफ्स पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे।

गिफ्ट हैम्पर्स जीतें
प्रथम पुरस्कार : 1500 रुपए
द्वितीय पुरस्कार : 500 रुपए
तृतीय पुरस्कार : 150 रुपए

10 सांत्वना पुरस्कार 100 रुपए

Stocks are available at an outlet near you

Participate in all 6 contests and win a MEGA PRIZE

Email : info@faber-castell.co.in
website : www.faber-castell.co.in

Fill in Your complete details. Only completely filled forms are entitled for participation

Name: ______________________ Std: ________ School Add.: ______________________

Add. (Res.) : ______________________________________ Telephone: ________________

Mention any Faber-Castell products you use: ______________________________________

Send your entries to **Chandamama India Pvt. Ltd.**, B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B', MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093, Phone +91 22 28312872 / 28311849. Last Date: 27th Feb 2009
Judging of winners is at the sole discretion of Faber-Castell. Structure of gift hampers will be decided by **Faber-Castell (I) Pvt. Ltd.** Entries received will be the sole property of Faber-Castell
Paste the cartons (Front Panel) of the Faber-Castell Fabric colours & 3-Dimensional Outliners only. Kindly send your photographs with your entries

Log onto www.chandamama.com

Your Chandamama is available in many avatars!

Regional Chandamama
(9+ age group):
Read your favourite stories in your own language! Chandamama takes you closer home even as your imagination soars!

Your Language, Your Chandamama.

* Ramayana
* Vikram-Vetal
* Panchatantra
* Arya

Available in 12 Languages:
Telugu, Hindi, Marathi, Oriya, Kannada, Bengali, Tamil, Malayalam, Gujarati, Assamese, Sanskrit, Santali

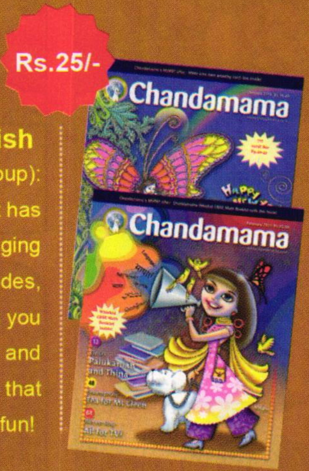

Chandamama English
(9+ age group):
A children's magazine that has adapted itself to the changing eeds of children across decades, Chandamama English offers you delectable mix of the classic and e contemporary in 72 pages that value fun!

Junior Chandamama
(4+ age group):
A magazine for the little ones peppered with activities, pictures, and stories that will grip their imagination.

Make friends with **Mintoo, Gooba,** and a host of other whacky characters!

* Picture story
* Puzzles & Crosswords
* Colouring
* Rebus

Sports * Technology * Contemporary stories * Classics
Revamped. Redesigned. Relevant. Read it!

You name it and it's got it!

CHANDAMAMA (Hindi) February 2010 Registrar of Newspapers of India No. 1087/57. Regd No. TN/CH(C)/217/09-11
Licensed to post WPP - Inland No.TN/CC(S)Dn/92/09-11, Foreign No. 93/09-11